सहजयोग में विवाह

परमपूज्य श्रीमाताजी निर्मलादेवी द्वारा दिया गया परामर्श

सहजयोग में विवाह

('मैरेज इन सहजयोगा' का हिंदी अनुवाद)

परमपूज्य श्रीमाताजी निर्मलादेवी
(सिलेक्टेड कोट्स)

अनुवाद

श्रीमती सुनीता दत्त

श्रीमती अंजली भोंडे

समर्पण

यह पुस्तक असीम प्रेम व सम्मान के साथ परम पूज्य श्रीमाताजी को समर्पित है, जो कि इस में दिये गए सभी जानकारियों व ज्ञान का स्रोत है।

प.पू.श्रीमाताजी ने अपने जीवन के द्वारा बहुत से युवक और युवतियों को प्रेरित किया है। उनका ये असाधारण जीवन हमारे एक सुंदर स्वप्न के वर्णन के समान है। वे अपने जीवन में एक आदर्श शिशु, एक आदर्श युवती, एक आदर्श बहन, एक आदर्श महिला, एक आदर्श पत्नी, एक आदर्श माँ, एक आदर्श दादी माँ और एक आदर्श आध्यात्मिक माँ रही हैं।

प.पू.श्रीमाताजी व उनके पति सर सी.पी.श्रीवास्तव जी अपने जीवन शैली द्वारा परिवार, समाज, समुदाय और आध्यात्मिक स्तर पर पुरुषों और महिलाओं के कर्तव्यों के अनगिनत उदाहरण दिए हैं।

प्रस्तावना

प.पु.श्रीमाताजी ने बहुत से अवसरों पर स्त्री और पुरुष के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर कई सुझाव और व्याख्यान दिए हैं। यह पुस्तक उनके द्वारा दिए गए इस ज्ञान को सहजयोगियों तक पहुँचाने का एक प्रयास है।

हालाकि यह संग्रह किसी भी प्रकार से प.पु.श्रीमाताजी के द्वारा दिए गए व्याख्यानों की परिपूर्णता की जगह नहीं ले सकता फिर भी, यह श्रीमाताजी द्वारा विवाह एवं स्त्री-पुरुष के संबंधों पर उनके उपदेशों को समझने का एक जरिया है।

यह 'मेन अँड वीमेन' संकलन का दूसरा भाग है। इस विषय की पूरी जानकारी के लिए दोनों भागों को पढ़ना जरुरी है। स्त्रियों और पुरुषों को एक दूसरे के बारे में लिखे गए अध्यायों को पढ़ना उपयुक्त होगा। इसका हेतु एक दूसरे में कमियाँ ढूंढ़ना नहीं बल्कि यह समझना है कि श्रीमाताजी के गुण हम में से कोई भी धारण कर सकता है, चाहे वो स्त्री हो या पुरुष।

हम ये आशा करते हैं कि इस कार्य के द्वारा श्रीमाताजी द्वारा दी गई सीखों को हम अपने अन्दर प्रतिध्वनित करने में सक्षम होंगे और एक ऐसा जीवन व्यतीत कर सकेंगे जो प्रेम, आदर, प्रतिष्ठा और शांति से परिपूर्ण होगा।

स्वीकृति

'रेझिंग चिल्ड्रन इन सहजयोगा' प्रकाशित करने के बाद, सहजयोग में स्त्रियों एवं पुरुषों के कर्तव्यों पर ऐसी ही एक किताब संकलित करने का खयाल सहज ही आया।

जैसे ही हमने श्रीमाताजी के व्याख्यान सुनना प्रारंभ किया, हमें इस विषय की व्याप्ति का एहसास हुआ। एक की जगह दो किताबें बन गई। पहली किताब स्त्रियों और पुरुषों के कर्तव्य, गुण तथा भाई-बहन के नाते पर आधारित है। दुसरी किताब वैवाहिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्ध रखती है।

वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन कितना सुंदर हो सकता है यह श्रीमाताजी ने हमें उनकी निजी जिन्दगी द्वारा दिखाया है। श्रीमाताजी ने अपना चित्त इस विषय पर दिया है और यह बात उजागर कर दी है कि विवाह सहजयोग का एक महत्वपूर्ण अंग है और इस बारे में उचित मार्गदर्शन किया है।

श्रीमाताजी ने हम से सहजयोग में विवाह के महत्व के बारे में बात की है। उन्होंने पति और पत्नी की भूमिकाओं के बारे में विस्तारित रूप से बताया है और विवाह कैसे सफल होता है इस बारे में विस्तृत सलाह दी है।

यह पुस्तक एक सामूहिक प्रयास है। हम उन सभी लोगों का आभार मानते हैं जिन्होंने यह किताब संभव बनाने में अपना योगदान दिया है।

आशा करते हैं कि आप इस किताब का आनंद ले पाएंगे।

टिप्पणी

इस संग्रह में कई ऐसे विषय हैं जो श्रीमाताजी के व्याख्यानों में कई बार दोहराए गए हैं। इन विषयों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

विभिन्न भागों के शुरुआत में विषय की भूमिका को दर्शाने के लिए कुछ टिप्पणियों को अलग तरह की लिखावट में लिखा गया है। ये संकेत शोधकों के द्वारा दिए गए हैं, श्रीमाताजी के द्वारा नहीं।

जो भी विषय '........' के बीच में दिए गए हैं वे श्रीमाताजी के भाषणों से लिए गए उद्धृत अंश हैं। विषय का उद्देश्य समझाने के लिए सभी शीर्षकों को मोटे अक्षरों में लिखा गया है। इस पुस्तक के अंत में एक शेष संग्रह है, जिसमें श्रीमाताजी के द्वारा दिए गए भाषणों की सूची है जिसका उपयोग इस संग्रह में किया गया है।

विषय-सूची

I	**विवाह से पूर्व हमारे ढंग**	**9**
	अबोधिता और पवित्रता	11
	सहज समूह में जीवन-साथी न ढूंढे	21
	सहज विवाह सूची	28
II	**सहज विवाह का अर्थ**	**35**
	हमें विवाह क्यों करना चाहिये	37
	सहज विवाह का अर्थ	42
III	**विवाह संकल्प**	**51**
IV	**एक रथ के दो पहिये**	**56**
	एक रथ के दो पहिये	58
V	**पत्नी की भूमिका**	**63**
	एक महत्वपूर्ण भूमिका	65
	दान और उदारता	70
	परामर्श	93
	मोह, पैसा और समाज	106
	भारतीय और पाश्चात्य महिलायें	113
VI	**पति की भूमिका**	**117**
	सम्मान	119
	परामर्श	127
	सज्जनता	139
V	**पति और पत्नियाँ**	**143**
	विवाह की शुरुआत	145
	प्रेम की सराहना	149
	आपसी सम्मान	157
	विवाह में संतुलन	174
	बच्चे	188
	नकारात्मक बन्धन	194
	श्रीमाताजी द्वारा विवाह पर दिये गये प्रवचन की सूची	**202**
	श्रेय (क्रेडिट)	**205**

विवाह से पूर्व हमारा ढंग

'मेन अँड वीमेन' नामक पुस्तक में हमने पढ़ा है कि किस प्रकार श्रीमाताजी ने अबोधिता और सतित्व पर महत्व दिया है। उन्होंने यह भी बताया है कि यदि हम आपस में भाई-बहन के सिद्धांतों को पुर्नस्थापित कर सके तो हमारा जीवन अति आनन्दित हो जाएगा। हम दूसरों के साथ एक पवित्र और निर्मल संबंध का आनंद तभी ले सकते हैं जब हम स्वयं पवित्र हों।

और भी, सामूहिकता की अबोधिता, सुरक्षा एवं पवित्रता को कायम रखने के लिए श्रीमाताजी ने यह स्पष्ट किया है कि सहजयोग में अपना जोड़ीदार (पती या पत्नी) ढूंढ़ना योग्य नहीं है। यदि किसी की सहजयोग में विवाह करने की इच्छा है तो यह संभव है कि वह व्यक्ति श्रीमाताजी से अपने लिए जीवन-साथी ढूंढ़ने की विनती करे। अपना नाम सहज विवाह सूची में देकर यह कार्य किया जा सकता है।

✻ फिर भी, ऐसा करने के लिए किसी पर कोई दबाव नहीं है। हर एक सहजी को सहज सामूहिकता के बाहर अपना जीवन साथी ढूंढ़ने की पूरी स्वतंत्रता है।

अबोधिता और पवित्रता

अबोधिता, जो हमारे अंदर की गहराइयों में हैं, यह हमारा स्वभाव है, यही इस निर्मिती का सार है :

''... यदि श्रीगणेश की आराधना करनी है तो हमें अपनी प्रधानतायें बदलनी होगी। आज हम हमारे अंदर की अबोधिता की पूजा कर रहे हैं। हम उसकी पूजा कर रहे हैं, जो शुभ है, जो अबोध है। अबोधिता, जो हमारे अंदर की गहराईयों में है, यही हमारा चरित्र है, यही हमारा स्वभाव है, हमने इसी के साथ, जनम लिया है, यह पूरे विश्वनिर्माण का आधार है, यही विश्वनिर्माण का सार है ...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, इंग्लैंड)

अबोधिता प्रत्यक्ष होनी चाहिये :

''...अबोधिता ही सार है और यह सार प्रेम है। इसलिये हमें ये समझना है कि हमें अपने अंदर श्रीगणेश के गुण धारण करने हैं। उनकी अबोधिता का गुण जो पहले से ही हमारे अंदर मौजूद है वह प्रकट होना चाहिए...''

(१९९४, श्रीगणेश पूजा, मॉस्को)

जीवन अबोधित है :

''...अभी आपको महाराष्ट्र की सड़कों पर ध्यान देना चाहिए-अभी मैं ट्रेन से आ रही थी, मैंने देखा कोई भी पुरुष औरतों में रुचि नहीं दिखा रहा था। स्त्रियों को पुरुषों में रुचि नहीं थी। कुछ पुरुष एक दूसरे से गले मिल रहे थे, निष्कपट भाव से दूसरे को थामे चल रहे थे। मेरा मतलब ये पूरा विषय यह है कि जीवन अबोधिता है...''

(१९८५, पूजा, नासिक, भारत)

''...जैसा कि आप जानते हैं कि सहजयोग में नैतिकता सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है...''

(१९९३, दिवाली, विवाह की घोषणा, रशिया)

आपको यह सिद्ध करना है कि अबोधिता का सम्मान होना चाहिए :

''...सबसे पहले हमें यह समझना होगा, कि हमारा जन्म सन्दिग्ध, संकटपूर्ण समय में हुआ है। ईसामसीह के समय में बहुत कम लोग थे जिन्होंने उनका अनुकरण किया और उन्हें कुण्डलिनी के विषय में अधिक जानकारी भी नहीं थी। उन्हें कोई ज्ञान नहीं था। उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं था कि ईसामसीह श्रीगणेश जी के ही अवतरण थे। किंतु आप यह पाएंगे कि ईसाई धर्म को मानने वालों में ही ईसामसीह का अपमान होता है, अबोधिता का अपमान होता है और वह कानूनी तौर पर जायज़ माना जाता है। तो उसी भायनक परिस्थितियों में जनम लेने के बाद हमें खुद ही एक महान शक्तिशाली सामर्थ्य खड़ा करना होगा, अपनी आध्यात्मिकता का। आज जब मैं आई, कोई हवा नहीं चल रही थी, कोई पत्ता नहीं हिल रहा था, मगर आपके गाना शुरू करने पर आपसे भारी मात्रा में हवा बहने लगी और उससे मैं समझ गयी कि यह दैवी शक्ति प्रकट हो चुकी हैं। वह है और वह काम कर रहा है। सिर्फ ये ही नहीं, वह बड़ा शक्तिशाली है। साधारणत: ये ठण्डी हवा मेरी ओर नहीं आती। वो दूसरी ओर जाती है। मगर ये ठण्डी हवा इतनी जबरदस्त थी कि मुझे किसी का हाथ थामना पड़ा, और एक भी पत्ता नहीं हिल रहा था। तो ये जो सामूहिक शक्ति आपके पास है, याद रखिये आपको उससे झूँझना है और आपको ये सिद्ध करना है कि अबोधिता का सम्मान करना चाहिए।

आदिशक्ति ने सबसे पहले श्रीगणेश को बनाया। वो पहले देवता थे जिन्हें बनाया गया। क्यों? क्योंकि उसे सारा वातावरण चैतन्य, धार्मिकता और मंगलता से भरना था। वो अब भी है। वो सब जगह है और आप महसूस कर सकते हैं कि वो काम कर रहा है। लेकिन आधुनिक मानसिकता के अन्दर वो नहीं उतरता क्योंकि आधुनिक मानसिकता जानती नहीं कि अबोधिता क्या है। उन्हें अबोधिता के बारे में कोई जानकारी नहीं है। वो लोग जिस प्रकार सब जगह जा रहे हैं, मानो इस धरा पर कभी कुछ हुआ ही नहीं।

तो अबोधिता से जीवन में नैतिकता आती है। नैतिकता अबोधिता का प्रकटीकरण है...''

(१९९६, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

अगर आपको आत्मसाक्षात्कार मिल सकता है तो ये भी क्यों नहीं? :

''...मुझे इस बात की फिक्र है कि लोग गुप्त तरीके से इन चीज़ों में उलझ रहे हैं। और वे कभी-कभी पाखण्डी हो जाते हैं, उन्हें पाखण्डी होने में कोई परेशानी नहीं होती। ठीक है, वे सहजयोगी है, मगर इस विषय में उन्हें लगता है कि वे जो चाहें कर सकते हैं और कभी-कभी उनमें से कुछ लोग कहते हैं, 'माँ ने कहा है, सब ठीक है।' मैंने ऐसा कभी भी नहीं कहा है। यह एक विषय है जिसमें मैं कोई समझौता नहीं कर सकती।

आपका आपके प्रति, आपके जीवन के प्रति, आपके अस्तित्व के प्रति और आपके व्यक्तित्व के प्रति एक पवित्र दृष्टिकोण होना चाहिए। आप लोग संत हैं। यदि एक संत का चरित्र अच्छा नहीं है, मैं उसे चरित्र कहती हूँ, चरित्र का सार- तो वह व्यक्ति संत नहीं है।

तो यह शुद्धता बरकरार रखनी चाहिए। उस पर कोई समझौता नहीं हो सकता। आप हर एक चीज़ की जड़ों पर घाव नहीं कर सकते। अगर सामूहिक तरीके से काम हो जाता है, कोई भी अपने आप को ठगता नहीं, अपने आपको फँसाता नहीं और मन को उत्थान की सही राह पर ले जाता है। अपने मन को उत्थान के बारे में सोचने से, हम ऊपर कैसे उठेंगे ये सोचने से, हमें आनन्द देने वाले पलों के बारे में सोचने से, आप मुझसे पहली बार मिले उस दिन के बारे में सोचने से साफ किया जा सकता है। और जब कभी ऐसा विचार आता है, तो आपको कहना है, 'यह नहीं, यह नहीं, यह नहीं।' मैं आपको बताऊं यह ज़्यादा मानसिक है न कि शारीरिक। मुझे पता है ये मुश्किल है, लेकिन आपको आत्मसाक्षात्कार मिल सकता है तो ये भी क्यों नहीं।

आप सबको यह समझना होगा कि इस पर कोई भी समझौता नहीं किया जा सकता। अगर आप यह जारी रखते हो तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है

जब किसी राक्षस की तरह आप बाहर फेंक दिए जाओगे। इसलिये इसमें कोई समझौता नहीं है। अपने आप से कहिए, 'खुद को मत फँसाईये, खुद को धोखा मत दीजिए। यदि आपमें कुछ छुपा है तो आपका उत्थान नहीं हो सकता। आप नीचे खिंचे चले जाओगे क्योंकि यह आपकी कमजोरी है और आप कमजोर, अधिक कमजोर होते चले जाओगे...''

(१९८५, मूलाधार, बर्मिंगहैम, यु.के)

तो अपनी पवित्रता का सम्मान करना वास्तव में मेरा सम्मान करना है :

''...क्योंकि मैं पवित्रता के रूप में आप में निवास करती हूँ। अगर श्री गणेश मंगलता हैं, मैं पवित्रता के रूप में आपके अन्दर निवास करती हूँ...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन, इग्लैंड)

मेरे बच्चे होने की वजह से आप भी पवित्रता के परम सुख का आनंद ले सकते हैं, जैसे मैंने अपने सम्पूर्ण मनुष्य जीवन में लिया है :

''...तो आज आप अपने अन्दर स्थित श्रीगणेश की पूजा करने आए हैं। मैं क्या हूँ, श्रीगणेश के रूप में पूजने के लिए, मेरी समझ में नहीं आता। क्योंकि मैं ही वो हूँ। जब आप मेरी पूजा करते हैं, तब आप अपने अन्दर के श्रीगणेश को जागृत करना चाहते हैं। वह आपमें जागृत हों। मैं जो भी कहूँ वो मंत्र बन जाए आपमें वह जागृत करने के लिए, ताकि मेरे बच्चे होने की वजह से आप भी पवित्रता के परम सुख का आनन्द ले सकें जैसे मैंने अपने मनुष्य जीवन और दैवीय जीवनों में लिया है। आप उसी प्रमाण में आनन्द लें यही मैं चाहती हूँ। कम से कम आपको उसका स्वाद लेना चाहिए...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन, इंग्लैंड)

यह कठोरता नहीं है, बल्कि अपने अस्तित्व का सम्मान है :

''...तो इस समय आप सब भारत आ रहे हैं। मुझे आपसे अनुरोध करना है कि आप मेरा सम्मान दुराचार न करके करें। बचकानी हरकत न करें जैसा आप तस्वीरों और फिल्मों में देखते हैं और वो सब अनर्थक है। आप इन

सबसे उपर हैं। सावधान, उच्च कार्यों को आपके पवित्रता के स्थान से देखा जाता है। हम अपना स्थान नहीं छोड़ सकते, चाहे हमारी जयजयकार हो या न हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हम अपना स्थान नहीं छोड़ सकते। जैसे ये सभी अवधूत, ये कहेंगे, 'तकिया सोडा सना' -मतलब 'हम सब अपना स्थान नहीं छोड़ेंगे।' हम सब अपने स्थान पर हैं। ये हमारा स्थान है, कमल के अन्दर। हम कमल को नहीं छोड़ सकते। हम कमल के अन्दर बैठे हैं। ये हमारा स्थान है। तब यह सभी अनर्थक चीज़ें जो आपने प्राप्त की हैं, निकल जाएगी। आप देखेंगे, आप सुंदर इन्सान बन जाएंगे। सभी भूत भाग जाएंगे, सभी पकड़ भाग जाएंगी। पर यह कठोरता नहीं है, बार-बार मैं आपको बता रही हूँ। यह आपके अस्तित्व को सम्मान देना है। जैसे आप मुझे बाहर सम्मान देते हैं, आप मुझे अन्दर सम्मान देते हैं। यह उतना ही आसान है...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन, इंग्लैंड)

हमारे अन्दर सबसे बड़ी चीज़ लैंगिकता नहीं, बल्कि हमारी पवित्रता है :

''...आपके अन्दर जो चुंबक है, वह श्रीगणेश हैं। कई लोग जानते हैं कि मुझे दिशा का बड़ा इन्द्रिय ज्ञान है। यह इस चुम्बक के द्वारा आता है जो निपुण है। यह एक चुम्बक ही है जो आपको जोड़े रखता है या ठीक करता है या हर आत्मा की ओर केन्द्रित रखता है। यदि आपमें पवित्रता का इन्द्रिय-ज्ञान नहीं है तो आप कभी इस तरफ तो कभी उस तरफ लटकते रहेंगे। अचानक आप बहुत अच्छे सहजयोगी बन जाते हैं, कल आप एक राक्षस बन जाते हैं, क्योंकि ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो आपको आत्मा के बड़े विचार से जोड़े रखती है। हम इसका सामना करें। अब हम सबके लिए यह समय आ गया है, सभी सहजयोगी, कि हमारे अन्दर सबसे बड़ी चीज़ यौन नहीं है, बल्कि पवित्रता है। और वही आपको परिपक्व बनाएगी...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा ब्राईटन, इंग्लैंड)

संबंधों में आदर्शवाद के पूर्ण ज्ञान और प्रतिष्ठा के साथ रहें :

''...ये सभी आदर्श आज भ्रमपूर्वक हैं। हमारे दूसरों के साथ संबंध। हर औरत को आकर्षक होना चाहिए, क्यों? हर पुरुष को आकर्षक होना

चाहिये, क्यों? किसलिये? आप इससे क्या हासिल करने वाले हैं? इसका क्या उपयोग है? आकर्षण ठीक है, जब तक आप निषेधक नहीं है, जब तक आप दूसरों के साथ आदर्श संबंध रखते हैं। यदि संबंध कुछ नहीं, बल्कि एक कुत्ता और कुत्ती की तरह बन जाए, तो यह बेहतर होगा कि आप इस प्रकार की कल्पना न रखें। किसी ऐसी चीज़ के पीछे भागना बिल्कुल गलत है जो हमारे राह में नहीं है। जहाँ तक एक दूसरे से संबंध का सवाल है मनुष्य को पूरी प्रतिष्ठा और आदर्शवाद के पूर्ण ज्ञान के साथ रहना होगा। अगर आप कहते हैं, 'क्या गलत है?' तो यह विवाद है, सबकुछ गलत है, और सबकुछ गलत है, ये एक गलत नहीं है, बल्कि सब, सब कुछ। लेकिन यदि आपको एक परिपूर्ण समाज चाहिए, तो आपको अपने पारिवारिक जीवन के आदर्शों को कायम रखना होगा। यह बहुत जरूरी चीज़ है। परंतु आप जैसे ही आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं वैसे ही यह आपके साथ घटित होने लगता है। मुझे आपको इस पर भाषण देना नहीं पड़ता, बस, आप ऐसा करते हैं, आप एक बहुत ही अच्छे पति या पत्नी बन जाते हैं। सहजयोग से बहुत ही सुंदर परिवार निकल कर बाहर आते हैं, बहुत से हैं भी, आपने देखे हैं। सहजयोग में अब इतने सुंदर परिवार हैं और अब महान बच्चे, महान संत जो जन्म लेना चाहते थे वे आज उनके यहाँ जन्म ले रहे हैं...''

(१९८२, हृदय, विशुद्धि, आज्ञा, सहस्रार, यू.के.)

आप जानते हैं आप इतने शक्तिशाली बन जाते हैं जब आपके अन्दर अबोधिता जागृत हो जाती है :

''...तो उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा का सम्मान कैसे किया! यह आसान है, आप देखें किसी भी प्रकार के अलग लालच में फँस जाना, परंतु यदि यह आपकी शक्ति है, आपको खुद को किसी ऐसी चीज़ को समर्पित क्यों करना चाहेंगे जो इतनी बेकार है।

सहजयोग में हमें महसूस करना होगा, पुरुषों को भी जरूर पता होना चाहिए कि यदि उनकी पत्नियाँ इतनी अच्छी है और इतनी पवित्र हैं, तो उन्हें उनका सम्मान जरूर करना चाहिए। उन्हें यह भी एहसास होना चाहिए कि उन्हें राखी बहनें भी हैं, इसलिये हम बहुत पवित्र हैं। हम एक राखी बहन की पवित्रता का सम्मान करते हैं और हम उसे किसी भी प्रकार से नहीं मानना

चाहते जो पवित्रता का सम्मान नहीं करता। फिर पुरुष भी पवित्र बन जाते हैं। जब स्त्रियाँ पवित्र हों तो पुरुष भी पवित्र बन जाते हैं। और ये पवित्रता आपकी मुख्य शक्ति है, यही पवित्रता एक है जो श्रीगणेश की शक्ति है। और जब आप श्रीगणेश की इस शक्ति को पा लेते हैं तो आप जान जाते हैं कि आपके अन्दर अबोधिता जागृत होने के साथ आप कितने शक्तिशाली हो गए हैं। पवित्रता के बगैर महिलायें सहजयोग में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकती...''

(१९९३, श्रीफातिमा पूजा, इस्तंबुल)

हमारा श्रीगणेश तत्व ठीक होना ही चाहिए :

''...ऐसी कुछ चीज़े हैं जो आपको अलग लगे पर आपको अचम्भित नहीं होना चाहिए। जैसे कि सहजयोग में आपको पवित्रता को सम्मान देना ही चाहिए। महिलाओं को भी और पुरुषों को भी सम्मान देना ही चाहिए, क्योंकि हमारे श्रीगणेश को ठीक होना ही चाहिए..... इसलिये हमारे अन्दर इस गणेश को शक्तिशाली होना चाहिए। और ये रुकावट नहीं है जैसा कैथोलिक चर्च में होता है। सहजयोग में यौन और कुछ भी नहीं है, बल्कि एक विश्वसनीय नाते के साथ अपनी पत्नी से स्वस्थ यौन संबंध है। हालांकि न तो ये फ्रेऊड है और न ही कैथोलिक चर्च...''

(१९८७, समालोचना, अहंकार, दायीं ओर के खतरे, फ्रान्स)

इन सभी अनर्थक विचारों से ऊपर उठने के लिए शक्ति माँगिये :

''...आज के इस दिन पर मैं आपसे कहूँगी कि आपको इन सभी अनर्थक विचारों से ऊपर उठने की शक्ति माँगनी चाहिए, जो आपके अन्दर जम गई है और खूबसूरत इन्सान बनना चाहिए-विशेष लोग, जो लोग विशेष होते हैं वो अपनी और अपनी बहनों के पवित्रता का सम्मान करते हैं। इस भावना को बढ़ने दीजिए, इस देश में स्वास्थ्य और संपत्ति का निर्माण कीजिये...''

(१९८०, रक्षाबंधन, लन्दन)

आपको स्वयं को सुधारना होगा और श्रीगणेश जी से क्षमा माँगनी होगी:

''...दूसरी चीज़ उनके साथ ये है कि वो उन लोगों का सम्मान करते हैं

जो पवित्र हैं, जिनके लिए पवित्रता ही उनके जीवन का अहम तत्व है। वे पवित्रता को सबसे अधिक पूजते हैं। सिर्फ औरतों में ही नहीं, बल्कि पुरुषों में भी पवित्रता के होने की वह अपेक्षा रखते हैं। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद आपको पूरी तरह से पवित्र इन्सान बन जाना चाहिए। आपको आपकी आँखें चारों तरफ इधर-उधर घूमानी नहीं चाहिए। आप इसे युवक और युवतियों के बीच में संचार का एक बहुत ही बुरा माध्यम कह सकते हैं जो आपकी पवित्रता को खराब कर देता है। आपकी आँखे भी पवित्र होनी चाहिए इसके लिए आपको खुद का आत्मपरिक्षण करना चाहिए और देखना चाहिए कि आप क्या गलतियाँ कर रहे हैं और आपमें किस प्रकार का अपवित्र आचरण है। आपको स्वयं को सुधारना चाहिए और श्रीगणेश जी से क्षमा माँगनी चाहिए। अगर आप क्षमा माँगेंगे, तो वह कुछ भी क्षमा कर सकते हैं। वे इतने अबोध और सुंदर हैं कि वे क्षमा कर देते हैं। पर ये बहुत ही महत्वपूर्ण चीज़ है, हमारी पूरी नैतिकता हमारे पवित्रता के सोच पर निर्भर करती है। हमें बहुत पवित्र होना चाहिए। कई धर्म आए हैं और सबने पवित्रता के बारे में बात की है, पर सभी धर्म अब इतना व्यर्थ हो गए हैं, आधारहीन हो गए हैं, बिना किसी उचित संपादन के, जो उनके बारे में लिखा गया है। वे सब प्रकार के गलत काम करते हैं और खुद को हिंदू, मुस्लिम, ईसाई कहते हैं। सभी प्रकार के धर्म। वास्तव में सभी धर्म पूरी तरह से असफल हो गए हैं और इसलिये श्रीगणेश उनके पीछे पड़ते हैं...''

(१९९९, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

यह पुरुषों और महिलाओं के लिए है :

''...कुछ देशों में, अवश्य ऐसा सोचते हैं कि पवित्रता सिर्फ औरतों के लिए है और पुरुषों के लिए नहीं। परंतु यह सत्य नहीं है। इस्लाम धर्म के लोग ऐसा ही मानते हैं। ये बहुत गलत है। यह दोनो के लिए है। जैसे कि कोई आदमी दूसरी तरफ जोर लगाने की कोशिश कर रहा है, जैसे कि पुरुष महिलाओं पर दबाव डाल रहे हैं कि वे पवित्र रहें और वो खुद पवित्र नहीं है, तो महिलायें पवित्र नहीं रहेंगी। वे ऐसा दिख सकती है, प्रतित हो सकती है, डर की वजह से शायद कोशिश कर भी सकती है पर यदि उन्हें कोई मौका

मिल गया तो वे एक ऐसे जीवन शैली को अपना लेंगी जो गलत होगा। क्योंकि वे दूसरे पक्ष को देखती है, पुरुष उन पर शासन करने की कोशिश करते हैं।

तब वे ऐसा सोचती है, 'क्या गलत है? अगर वो ऐसा कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं?' इसलिये पूरे समाज को एक सभ्य जीवन आपनना चाहिए और एक बहुत ही सुसज्जित प्रतिष्ठित जीवन शैली होनी चाहिए।

यह सिर्फ पहनावे में नहीं बल्कि प्रतिदिन के जीवन में भी जरूरी है। नहीं तो पुरुषों और महिलाओं के बीच में एक प्रकार का असुरक्षित भाव निर्माण होने लगता है और बहुत सारी उलझने पैदा हो जाती है, बहुत ही उलझे हुए जीवन की शुरुआत होती है...''

(१९९३, श्रीगणेश पूजा बर्लिन, जर्मनी)

पश्चिम में, बहन क्या है और भाई क्या है? इसे समझने की रीति को वे खो चुके हैं :

''...जब भी हम खुद को दोषी समझते हैं, तो सबसे पहले हम खुद को दोषी इसलिए मानते हैं क्योंकि संबंधों के बारे में हमारी समझ ठीक नहीं है। उदाहरण के लिए, हम एक भाई और एक बहन को नहीं समझते, यह रिश्ता जो कि इतना पवित्र है, और हर प्रकार के अपवित्रता से ऊपर है। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं कि आज पश्चिम में, शायद ज़्यादा शराब पीने की वजह से और सब तरह की गलत चीज़ें करने की वज़ह से, जो अबोधिता के विपरीत है, लोगों ने इसका महात्म्य खो दिया है और इसमें उन्होंने बहन क्या है? और भाई क्या है? इसे समझने की रीत को भी खो चुके हैं...''

(१९८८, श्रीविष्णुमाया पूजा, शूडी कैम्प, यू.के.)

अगर ये इधर भी संभाला जा सके, तो मेरे लिए ये महान दिन वास्तव में अति आनंद का होगा :

''...परंतु मैंने ये पाया है कि भाई-बहन के इस संबंध को भारत में बहुत ही सुंदर तरीके से संभाला जाता है, अगर ये इधर भी संभाला जा सके तो मेरे

लिए ये महान दिन वास्तव में अति आनंद का होगा, क्योंकि इसका मतलब है कि आपने इस अनैतिका के राक्षस को हरा दिया है। वो पवित्रता, जो आपके दिमाग से स्त्री संभोग की लालसा और लालच को पूरी तरह से निकाल देती है और उसे वह स्नेह देती है, जो आपकी बहन है। यह भारत में बहुत ही आम है, वहाँ हर एक की बहन होती है, हर सहजयोगियों की एक बहन है और वो अपनी बहन का उस तरह ख्याल रखते हैं...''

(१९८३, दिवाली पूजा, हेम्पस्टेड, यू.के.)

सहज समूह में जीवन-साथी न ढूंढे

''...लेकिन यदि आप सहजयोग में विवाह करना चाहते हैं तो आपको सहजयोग में लोग नहीं ढूंढने चाहिए। अब आज का दिन रक्षाबंधन का महान दिन है। इसलिये मुझे आपको रक्षाबंधन के बारे में कुछ बताना है। इससे पहले हमें मर्यादाओं के बारे में बात करनी होगी जिसका पालन सभी सहजयोगियों को करना चाहिए।

एक चीज़ जो मैंने यहाँ, पश्चिम में पाई है, कि हालांकि हम मूलाधार के महत्व को समझते हैं, जो कि बहुत ही जरूरी है और जब तक हम अपने मूलाधार को पूरी तरह से पुनर्स्थापित ना कर ले हमें अतिगतिमय उत्थान नहीं प्राप्त होगा।

इन सब के बावजूद, अभी भी ऐसी विलंबकारी चीज़ें हैं, जो आप अपने आस-पास देखते हैं। जैसे लोग सहजयोग में अपना जीवन साथी चुनना शुरू कर देते हैं। इसकी अनुमति नहीं है, इसकी अनुमति नहीं है। आप अपने आश्रम को गंदा करने के लिये नहीं हैं, आप को अपने ध्यान केन्द्र विवाह-शोधक समाज के रूप में इस्तेमाल करना गलत है। आपको सहजयोग का सम्मान करना चाहिये। आपको इस मुद्दे को सम्मान देना चाहिये।

यदि आपको विवाह करना है, तो आप अपना जीवन साथी सहजयोग के बाहर ढूंढ सकते हैं, शुरुआत के लिये। पर यदि आपको सहजयोग में विवाह करना है, तो आपको सहजयोग में लोग नहीं ढूंढने चाहिये। ये खुद सहजयोग के लिये बहुत हानिकारक है और आप लोगों के लिये भी।

यह एक ऐसी चीज़ है जो किसी को भी सहजयोगियों के साथ कभी नहीं करनी चाहिए। हर हाल में आप सभी भाई-बहन हैं। और इसलिये मैं हमेशा ऐसे लोगों के विवाह को प्रोत्साहन देती हूँ जो अलग-अलग देशों और ध्यानकेन्द्रों से हैं...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

परंतु यदि आपको सहजयोगियों से शादी करनी ही है, तो आपको उनसे शादी उनकी पवित्रता और इसके आदर्शवाद को नष्ट करने की कीमत पर नहीं करनी चाहिए :

''... ऐसा करना बहुत ही गलत होगा, जैसे किसी सहजयोगी से अपनी शादी खुद ही तय कर लेना। ये खतरनाक होगा। मैं कुछ कहना नहीं चाहती पर इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा, क्योंकि यह देव-कार्य के विरुद्ध है, बिल्कुल देव-कार्य के विरुद्ध।

आपको अपना ब्रह्मचर्य विकसित करना होगा, आपको अपना मूलाधार विकसित करना होगा। इसकी जगह, यदि आपने किसी सहजयोगी या सहजयोगिनी का इस्तेमाल अपने लिये जीवन साथी का चुनाव करने के लिये किया तो ये बहुत-बहुत दु:खदायी होगा। आपका मूलाधार स्थिर नहीं होगा। मेरा मतलब है, कि ये एक बहुत बुरा आघात है, आपके विकास के लिये। पिछले जीवन शैली की वजह से और जिस प्रकार की आप लोगों की शर्तें रही हैं, आप लोग नहीं समझते कि ध्यान केन्द्र और हर जगह की पवित्रता बनाये रखना जरूरी है।

इसलिये एक शहर में इस तरह के संबंध होना बहुत गलत चीज़ है। यह सबको खराब कर देता है। इस परेशानी को बढ़ाने के लिये, ये कुछ लोगों की आदत है, मैंने सुना है, कि वो चिढ़ाने की कोशिश करते हैं, 'आप एक साथ बेहतर दिखते हैं, आप साथ में अच्छे लगते हैं।' वो चिढ़ाते हैं और इसका मज़ा लेते हैं। ये एक प्रकार का मूलाधार का विकृत आनन्द लेना है, दूसरों को चिढ़ाना, 'आप उसके साथ बहुत अच्छे दिखते हो, बेहतर होगा आप दोनो शादी कर लो।'' यह एक प्रकार की अनर्थक कल्पना है। निश्चय ही, इन सब के लिये योगियों को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। पर फिर भी यदि आप ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकते, आपको मर्यादाओं का पालन करना ही चाहिये। जब शादी तय नहीं हुई है, तो एक दूसरे को चिढ़ाना और ऐसी अनर्थक चीज़ों का आनन्द नहीं लेना चाहिये। अगर शादी तय हो गयी है, तो ठीक है।

और ये विवाह के आनन्द को पूरी तरह से खत्म कर देता है, क्योंकि कोई उत्सुकता बची ही नहीं रहती और बहुत बार मैंने देखा है कि निरर्थक

सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं। उनमें से कुछ तो वाकई अच्छे नहीं होते। और वे वास्तव में हानिकारक होंगे और उनमें से कुछ कभी स्थापित नहीं होते। इसलिये अगर ऐसे सम्बन्ध स्थापित होते हैं, तो वे गलत हैं। और अगर वो स्थापित नहीं होते, वे दिल को दु:ख पहुँचाते हैं।

इसलिये आपको ऐसी चीज़े नहीं करनी चाहिये। आपके पास ऐसे लोगों के अनुभव हैं जिन्होंने बाहर शादी की है और अद्‌भुत लोगों को सहजयोग में लेकर आयें हैं। अगर आप ऐसा कर सकते हैं, तो आपको ये करना चाहिये। पर अगर आपको सहजयोगियों से शादी करनी है तो आपको उनसे शादी उनकी पवित्रता इसके आदर्शवाद को नष्ट करने के कीमत पर नहीं करनी चाहिये। अपने स्वार्थ के लिये, अपने आनन्द के लिये, आपको सहजयोग का नाम खराब नहीं करना चाहिये। ये एक चीज़ है, जो मैंने देखी है, इसलिये मैं कहूँगी कि आज का ये दिन जो कि सम्बन्धों में पवित्रता का है, हमें जानना चाहिये कि हमें एक दूसरे के साथ भाई-बहन के जैसा व्यवहार करना चाहिये। अपने मन को इसमें बहने न दें। क्योंकि यदि आपने अनुमति दी, तो इसका कोई अन्त नहीं है। जैसा कि आप जानते हैं कि खुद को संतुलन में लाना कितना मुश्किल है...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

पर मेरे लिये ये एक समस्या पैदा कर देता है कि आप अपना विवाह खुद ही तय कर लेते हैं :

''... फिर वो मेरे पास ये कहते हुए आते हैं कि, 'माँ अब हमने शादी करने का तय कर लिया है। हम शादी कर लेते हैं।' मुझे 'हाँ' कहना ही पड़ता है। कई चीज़ों में मैं 'हाँ' नहीं करना चाहती, पर मुझे 'हाँ' कहना पड़ता है। किंतु ये बहुत ही बुरा अग्रगमन निर्माण करता है। हो सकता है किसी मामले में, असामान्य मामले जैसे, इस तरह के विवाह के लिये किसी को चुना हो। पर इसका मतलब ये नहीं है कि आपको चीज़ों अपने हाथ में ले लेना चाहिये और इस तरह की चीज़ें करना शुरू कर देनी चाहिये, ताकि बाद में मुझे परेशानी हो। क्योंकि एक बार अगर आप ऐसा करते हैं तो बाद में कोई भी दूसरा ऐसा करने लगता है। ये एक प्रकार का आक्रोश है, कि आप कुछ तय

करते हैं, मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि, 'माँ, हमें शादी करनी है।' अब मैं क्या कहूँ? 'ठीक है, कर लो शादी।' पर ये मेरे लिये एक समस्या पैदा कर देते हैं और बाकी लोगों के लिये भी...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

शादियाँ बनाने की और इस तरह के रोमांस के खेल खेलने की कोई जरूरत नहीं है :

''... तो हम सहजयोगियों को इसमें ज़्यादा प्रगति करनी होगी। बजाय इसके मैं पाती हूँ कि लोग, ज़्यादातर पश्चिम में ये सोचने की कोशिश करते हैं कि हम किससे शादी करने जा रहे हैं। ये सम्बन्ध जो स्थापित होते हैं वो गलत हैं। इस तरह शादियाँ बनाने और रोमांस के खेल खेलने और उन सब की कोई जरूरत नहीं है। अगर शादी होनी ही है तो वह होगी। पर वातावरण को गंदा न करें। कुछ लोग छोटे होते हैं जो नाइयों की तरह होते हैं, आप देखते हैं, जो शादियाँ बनाने की कोशिश करते हैं और इसकी उससे और उसकी इससे रिश्ते जमाने में बड़ा गर्व महसूस करते हैं...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लंदन)

यह बहुत ही पवित्र क्षण है, जब आप अपने पति या पत्नी से मिलने जा रहे हैं :

''... मैंने देखा है, कि भावमय जीवन में भी आप लोग बहुत सहते हैं, सब चीज़ों के लिये। कारण है, आप सोचना शुरु कर देते हैं। आप देखिये, अब भारत में हमारा विवाह जैसे हाता है, वह बहुत ही सादा और सरल है। बचपन से ही हमें सिखाया जाता है, कि हमारी शादी होगी। इसलिये आपको सीखना चाहिये कि पति के साथ कैसे रहना है और आदमी को हमेशा बताया जाता है, कि पत्नी के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये। पर उन्हें ये पता नहीं होता कि पति कौन है और पत्नी कौन है। पर पति और पत्नी एक प्रकार के चिन्ह के समान छोटे हैं। वो नहीं जानते कि कौन है, पर कोई भी हो सकता है। इसलिये एक बार आपने उसे (पत्नी को) धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया, ये आपके लिये एक आश्चर्य के समान होता है और आप इसका आनन्द लेते

हैं। और इस पूरे चीज़ का निर्माण उस अंत तक किया जाता है, जहाँ वो क्षण भी शुभ होना चाहिये। हालांकि वो जन्मपत्रिका देख कर भी विचार करते हैं, ये एक महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि यदि आप जन्मपत्रिका नहीं देखते तो ये विनाशकारी हो सकता है। इसलिये वो जन्मपत्रिका देखते हैं। और अगर उसमें बहुत सारे मुद्दे हों, तो वो कहते हैं, कि छब्बीस का जुड़ना उचित है और फिर उनका विवाह हो जाता है, अन्यथा नहीं होता।

अब ये जरूरी नहीं है, कि हम मिले या ना मिले, कभी-कभी लोग मिलते हैं, एक साल तक एक दूसरे से बात-चीत करते हैं, हो भी सकता है कि उनकी शादी विलंबित हो गयी हो, शुभ समय नहीं होता, उन्हें साथ में रहने का थोड़ा समय मिल जाता है, पर कभी एकांत में नहीं। वे कभी एकांत स्थान पर नहीं जाते। इसलिये उस क्षण को बहुत ही पवित्र क्षण के रूप में रखा जाता है, जब आप अपने पति या पत्नी से मिलने वाले होते हैं, ये बहुत ही पवित्र क्षण होता है। इसलिये आप उसी बिंदू पर केन्द्रित होते हैं।

तो ये अचानक तय होता है। अब आप उस क्षण को पवित्र क्षण की तरह रखते हैं, कभी-कभी ऐसा होता है कि आपको बीच में थोड़ा समय मिल जाता है, बहुत बार, निर्णय लेने के बाद भी आपको उस व्यक्ति को देख कर उसे एक भावना के रूप में ही कायम रखना होता है, पर आप अपना चित्त हटने नहीं देते, यह पूरी तरह से एकाग्रित प्रयास है। ये खटके से हो जाता है, क्योंकि आप इसे स्वीकार करते हैं...''

(१९८५, देवी पूजा, सॅन दिएगो, यू.एस.ए.)

बेहतर होगा शादी से पहले आप इन सब बुरी आदतों से छुटकारा पा लें :

''... जब क्राइस्ट ने कहा था, 'दाऊ शैल नौट हैव ॲडल्टरस आईज' (आपकी आँखें व्यभिचारी नहीं होनी चाहिये)। उन्होंने ऐसा इसलिये नहीं कहा क्योंकि ये संभव नहीं था। ये सहजयोगियो के लिये बिल्कुल संभव है। और शादियों के बारे में इतनी चिंता करने जैसी कोई चीज़ नहीं है। इतना क्या जरूरी है? इतने लोग शादीशुदा हैं और उनको क्या हुआ है। यहाँ तक कि सहजयोग विवाह में भी, इन बुरी आदतों के कारण कुछ विवाह असफल हो

गये हैं। इसलिये बेहतर होगा आप शादी से पहले इन सब बुरी आदतों से छुटकारा पा लें। क्योंकि शादी के बाद भी वे यही करते हैं और लड़के-लड़कियाँ ढूँढते हैं। क्योंकि अगर शादी से पहले इन आदतों को रोका नहीं गया, तो वे ऐसा करते ही रहेंगे। इसलिये शादी से पहले किसी ने ऐसा करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये। और मैंने देखा है कि अब तक ऐसी शादियाँ कभी-कभी सफ़ल नहीं होती। और अगर हुई भी हैं तो वो एक प्रकार का दिखावा है। इससे कभी आपको सच्चा आनन्द प्राप्त नहीं होता, ये एक आनन्दरहित अनुसरण है...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

सहजयोग में कोई छल नहीं होना चाहिये :

''... और इसलिये जो विवाह करना चाहते हैं, उन्हें अपना पूरा विवरण यहाँ पर लीड़र को देना चाहिये, सच्चाई से और सच्चाई से बताना चाहिये, कि आप बाहर शादी करना चाहते हैं या नहीं, सब कुछ पूरी सच्चाई से बताना चाहिये। कोई छल नहीं होना चाहिये। सहजयोग में कोई छल नहीं होना चाहिये। यदि आपका पहले ही कोई साथी है या कुछ भी, सब कुछ साफ़-साफ़ लिखा होना चाहिये ताकि मैं जान सकूं कि आप इस प्रकार के व्यक्ति हैं। भारत में कोई भी अठारह साल से कम उम्र की लड़की और इक्कीस साल से कम उम्र का लड़का शादी नहीं कर सकते। हम उनकी सगाई कर सकते हैं। ठीक है। और जो करना चाहते हैं, वो भारत जा कर शादी नहीं कर सकते, हम आपके लिये भी कुछ व्यवस्था कर देंगे...''

(१९८७, क्रिटीसीजम, इगो, राइट साइडेड डेंजर्स, फ्रान्स)

सहज विवाह सूची

हम वास्तव में किसी को किसी से विवाह करने के लिये मजबूर नहीं करते :

''... ये भविष्य के सभी दूल्हों और दुल्हनों के लिये है। मुझे आपको ये स्पष्ट बताना है कि सहजयोग में हम वास्तव में कभी किसी को किसी से विवाह करने के लिये मजबूर नहीं करते। नि:संदेह हम आपके व्यक्तित्व के अलग-अलग पहलू को देखते हैं और फिर चयन करने की कोशिश करते हैं, ये बहुत बड़ा काम है...''

(१९९१, शादियों से पहले बातचीत)

सहजयोग को तय करने दें :

''... पर एक सहजयोगी के लिये अपनी पवित्रता की रक्षा करना बहुत जरूरी है। जैसा मैंने कल बताया था, अपने लिये लड़का या लड़की ढूँढने की जरूरत नहीं है। ये पवित्रता के नियमों के विरुद्ध भी है। मैं ये नहीं कह रही कि आप अपने माता-पिता को फैसला लेने की अनुमति दें, पर सहजयोग को तय करने दे, क्योंकि आप सब सहजी हैं...''

(१९९८, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

सहजयोग के अपने नियम और तरीके हैं :

''... आप देखिये, एक बार अपने मान लिया, कि आप सहजयोग में शादी करने वाले हैं, तो आपको ये भी मानना होगा, कि सहजयोग के अपने नियम और तरीके हैं, जिससे शादियाँ होती है और ये आपके विवाह की जिम्मेदारी लेगा और आपको आशीर्वादित करेगा। पर यदि आपने परिक्षण करना और दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया तो ये काम नहीं करेगा। या तो आप उस सर्वव्यापित शक्ति पर विश्वास रखिए और अपने अहंकार को समर्पित करिये, या अपने अहंकार को अपने पास रखिये...''

(१९९०, शादियाँ:महिलाओं को सलाह, भारत)

आप लोग यहाँ अपने लिये लड़की पसंद करने नहीं आये हैं :

''... पर छोटी चीज़ें परेशान करती हैं, जैसे किसी की शादी नहीं होती है। दूसरे दिन आप उस आदमी का चेहरा देखिए, मानो जैसे परिवार में किसी की मृत्यु हो गयी है; वो यहाँ बैठा है। वास्तव में, मैंने देखा है। मुझे तुरंत पता चल जाता है किस की अभी तक सगाई नहीं हुई है। फिर शादी के बाद मैं उसी तरह की मूर्खता देखती हूँ। क्योंकि वो परिक्षण करना शुरू कर देते हैं, 'मुझे इस तरह का चाहिए, मुझे उस तरह का चाहिए।' मेरा मतलब है, जो भी यहाँ उपलब्ध है, वो उपलब्ध है। पानी के जहाज़ की तरह, आपको कोई परेशानी नहीं होती क्योंकि आपके पास कोई हल नहीं होता, अगर आप पानी के जहाज़ पर घूम रहे हैं और आप कोई चीज़ माँगते हैं, 'अरे नहीं, यहाँ उपलब्ध नहीं है।' समाप्त। पर फिर आप छोटी-छोटी मूर्खतापूर्ण चीज़ों के लिये सहजयोग का पूरा आनंद गवाँ देते हैं। अगर इस साल नहीं, तो अगले साल। ये बहुत जरूरी है। मेरा मतलब है निश्चित ही उम्र, ऊँचाई, इसकी, उसकी काफ़ी हदें हैं। इसके बाद, फिर भी यदि आप उनकी शादियाँ तय कर दें, ये बहुत दिलचस्प है, फिर वो आपके पास आते हैं और कहते हैं, 'नहीं, नहीं, मैं इस लड़की से शादी नहीं करना चाहता।' क्यों? 'क्योंकि मुझे ऐसी चाहिये और वैसी चाहिये।' ठीक है, फिर हम ढूँढ़ेगे। 'नहीं, नहीं, नहीं, वो बिल्कुल अच्छी नहीं है। उसके साथ ये चीज़ है, ये अच्छा नहीं है। उसके साथ ये चीज़ है, ये अच्छा नहीं है। मेरा मतलब है ये कोई तरीका नहीं है। आप लोग यहाँ पर अपने लिये लड़की पसंद करने नहीं आये हैं। फिर और कोई है, जो कह सकता है, 'ठीक है, मैं यहाँ आया, मैंने एक लड़की देखी और उसके प्यार में पड़ गया।' तो आप प्यार में पड़िये और यहाँ से निकल जाइये। ये मूर्खता चल रही है।

आपकी कोई प्रतिष्ठा होनी चाहिये। आप सब सहजयोगी हैं और जब मैं इस तरह के मूर्खता से भरे ढ़ंग देखती हूँ, मैं कहती हूँ कि ये लोग सहजयोग में कभी उन्नति नहीं कर सकते।

भारत में आप आचंभित रह जाएंगे। मेरा मतलब है, मेरी भी शादी एक ऐसे आदमी से हुई थी, जो दूसरी जगह से था। बिल्कुल अलग देश, अलग धर्म, सब कुछ अलग। और एक अलग आदमी। तो कोई कह सकता है कि ये

विवाह रीति के विरूद्ध था, कोई कह सकता है। पर मैंने कभी इस आदमी को छुआ होगा। और दूसरों की उपस्थिति में कभी उन्होंने मुझसे बात नहीं की होगी और इन सब के बावजूद, हमारी शादी बहुत मजबूत है और हम बहुत ही खुशहाल पति-पत्नी हैं। ये सब मूर्खता जो आप करते चले जाते हैं, इसे भौतिक दिखावे के स्तर पर ले आते हैं, भौतिक समझ, आपका अहंकार, 'मुझे ये चाहिये, मुझे वो चाहिये, आप पाते हैं कि शादी के तुरंत बाद आप निकल भागते हैं। आप परिक्षण करना शुरू कर देते हैं। इसलिये मैं आज आपसे कह रही हूँ। बाद में शायद मैं आपसे शादी के बारे में बात न कर सकूं...''

(१९९०, शादियाँ, औरतों से बातचीत, भारत)

आपके लिये किसी को ढूँढने में हमें काफ़ी समय बिताना पड़ता है :

''... कुछ लोग शादी भी कर रहे हैं। मुझे उन्हें जरूर बताना चाहिये कि वो अभी तय करें, क्योंकि मैंने देखा है कि आप में से बहुत लोग शादी के बाद सोचने लगते हैं, जो कि बहुत ही क्रूर है, जो बहुत ही असभ्य है। इसलिये बेहतर होगा आप अभी तय करें। वास्तव में जो शादी नहीं करना चाहते उन्हें अपने नाम नहीं देने चाहिये। क्योंकि आप नहीं जानते कि आपके लिये किसी को ढूँढ़ने के लिये इन सब चीज़ों को चुनने में हमें काफ़ी समय बिताना पड़ता है। ये एक तरह से समय की बर्बादी है। जब हम सब तय कर लेते हैं, तब अचानक कोई आकर कहता है कि, 'ओह, मैं शादी नहीं करना चाहता।' आश्चर्य है। उन्हें इस बारे में कोई शर्म नहीं आती। वो समझते नहीं हैं। आपने इसके लिये मुझसे कितना काम कराया है। अचानक आप आते हैं और कहते हैं, 'नहीं, हम शादी नहीं करना चाहते।' ऐसे लोगों को शादी के लिये आवेदन नहीं करना चाहिये। अगली बार अगर किसी ने ऐसा किया तो मैं उस व्यक्ति को भारत आने से मना कर दूँगी, मुझे आपको बताना होगा। आपको पता है, कितने दिनों तक हम दो-तीन बजे सोये हैं, इस चर्चा में, कि किसकी किससे शादी करें। हाँ आपको कोई एक व्यक्ति पसन्द नहीं है, तो मैं समझ सकती हूँ, पर आपको ऐसा नहीं कहना चाहिये कि मैं शादी नहीं करना चाहता। आपको खुद नहीं पता, आप ऐसे अनिश्चित राशि हैं, आप लोग सनकी हैं या पागल हैं, क्या बात है? तो अगर आप शादी नहीं करना चाहते हैं तो फॉर्म भरने से

पहले तय करें...''

(१९९०, शादी पर बातचीत, दिल्ली)

''**...पर ये कोई नाटक या खेल नहीं है, विवाह एक गंभीर चीज़ है।** मूर्ख लोगों की कभी शादी नहीं करनी चाहिये। वे खुद की जिंदगी बर्बाद करते हैं और दूसरों की भी। ये बहुत ही सज्जन, प्रतिष्ठित और बुद्धिमान लोगों के लिये है...''

(१९९०, शादी पर बातचीत, दिल्ली)

आप में से हर एक को इसे गंभीरता से लेना चाहिये :

''... ऐसा नहीं है, आप देखिये, इन लोगों को समझ नहीं है, कि मुझे इनके लिये लड़का ढूँढ़ने के लिये कितना कठिन परिश्रम करना पड़ता है, उम्र के अनुसार, ऊँचाई, योग्यता, ये-वो, उन सब को पढ़ो और अचानक वो कहते हैं, 'मैं तैयार नहीं हूँ।' ये मेरी बिल्कुल समझ में नहीं आता। आपको कभी-कभी मेरी तरफ़ भी थोड़ा ध्यान देना चाहिये, आपसे विनती है। कुछ तो विचार कीजिये, हर बार अपने मन के मुताबिक चीज़ों को ठीक करने की कोशिश मत कीजिये, आप सहजयोगी हैं। मैंने आपको आत्मसाक्षात्कार दिया है। मुझे आप लोगों से कुछ नहीं चाहिये। पर इस तरह से हर बार मुझे मत सताइये। वो सब लोग जो इस तरह से व्यवहार करते हैं वे विवाह-सूची से बाहर हैं। मैं उनकी शादियाँ फिर से तय नहीं करूँगी, मैं आपको बता रही हूँ। मैं इस प्रकार की मूर्खता को दोबारा सहन करने वाली नहीं हूँ। कभी-कभी मझे अपने पैर भी नीचे रखने ही पड़ते हैं। मेरी आयु भी अडसठ साल की हो गई है और हम कितना काम करें। अगर उसे (लड़की को) एक विशिष्ट आदमी पसन्द नहीं है, तो ठीक है, पर आपके पास कोई ठोस कारण होना चाहिये कि आपको वो क्यों पसन्द नहीं है। इसलिये इसे गंभीरता से लें, आप में से हर एक को इसे बहुत गंभीरता से लेना चाहिये...''

(१९९०, शादी पर बातचीत, दिल्ली)

कुछ कारण तो जरूर होगा कि क्यों माँ ने इस आदमी को चुना :

''... इस तरह से विचार किया गया था, और अचानक आप कहते हैं,

'नहीं'। किसलिये? क्यों? अगर आप इसके बारे में सोचना शुरु करेंगे, तुरंत आपके वाईब्रेशन रूक जायेंगे, सब कुछ रूक जाएगा। अगर माँ ने चुना है, इतना तो कम से कम आप को पता होना ही चाहिये कि जरूर कोई कारण है कि माँ ने इसे चुना है। आप इस तरह से क्यों नहीं सोचते? बजाए कुछ और सोचने के? कुछ कारण तो जरूर होगा...''

(१९९०, शादी पर बातचीत, दिल्ली)

घोषणा के बाद एक दूसरे से मिले, एक दूसरे से बातचीत करें, पता करें :

''... मैं यही सलाह दूँगी कि आप लोग एक दूसरे से मिले, एक दूसरे से बाते करें, पता करें; और वास्तव में यही समय है, जब आप तय कर सकते हैं। .....तो हमने जो भी निर्णय लिया है वो बिल्कुल भी अंतिम निर्णय नहीं है...''

(१९९१, शादी की घोषणाओं के बाद बातचीत, कोल्हापूर, भारत)

एक दूसरे के साथ अच्छा बनने की कोशिश करें और एक दूसरे में अच्छे गुण देखें :

''... आपकी इच्छा ही अंतिम निर्णय है। आप एक दूसरे से बात कर सकते हैं, दयालु बने। शुरूआत में झगड़ा करने की कोई ज़रूरत नहीं है, उसके लिये हमारे पास पूरी जिंदगी पड़ी है। मुझे आपसे ज़रूर कहना चाहिये, जो भी आपका पहला प्रभाव है, वो सबसे अच्छा है। इसलिये दिखावा करने की कोई ज़रूरत नहीं है, पर एक दूसरे के साथ अच्छे बने और एक दूसरे में अच्छे गुणों को देखें। इस संसार में, कोई भी निपुण नहीं है। अब, वास्तव में जो ऐसा नहीं सोचते कि ये उनके लिये सही है, उन्हे जरूर बिना किसी के हिचकिचाहट के हमें ये बताना चाहिये...''

(१९९१, शादी के घोषणाओं के बाद बातचीत, कोल्हापूर भारत)

वास्तव में मुझे तलाक पसंद नहीं है, परन्तु सहजयोग में इसकी अनुमति है :

''... मैंने पश्चिमी और पूर्वी बुद्धि के बारे में एक बहुत ही दिलचस्प

चीज़ देखी है। पश्चिमी बुद्धि कहेगी, 'माँ, मैं आपको आत्मसमर्पित हूँ, चाहे मैं किसी के साथ भी विवाह करूँ, मैं एक दीपस्तंभ से भी विवाह करूँगा।' और जब वास्तव में शादियाँ होती हैं तब वे सोचने लगते हैं, 'शायद ये सफ़ल नहीं हो सकेगा, माँ अब मैं सोचने लगा हूँ कि ये सफ़ल नहीं होगा और ये और वो, ऐसा और वैसा।' और इस तरह की चीज़ का वास्तव में सामना करने के लिये मैं खुद को बड़ी मुसिबतों में पाती हूँ। मुझे वास्तव में तलाक पसंद नहीं है। परंतु सहजयोग में इसकी अनुमति है। हम ऐसा नहीं कहते कि हमें तलाक नहीं लेना चाहिये। क्योंकि कुछ लोगों के लिये ऐसा मार्ग होना चाहिये ताकि वो अनर्थक चीज़ों से बाहर निकल सके, अगर ऐसा कोई है तो...''

(१९९१, शादियों से पहले बातचीत)

अगर वाइब्रेशन्स में बुराई है या पकड़ है, तो इसे छुपाए नहीं, इसे सहन न करें :

''... इसलिये सभी उद्देश्यों के लिये आपको यह भी देखना चाहिये कि आपकी पत्नी या आपके पति में, या भविष्य में होने वाले दूल्हों और दुल्हनों में या किसी में भी यदि आप मुख्य रूप से उनके वाइब्रेशन्स में बुराई पाते हैं या किसी चक्र में पकड़ पाते हैं या कुछ भी तो बेहतर होगा कि आप इसे सूचित करें। इसे छुपायें नहीं, इसे सहे नहीं। इसमें कोई परेशानी नहीं है। हमने सब चीज़ों का सूक्ष्म निरीक्षण किया है। मुझे खेद है कि कुछ लोगों का विवाह नहीं हो सका पर हम अगले साल कुछ करने की कोशिश करेंगे। हम उनसे बात भी करेंगे...''

(१९९१, शादियों से पहले बातचीत)

'फॉलिंग इन लव' -

अब मैं ये विनती करूँगी कि, सहजयोग में हम इस परिभाषा का निषेध करें :

''... आप को नहीं पता कि कितनी रातें मैंने लोगों को चुनने में बिताई है। वैसे ही, आप पच्चीस-तीस देशों से हैं। कल आपने यह देखा। आपकी शर्तें अलग हैं, अंदाज अलग है, सब कुछ अलग है, विभिन्न आयु, विभिन्न

ऊँचाई, विभिन्न चेहरे, विभिन्न योग्यतायें। इसलिये, इन सब को जोड़ना बहुत मुश्किल है। कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि यदि अब कुछ ज़्यादा ही शिक्षित हैं तो आपको एक सीधी-सादी औरत दी जाए, ताकि आप का थोड़ा सा दबाव कम हो जाए, आप उसके साथ बाँट सकते हैं। पर अगर आप दोनों समान रूप से शिक्षित हैं, तो हो सकता है, दोनों सिर... (श्रीमाताजी हँसती हैं)

इसलिये मुझे काफ़ी चीज़ों के बारे में और वाईब्रेशन्स में सोचना पड़ता है, पर आप किसी भी तरह से, उसका विरोध करते हैं आप विरोध करने की कोशिश करते हैं। ठीक है, कोई बात नहीं, पर मुद्दा ये है कि नुकसान किसका होता है। आज मुझे आपसे इसके बारे में बात करनी है, क्योंकि सहज में जो रास्ता आता है, जिस तरह से आता है, हमें लेना पड़ता है। हमारे रास्ते में जो भी आयें हमें लेना चाहिये। हमें एक तरह से ऐसा नहीं कहना चाहिये कि, 'आई हैव फॉलन इन लव' (मैं प्यार में गिर गया हूँ) प्यार में कोई गिरता नहीं है, सहजयोग में वो प्यार में उपर उठता है। (हँसी-तालियाँ)

ये बहुत ही अनोखा विचार है कि किसी को प्यार में गिरना चाहिये, क्योंकि आप देखिये, इसका मतलब आपको कोई मूर्खतापूर्ण या अपराध करना चाहिये। इसलिये काफ़ी लोगों ने मुझसे कहा है कि, 'माँ, मैं उसके साथ प्यार में गिरा नहीं हूँ।' आप प्यार में गिर कैसे सकते है, आप कि गढ्ढे में गिरते हैं या आप किसी नदी में गिर सकते हैं या इस तरह की किसी चीज़ में, पर मेरी समझ में नहीं आता कि आप प्यार में कैसे गिर जाते है, ये तो एक ठोस चीज़ है।

इसलिये प्यार में गिरने वाले इस मूर्खतापूर्ण विचार को छोड़ना होगा। अगर इसका मतलब ये है कि आपने प्यार को महसूस किया है, या अगर इसका मतलब ये है कि आप प्यार या किसी चीज़ के प्रति संवेदनशील हैं, मैं समझ सकती हूँ, मैं थोड़ा व्याख्यात्मक हूँ, पर ये प्यार में गिरने वाला काम चलता ही जा रहा है। अब मैं आपसे विनती करती हूँ कि सहजयोग में हम इस परिभाषा का निषेध करें...''

(१९८८, श्रीशक्ति पूजा, भारत)

सहज विवाह का अर्थ

सभी पीढ़ियों में और कई सभ्यताओं में; विवाह के परंपरा को अपनाया गया है और मानव समाज के महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में इसका आनन्द उठाया गया है। विवाह नैतिकता का आधार है। यह सामूहिक प्रमाण देता है और यह एक सुरक्षित और पवित्र समाज की नीव है।

सहजयोग में विवाह का एक विशेष परिमाण है। यह खुद के लिये और दूसरों के लिये आनन्द लाता है और यह सामूहिकता के आधार का स्रोत है। यह सिर्फ दो लोगों के बीच में प्रेम का मिलन नहीं है, परंतु दो समुदायों के बीच, दो देशों के बीच और जैसा श्रीमाताजी ने कहा है कि, दो ब्रह्मांडों के बीच का मिलन है।

हमें विवाह क्यों करना चाहिए?

''...**विवाह का उद्देश्य है खुशी देना,** उल्लास देना, आनन्द देना और वो सारी परम आनन्दपूर्वक चीज़ें जिनके बारे में हम सोच सकते हैं, जो दो मानवों के मिलाप के द्वारा हमें प्राप्त होता है। हम ऐसा कह सकते हैं। यह बहुत समीप और निजी सम्बन्ध है, जिसका आदर होना ही चाहिये। इसका किसी भी प्रकार से अपमान नहीं होना चाहिये या बिना विचार के व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिये। जो लोग अपने जीवन में अपने जीवन साथी को सम्मान नहीं दे सकते उन्हें और कहीं भी सम्मान नहीं मिलेगा। जो लोग बुरा व्यवहार करते हैं या अपने साथी की प्रतिमा को खराब करने की कोशिश करते हैं वो खुद को नुकसान पहुँचा रहे हैं।

एक दूसरे को समझने का प्रयास करें, एक दूसरे को सजाईये, सुधारिये नहीं, सजाईये। जैसे कोई आभूषण जब किसी व्यक्तित्व से जुड़ता है, तो उसकी शोभा बढ़ाता है, उसी तरह, दूसरे की शोभा बढ़ाने का प्रयास कीजिये। इसलिये जीवन में सुंदरता और सुशीलता इस पवित्र रिश्ते से आती है। इसका प्रतिपादन होना ही चाहिये। विवाह वो बन्धन है, जो समाज को माँ के आशीर्वाद को अपने ही खुबसूरत बन्धन में बाँधे रखता है।

अपने सभी पुराने विचारों को त्याग दें, आपके सब इस नाम के आधुनिक तरीके जिनसे हमने अपने वैवाहिक जीवन को बर्बाद कर दिया है। यदि आप अपने पति या अपनी पत्नी का आनन्द नहीं ले सकते तो इस संसार के किसी भी वस्तु का आप आनन्द नहीं ले सकते, क्योंकि ये सम्बन्ध सबसे घनिष्ठ और पवित्र है ...''

(१९८१, विवाह आनन्द देने के लिये है, यू.के)

ये सबसे साधारण चीज़ है करने के लिये :

''... अब, सहजयोगियों के लिये विवाह क्यों ज़रूरी है? पहली और सबसे ज़रूरी चीज़, ये सबसे साधारण चीज़ है करने के लिये, विवाह करना। ईश्वर ने आपको यह विवाह करने की इच्छा किसी उद्देश्य से दी है। परंतु,

उसी इच्छा का प्रयोग यदि आप उस उद्देश्य के लिये नहीं करते तो यह एक दोष बन जाता है, यह एक अपवित्र चीज़ बन जाती है। यह आपके उत्थान के लिये बहुत हानिकारक हो सकती है...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के)

यह एक तपस्या है, जिससे आप अपने शक्तियों को समझते हैं :

''... सहजयोग में काफ़ी बेहतर है। लोग वैवाहिक जीवन का महत्व समझते हैं। यह एक नाटक है, परंतु यह तपस भी है। यह एक तपस्या है, जिससे आप अपने शक्तियों को समझते हैं...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल, टर्की)

संतुलन कैसे प्राप्त करें, साक्षी स्वरूप कैसे बनें और आत्मा कैसे बनें :

''... अब, सबसे पहली चीज़ जो हमें जाननी है, वो ये कि हमने इस विवाह का आयोजन एक उद्देश्य के साथ किया है। पहला हेतु यह है कि हम विवाह को सहजयोग के लिये बहुत अनिवार्य मानते हैं। यदि कोई विवाह करना नहीं चाहता, तो हम कहते हैं, 'ठीक है, आप सहजयोग से बाहर निकल जाईये।' यह ठीक है। अब विवाह ज़रुरी क्यों है, क्योंकि विवाह एक बड़े यज्ञ के समान है, यह एक बड़ी तपस्या के समान है, आप ऐसा कह सकते हैं, या यह एक बड़ा अनुभव है। संतुलन कैसे प्राप्त करें, साक्षी स्वरूप कैसे बनें और आत्मा कैसे बनें, यह बहुत जरूरी है...''

(१९९३, दुल्हनों को सलाह, गणपतीपुले)

इस मिडीया ने पुरुषों और महिलाओं के दिमाग में ऐसी कल्पनायें डाल दिए हैं, वैवाहिक जीवन के लाभ को कम कर दिया है :

''... अभी हाल ही में मैंने एक सुंदर किताब पढ़ी जो अभी निकली है, 'मिडीया करसेस अमेरिका'। उसमें उन्होंने बताया है, कि कैसे मिडीया ने पुरुषों और महिलाओं के दिमाग में विचार डाल दिये है, वैवाहिक जीवन के लाभ को नकार दिया है। किस प्रकार उन्होंने वैवाहिक जीवन को मार दिया

है। वो शादी करते हैं, फिर तलाक लेते हैं, शादी करते हैं तलाक लेते हैं। यही चीज़ हमेशा चलती रहती है...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल, टर्की)

''**...विवाह आपको धार्मिक होने का ज्ञान देता है,** नैतिक बनाता है। यह आपको सिखाता है कि किस प्रकार दूसरों की पवित्रता और अपनी पवित्रता का आदर करना चाहिये...''

(१९८१, विवाह आनन्द देने के लिये है, यू.के)

विवाह भौतिक और भावनिक सुरक्षा प्रदान करता है :

''... इसलिये भौतिक सुरक्षा और भावनिक सुरक्षा के लिये भी, मूलाधार के प्रति आपकी एक प्रकार की स्वस्थ अवस्था होनी ही चाहिये। इसलिये मैं बहुत उत्सुक हूँ कि आप सबका विवाह हो जाए, और विवाह के बाद, कुछ दिनों के बाद, आप पाते हैं कि आपका ध्यान वैवाहिक जीवन के दूसरी परेशानियों की ओर मुड़ने लगता है। परंतु ऐसा नहीं होता यदि आप सहजयोगी नहीं है क्योंकि इन्द्रियों के द्वारा ही प्राप्त किया गया ज्ञान का सिद्धान्त इस आधुनिक जीवन का मुख्य विषय बन गया है। और आप लोगों के विचारपूर्वक किये गये कृतियों के रुक्ष समुद्र पर इधर-उधर डोलते रहते हैं। मीडिया, किताबें, विचार, ये सब चीज़ें आपके अन्दर इस भयानक उत्तेजना पैदा करने वाले स्वभाव निर्माण करते हैं...''

(१९८५, मूलाधार संबोधन, बर्मिंगहैम, यू.के)

एक सामूहिक प्रमाण होना चाहिये, सब कुछ, परंतु किस लिये? अपने अन्दर की पवित्रता की आराधना के लिये :

''... यह बहुत आवश्यक है। और मुझे अभी आपको यह बताना है। मेरे लिये वो समय आ गया है कि आपसे बताऊँ-कि ये हमारे जीवन में एक अवरोध है। पहली चीज़ जो लोग पूछेंगे, 'मैं किससे शादी करने वाला हूँ?' इतनी जल्दबाजी क्या है? नि:संदेह, मैं विवाह को एक पवित्र चीज़ मानती हूँ, विवाह होना चाहिये, एक सामूहिक प्रमाण होना चाहिये, सबकुछ, परंतु

किसलिये? अपने अन्दर की पवित्रता की आराधना के लिये। फिर उनका विवाह होता है, फिर उनके बच्चे होते हैं, फिर उन्हें एक घर चाहिये होता है, फिर उन्हें ये चाहिये होता है। यह पूरा एक द्वीप के समान व्यवसाय है, जो चलता ही रहता है, चलता ही रहता है और आपके जीवन का प्रकाश फैलता ही नहीं...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राइटन, इंग्लैंड)

यदि आपको धर्म के साथ रहना है, इसका मतलब विवाह है, इसका मतलब सामूहिक प्रमाण है :

''... अब, मोहम्मद साहब के वक्त एक बहुत बड़ा प्रश्न खड़ा हुआ, क्योंकि पुरुष बहुत कम थे और महिलायें बहुत, और सभी उम्र के समुदायों की। और उन्हें पता नहीं था कि क्या करें? इन लड़कियों को कैसे बचायें क्योंकि बहुत सारे पुरुष युद्ध में मारे जा चुके थे। इसलिये उन्होंने पुछा, 'अब ऐसे स्थिति के समय पर क्या किया जाये? जब ऐसी बड़ी आपत्ति है और औरतें इतनी ज़्यादा है और आदमी बहुत ही कम?'

तब उन्होंने कहा, 'ठीक है, आप चार या पाँच पत्नियाँ ब्याह सकते हैं और आप किसी भी उम्र के गट में विवाह कर सकते हैं।'

और इसलिये वो इतने प्रामाणिक थे कि हर आदमी का विवाह होना चाहिये और विवाह के बगैर कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिये, यह पाप था। इसकी जगह मुस्लिम अब ये सोचते हैं कि उन्हें अधिकार है कि वो पाँच लोगों से शादी कर सकते हैं। मेरा मतलब है, जब आदमी ज़्यादा हैं और औरतें कम हैं, तब ये गलत है। आपको इसका हल ढूँढना ही होगा। उस समय, बहनों और भाईयों के बीच के सम्बन्ध की सीमाओं भी स्थिर करना पड़ा था, क्योंकि यह एक बहुत बड़ी समस्या थी।

तो उन्होंने कहा, 'ठीक है, एक ही माता-पिता से जन्मे हुये बच्चे आपस में शादी नहीं कर सकते पर चचेरे, ममेरे, मौसेरे या फूफेरे आपस में शादी कर सकते हैं,' उस समय।

अब वक्त बदल गया है, ठीक है, अब वो समय नहीं है। हम किसी युद्ध पे नहीं हैं, उस समय जैसे कुछ नहीं हो रहा है। वैसी कोई परेशानी नहीं है।

इसलिये अब हमें अपने भाई-बहन के पवित्र सम्बन्ध को बढ़ाना चाहिये...''

(१९८१, दिवाली पूजा, यू.के)

पुरुष ने अपने अभिमान में विवाह के विरोध में अपनी आवाज़ उठाई :

''... विवाह की प्रथा यहाँ क्राईस्ट के भी बहुत पहले से है, अब्राहम के बहुत पहले से, मोज़ेस के बहुत पहले से और एक प्रामाणिक विवाह, जो समाज के द्वारा आशीर्वादित था, उसे बहुत पहले स्वीकृति थी। परंतु पुरुष ने अपने अभिमान में विवाह के विरोध में अपनी आवाज़ उठाई, प्राकृतिक तरीके से स्वस्थ चित्त के जीवन निर्वाह के विरोध में...''

(१९८६, श्रीगणेश तत्व की स्थापना, सन दिएगो, यू.एस.ए.)

''...विवाह से आप एक बेहतर इन्सान बन जाते हैं और आप एक बेहतर व्यक्तित्व का विकास करते हैं...''

(१९८०, विवाह का मूल्य, यू.के)

सहज विवाह का अर्थ

I. सहजयोग विवाह विशेष है

आपको विवाह के प्रथा में कीर्ति लानी होगी क्योंकि यह प्रथा ईश्वर के द्वारा प्रस्थापित की गयी है :

''... हमें खुद को सिखाना होगा। आप जानते हैं, कि असफल विवाहों और तलाकों की वजह से पहले ही कितना नुकसान हो चुका है। हमें खुद को सिखाना होगा, हमें थोड़ा सहन करना होगा, हमें शिक्षित होना होगा, पुन:शिक्षित हों और अपने आप को सुधारें और ऐसा न कहें कि, 'मैं ऐसा हूँ और वैसा हूँ, मैं क्या कर सकता हूँ?'

आपको विवाह के प्रथा में कीर्ति लानी होगी क्योंकि यह प्रथा ईश्वर के द्वारा प्रस्थापित की गई है, इन्सानों के द्वारा नहीं, ये एक गलत विचार है। यह ईश्वर के द्वारा प्रस्थापित किया गया पवित्र अवसर है, जहाँ ऐसी पवित्र चीज़ होती है। इसकी पवित्रता को सम्भालना चाहिये और इस तरह से करना चाहिये जैसे यह एक बहुत सभ्य सम्बन्ध है। सभी सभ्यतायें, विनीत जीवन की सभी सुन्दरता एक खुशहाल वैवाहिक जीवन से ही बहती है। असभ्य नहीं, घटिया नहीं, पर एक महान, रमणीय, आनन्दित, स्वागत करने वाली देने वाली संगति...।''

(१९८१, विवाह देने के लिये है, यू.के.)

पूरे ब्रह्माण्ड के लिये आप क्या मायने रखते हैं उस आदर को समझिये :

''... यह एक बहुत अच्छा दिन है और आप सब लोगों को सहजयोग विवाह के मूल्यों को समझना चाहिये। आप लोगों को एक आदर्श विवाह बनना है। सभी अंग्रेजों, सभी अमेरिकन, युरोपियन और भारतीयों के लिये भी। क्योंकि भारतीय आप लोगों से ये सब चीज़ें सीखते हैं। यदि आपका विवाह आदर्श है तो वे भी आदर्श विवाह बनायेंगे। इसलिये ये बहुत ज़रूरी है उन लोगों के लिये जो इंग्लैंड में रहते हैं कि वे इस अवसर की गहराई को समझें और पूरे ब्रह्मांड के लिये और शान्ति के लिये वो क्या मायने रखते हैं

इस आदर को समझें...''

(१९८१, विवाह आनन्द देने के लिये है, यू.के)

मानव के जीवन में ये सबसे पवित्र अवसर है :

''... विवाह एक पवित्र अवसर है, मानव के जीवन में सबसे पवित्र अवसर है, यह पवित्र है, इसलिये आनन्ददायक है और इसकी पवित्रता के साथ पूरे विश्व में वाइब्रेशन्स बहते हैं...''

(१९८१, विवाह आनन्द देने के लिये है, यू.के)

याद रहे कि आपका विवाह एक सहजयोगी से हो रहा है :

''... मैं आपको एक चीज़ बताना चाहती हूँ कि आप सहजयोग में सहजयोगियों से विवाह कर रहे हैं। इस विषय को हमेशा याद रखें। वैसे भी, हम देखते हैं कि कितनी शादियाँ टूट रही हैं और सब तरह की चीज़ें सहजयोग में घटित हो रही है। और हमें कभी-कभी एक प्रतिशत मिलता है। सिर्फ एक प्रतिशत! क्यों? क्योंकि वे अपना सहजयोगी होने का उत्तरदायित्व समझते हैं। इसलिये मैं चाहती हूँ कि आप सब ये याद रखें कि आपका विवाह एक सहजयोगी से हो रहा है, आपको यह सच्चाई हमेशा याद रखनी चाहिये...''

(२०००, दूल्हों और दुल्हनों से बातचीत, दिल्ली)

एक बार आप का विवाह हो गया, आप लुप्त नहीं होते, आप तब भी सहजयोग में रहते हैं :

''... एक और चीज़ है, जो मुझे आप सब को दोबारा बतानी है, कि एक आपका विवाह हो गया, तो भी आप लुप्त नहीं होते। आप तब भी सहजयोग में रहते हैं...''

(१९९०, विवाह पर बातचीत, दिल्ली)

विवाह सहजयोगी की नींव है :

''... ठीक है, अगर इसके बाद भी आप निकलना चाहते हैं, तो आप

ऐसा कर सकते हैं, मुझे सही कारण दे कर परंतु हमें ये ज़रूर जानना चाहिये कि सहजयोग के लिये विवाह बहुत महत्वपूर्ण चीज़ है, यह सहजयोग की नींव है। मेरा मतलब है हम ऐसे तुच्छ पतियों और पत्नियों को नहीं रख सकते जिन्हें सहजयोग के नींव की कोई परवाह नहीं है...''

(१९९१, विवाह से पहले बातचीत)

हम सभी रुकावटों से आगे बढ़ जाते हैं :

''... इन विवाहों का यही मकसद है कि हम में मानव के बारे में अंतर्राष्ट्रीय समझदारी होनी चाहिये कि सहजयोग में आने के बाद हम सभी रुकावटों से आगे बढ़ जाते हैं। जाति, धर्म और राष्ट्रीयता की सभी बाधायें। हमें इसे एक समान विश्व बनाना है और राष्ट्रीय पहचान और जातीय पहचान की बीमारी को दूर कर इसे शांतीपूर्ण बनाना होगा। हम सब ईश्वर के द्वारा बनाये गये हैं। हमारी भिन्नता सिर्फ हमारे चमड़ों में है। संस्कृति में हम थोड़े इधर-उधर भिन्न है, परंतु मुलत: हमारे अन्दर हम सब आध्यात्मिक है। और आप में जो धर्म हैं वो हमारे अन्दर स्वाभाविक रूप से बना है, जो हमारा हिस्सा है...''

(१९९३, दुल्हों को सलाह, गणपतीपुले)

हमें संसार को यह सिद्ध करना होगा कि विवाह एक दैवीय संस्था है और इस दैवीय संस्था के द्वारा अगर आपको साथ रखा गया है, तो ये भी एक दैवीय योजना है। और इस दैवीय योजना के द्वारा कई चीज़ें काम करने वाली हैं। इसलिये जिनका आज विवाह हो रहा है वे सहजयोग को बहुत ज़्यादा मदद कर रहे हैं। मैंने आपको पहले भी बताया है कि ऐसे कई संत हैं जो जन्म लेना चाहते हैं। और आज कल आप देखते हैं कि ये संसार भयानक लोगों से भरा हुआ है। हमें बहुत सारे संतों के यहाँ जन्म लेने की जरूरत है और ये संत जन्म लेंगे जब आपका वैवाहिक जीवन अच्छा होगा, खुशहाल वैवाहिक जीवन और आनन्दमय जीवन...''

(१९९३, दूल्हों को सलाह, गणपतीपुले)

''...इसलिये सहजयोग में विवाह का उद्देश्य है अंतर्राष्ट्रीय सिरे से एक दूसरे से जुड़ना। इसलिये आप अपनी राष्ट्रीयता के सभी बन्धनों से आगे

निकल जाते हैं, हमारे जाति-विशेष के सभी बंधन, कुल के सभी बंधन, इतने अधिक भौतिक सुख के सभी बंधन...''

(१९९३, दुल्हनों को सलाह, गणपतीपुले)

विवाह के लिये नहीं पर एक सहजयोग विवाह के लिये :

''... पर फिर भी आपको ये पता होना चाहिये कि आप सहजयोग में विवाह कर रहे हैं, विवाह के लिये नहीं, परंतु सहजयोग विवाह के लिये। ये बहुत जरूरी है-बहुत जरूरी है कि आपको दिखाना है कि आपका एक बहुत सफ़ल विवाह है।

(२००१, दूल्हों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

आपको देवों का आशीर्वाद मिलेगा और आप अपने प्रेम का आनन्द उठा पाएंगे :

''... पर फिर भी आपको यह जरूर याद रखना चाहिये कि आप जो भी कर रहे हैं वो देव नियमों के अनुसार है। देव नियमों का पालन होना ही चाहिये और इस तरह से आपको सफल, बहुत सफल विवाह बनाना चाहिये। मैं बहुत उत्सुक हूँ देखने के लिये कि आप इन विवाहों से बहुत खुश हो गये हैं। कुछ बहुत खास, अलग, कि आप पर देवों का आशीर्वाद होगा और आप अपने प्रेम का आनन्द उठा पाएंगे। भगवान आपको आशीर्वाद दें...''

(२००१, दूल्हों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

आपको सहजयोग की प्रतिष्ठा को कायम रखना है :

''... हम बहुत अच्छा विवाह और बहुत अच्छे बच्चे चाहते हैं। संतान भी, बच्चों का भविष्य भी बहुत अच्छा होगा, यदि आप सज्जन, बुद्धिमान, अच्छी और दयालु माँ हैं। अपने आपको पर्याप्त रूप में बताया है। मैं आशा करती हूँ कि आप समझते हैं कि आप सहजयोग में विवाह कर रहे हैं। और आपको सहजयोग की प्रतिष्ठा को कायम रखना है, ठीक है। आप सब ये वचन देते हैं? भगवान आपको आशीर्वाद दें...''

(२००२, दुल्हनों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

II. सामुहिक परिमाण

विवाह आपको संकीर्ण बुद्धि वाला या स्वार्थी या किसी भी तरह से दूसरे से अलग रहने वाला नहीं बनना चाहिये :

''... परंतु सहजयोग में ये इतना सामूहिक है, आप ये देख सकते हैं। ये बहुत सामूहिक है, आपके इतने भाई और बहन हैं और हम सब आपके इस जोड़ी के खुशी का आनन्द ले रहे हैं, जो पति और पत्नी के रूप में जुड़ गये हैं। इसलिये आपको समझना है कि विवाह से आपको संकीर्ण बुद्धि वाला या स्वार्थी या किसी भी तरह से दूसरे से अलग रहने वाला नहीं बनना चाहिये...''

(१९८१, विवाह आनन्द देने के लिये है, यू.के.)

हर एक को समझना चाहिये कि सामूहिकता का स्थान सबसे पहला है :

''... इसे पूरी सच्चाई से करना चाहिये। इसका मतलब है आपको आदर करना चाहिये, परंतु उसमें सच्चाई होनी चाहिये, उसमें कोई छल या कपट नहीं होना चाहिये, कुछ नहीं। आपका जीवन साथी है। आज मैं एक और चीज़ आपको बताना चाहती हूँ कि मैंने हमेशा देखा है कि सहजयोग विवाह एक मुद्दे पर आ कर असफल हो जाता है। जो बहुत ज़रुरी है, ये वो मुद्दा है जहाँ सामूहिकता आपस में टकराती है। जब सामुहिकता टकराती है, तो सहजयोग विवाह असफल हो जाते हैं। अब आप सहजयोग में विवाह कर रहे हैं, आप इस प्रकार से विवाह नहीं कर रहे हैं, आप उस प्रकार से विवाह नहीं कर रहे है जैसे दूसरे करते हैं। और इसलिये हर एक को समझना चाहिये कि सामूहिकता का स्थान सबसे पहले आता है। परंतु आपको एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए, आपको एक दूसरे को समझना चाहिये, एक दूसरे के प्रति मिठास रखें, दयालू हों, एक दूसरे का ध्यान रखें, सचेत रहें और जाने कि आपको एक पति है या पत्नी है। पर सबसे पहले चीज़ है सामूहिकता...''

(१९८०, विवाह और सामूहिकता, यू.के)

ये दो समुदाय, दो राष्ट्र हैं, ये पूर्ण रूप से दो ब्रह्माण्ड हो सकते हैं :

''... जब ये प्रेम पर आती है, तो प्रेम को व्यक्त कैसे करें, अपनी सारी

खुशियाँ, अपने सारे दु:ख, अपनी सारी परेशानियाँ दूसरों में बाँट कर। परंतु सहजयोग में, ये थोड़ा ज़्यादा है, मैं सोचती हूँ, काफ़ी ज़्यादा है, यहाँ आपको समुदाय में बाँटना होता है। विवाह किसी एक व्यक्ति के लिये नहीं है, सहजयोग में तो बिल्कुल भी नहीं। अगर किसी की ऐसी भावना है कि सहजयोग में शादी दो लोगों के बीच में होती है, तो ये गलत चीज़ है। ये दो समुदाय हैं, ये दो राष्ट्र हो सकते हैं, ये पूर्ण रूप से दो ब्रह्माण्ड हो सकते हैं। इसलिये इसका आनन्द सिर्फ अपने बीच में नहीं लेना चाहिये, अगर आप एक अच्छे पति-पत्नी हैं, एक दूसरे के प्रति, तो ये सहजयोग में पर्याप्त नहीं है। उस प्रेम का आनन्द हर एक के द्वारा उठाया जाना चाहिये, समाज में, समुदाय में। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते, तो आपने सहजयोग विवाह को हासिल नहीं किया है। तो ये एक आप का विवाह है जैसे लोगों का होता है, इसके बारे में कुछ भी खास नहीं है...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के)

सहजयोग सबसे पहले आता है और सहजयोगी सबसे पहले आते हैं :

''... परंतु अब, जैसे पत्नी महसूस करती है कि सहजयोग सबसे पहले आता है और सहजयोगी सबसे पहले आते हैं, तभी ऐसे विवाह, ये विवाह सहज होते हैं। अपने निजी जीवन के लिये नहीं। किसी के भी आपके साथ ऐसे विचार हो सकते हैं; ये स्वयं-केन्द्रित नहीं है। ये सहजयोग को ठोस बनाने के लिये है, फिर पहला दिन ही आखिरी दिन है। अगर आप ऐसी सोच वाले नहीं है, और आप सहजयोग में इसलिये विवाह कर रहे हैं क्योंकि ये चर्च में विवाह करने से सस्ता है-ये एक भ्रांति है। आपके उद्देश्य बहुत अलग है...''

(१९८१, विवाह की स्थापना, विवाह के बारे में बातचीत, लंदन)

दूसरों को खुश करना :

''... मैं आशा करती हूँ कि मैं सहजयोगियों के वैवाहिक जीवन का सबसे अच्छा भाग देख सकूंगी। सहजयोगी दूसरे आम लोगों की तरह नहीं होते जो सुबह से शाम तक झगड़ते रहते है। वे सहजयोग के बारे में बात करते हैं, सहजयोग का आनन्द लेते हैं और दूसरों को आनन्द देने के लिये

आनन्दित रहते हैं...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

''...**विवाह केवल आपको आनन्द देने के लिये नहीं है** बल्कि दूसरे लोगों के आनन्द के लिये भी है। इसलिये एक योगी के वैवाहिक जीवन के बारे में आपको पूरी समझ होनी चाहिये। और हमें दुनिया को दिखाना है कि आपको अपने परिवार को त्यागने की ज़रूरत नहीं है, आपको विवाह त्यागने की ज़रूरत नहीं है, आपको अपने बच्चों का त्याग करने की ज़रूरत नहीं है, आपको कुछ भी त्यागने की ज़रूरत नहीं है, परंतु आप पृथक (डिटैच) होते हैं...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

लोग इतना ज़्यादा कष्ट भोगते हैं जब वो नहीं समझते कि हम सब एक ही परिवार का हिस्सा हैं :

''... इसके बाद दूसरा मुद्दा परिवार के बारे में है, जैसा कि मैंने आपसे कल बताया था कि, 'मेरा घर, मेरे पास खुद का घर होना ही चाहिये, मेरे पास होना ही चाहिये, हाँ,' - खास कर लीड़रों की पत्नियाँ। फिर से उन्हें सचेत करना होगा, क्योंकि इन सब चीज़ों की वजह से परेशानियाँ इस हद तक बढ़ गई, कि मुझे उन्हें सहजयोग से बाहर निकालना पड़ा। इस तथ्य के अलावा पति बहुत अच्छे थे, परंतु कुछ औरतों को खुद का घर चाहिये था, उन्हें खुद के बच्चे चाहिये थे, वे खुद के घर में रहना चाहते थे। तो इस तरह के विचार अगर एक लीड़र के पत्नी के होंगे, तो दूसरों का क्या होगा? उन्हें ऐसे उदाहरण का अनुसरण करना चाहिये जो कि लीड़र की हो और यदि एक लीड़र के पास नहीं है और उसकी पत्नी के पास वो उदाहरण न हो तो पूरी चीज़ एक खतरे की स्थिति में आ जाती है और ये ही मैंने देखा है, कि लोग इतना ज़्यादा कष्ट भोगते हैं जब वो नही समझते कि हम सब एक ही परिवार का हिस्सा हैं...''

(१९९१, ईस्टर पूजा, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया)

वो वास्तव में दूसरे सहजयोगियों के साथ मित्रता बाँटते हैं :

''... मुझे नहीं पता कैसे, ये एकदम से उनके जीवन में आ गया है कि

वो वास्तव में दूसरे सहजयोगियों के बारे में लिखता है। वो हर एक के बारे में पूछेगा, वे कैसे हैं? उनकी क्या समस्यायें हैं। जब तक यह घटित नहीं होता, सहजयोग में विवाह का कोई मतलब नहीं है। बिल्कुल, कोई मतलब नहीं है...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

आप कितना ज़्यादा बाँटने में सक्षम रहे हैं :

''... तो, पहली परिक्षा एक सहजयोगी विवाह की ये है कि आप इस विवाह से कितना ज़्यादा बाँटने में सक्षम रहे हैं, दूसरे लोगों के साथ...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

III. एक परिवार का निर्माण

''...मुझे पूरा विश्वास है कि आप सब बहुत, बहुत अच्छे परिवार बना सकते हैं, जो कि आज कल उपलब्ध नहीं है। आप परिवार में लोगों को खुश नहीं देखते...''

(२०००, दुल्हनों से बातचीत, दिल्ली)

''...ये आप लोगों को दिखाना है कि आप बहुत संतुलित और अच्छे परिवार से हैं...''

(१९८८, औरतों की भूमिका, यू.के.)

संतान घर का, परिवार का सार होते है :

''... जैसा कि हम कह सकते हैं कि हमारा एक परिवार है, पति, पत्नी और बच्चा। अब बच्चा पति और पत्नी का सार होता है। वो परिवार का, घर का सार होता है। पूरी चीज़ उसके लिये स्थिर होती है, उसी के लिये बनाई गयी होती है। जब तक उन्हें संतान नहीं था तब तक उस घर का कोई अर्थ नहीं था, उनके जीवन का कोई अर्थ नहीं था। पर जब उन्हें संतान की प्राप्ति हुई उन्हे एक अर्थ मिला। उसी प्रकार से क्राइस्ट सार हैं, वे स्वयं तत्व हैं। वे

ॐकार हैं जैसा कि वे कहते हैं...''

(१९७८, पब्लिक प्रोग्राम, आज्ञा चक्र, लंदन)

इन्सान की सबसे बड़ी समस्या जो मैंने पायी वो थी पारिवारिक जीवन :

''... और फिर ये कार्यप्रणाली शुरू हुई और मैंने पाया कि इन्सानों की सबसे बड़ी मुख्य समस्या थी-पारिवारिक जीवन। और इसलिये मैंने विवाह किया, मैं पारिवारिक जीवन की समस्याओं को पढ़ना चाहती थी। और फिर मैंने इन परेशानियों का ऐसे सामना किया जैसे ये मेरे खुद के हो और समझना शुरू किया कि लोग इस तरह से और उस तरह से व्यवहार क्यों करते हैं। परंतु इस संयोजन को करना है, बिल्कुल आप ही के द्वारा, परंतु अधिक दैवीय शक्ति के द्वारा और यदि मैं आपकी समस्यायें जान सकूंगी तो मैं उन पर कार्य कर पाऊँगी...''

(१९८०, सहस्रार पूजा, लंदन)

ये विनाश के मार्गों में से एक है, परिवार की बर्बादी :

''... आप ऐसे समय में पैदा हुये हैं जहाँ आपको मानवता को बचाना है। केवल कुण्डलिनी का जागरण आपकी मदद नहीं करेगा, क्योंकि आप शायद बच जायें, परंतु आपको तो पूरे समाज को बचाना है, पूरे परिवार को, सबको। मुझे कहना चाहिये कि यदि लोगों का विनाश हो गया तो इस पूरे ब्रह्माण्ड का, पूरे निर्माण का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा। अब ये विनाश के मार्गों में से एक है, परिवार की बर्बादी। बच्चे पागल हो जाते हैं, पति पागल हो जाते हैं और वो सब अंत में अनाथालय पहुँचते हैं, ऐसा ही मैंने देखा है, अपनी वृद्धावस्था में ज़्यादातर अनाथालय में होते हैं। उनकी परवाह करने वाला कोई नहीं है। इसलिये ये प्रश्न है देने का, और देने का और देने का...''

(१९८१, नाभि चक्र, तीसरा सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी)

विवाह संकल्प

ये संकल्प विवाह समारोह के दौरान श्रीमाताजी के साथ लिये गये थे

वर इस प्रकार वधु से कहता है :

पहला फेरा

मैं अपने हृदय में श्रीआदिशक्ति माताजी का स्मरण करता हूँ और तुम्हें बतलाता हूँ कि तुम्हें अपनी पवित्रता को कायम रखना चाहिये जो कि अच्छे मूलाधार के लिये आवश्यक है। हमारी परोपकारिता और पवित्रता इसी में है कि हम अबोधिता को पूरी तरह से स्वीकारें और उसका पूरा सम्मान करें और धूर्तता का परित्याग करें।

दूसरा फेरा

मैं अपने हृदय में श्रीआदिशक्ति माताजी का स्मरण करता हूँ और तुम्हें बतलाता हूँ कि हमारे दैनिक जीवन में वैवाहिक जीवन का दैवीय सौंदर्य प्रदर्शित होना चाहिये। हमारा घर सौंदर्य शास्त्र के अनुसार सजा होना चाहिये। जिस प्रकार ग्रह और तारे अपनी ग्रहपथ की सीमाओं में निश्चित दूरी पर घूम रहे हैं, हमें भी अपना कार्य पूरी निष्ठा से धर्म का पालन करते हुए करना चाहिये।

मैं सहजयोगियों का पूरा आतिथ्य सत्कार दूँगा और धर्म के प्रति अपना कर्तव्य निभाने में तुम्हें पूरी तरह से साथ दूँगा। सामूहिकता का आनन्द उठाने का आशीर्वाद हम दोनों को प्राप्त हो।

तीसरा फेरा

मैं अपने हृदय में श्रीआदिशक्ति माताजी का स्मरण करता हूँ और तुम्हे बतलाता हूँ कि मैं पूरा धन तुम्हें सौंप दूँगा जो मैं तुम्हारे लिये कमाता हूँ, पूरी तरह से समझते हुये कि ये मुझे तुम्हारे पुण्यों के फल के रूप में प्राप्त हुआ है। तुम्हे भी उस पैसे को सोच-समझ कर खर्च करना चाहिये आरै मुझसे विचार-विमर्श करने के बाद ही खर्च करना चाहिये, अपने दिमाग में इस बात को रखते हुये कि पूरा धन ईश्वर का है। जो भी हो, हमें अपना धन इसी भावना के साथ खर्च करना चाहिये कि हमें ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। भौतिक वस्तुओं की तीव्र इच्छा नहीं होनी चाहिये और पूरी तरह से पृथक होते हुए हमें अपने महालक्ष्मी तत्त्व को बढ़ाना चाहिये।

चौथा फेरा

मैं अपने हृदय में श्रीआदिशक्ति माताजी का स्मरण करता हूँ और तुम्हें बतलाता हूँ कि मैं तुम्हारी भावनाओं को कभी ठेस नहीं पहुचाऊंगा और हमारे बीते जीवन काल में हमसे जो भी गलतियाँ हुई है उन्हे भुला दूँगा। मेरा प्रेम तुम्हारे लिये असीम रहेगा और वैसा ही तुम्हारा भी होना चाहिये।

कृपया कभी भी अपनी भावनाओं को दबाओ नहीं और कभी भी मुझे बताने में हिचकिचाओ नहीं यदि किसी कारण वश तुम्हें मानसिक वेदना हो या कोई तुम्हें परेशान कर रहा हो। मैं हमेशा तुम्हारे साथ खड़ा रहूँगा, तुम्हारी रक्षा करूँगा और कभी भी तुम्हारे विरुद्ध कोई भी गलत शिकायत नहीं सुनुँगा।

अब वधु वर से कहती है :

पाँचवा फेरा

मैं अपने हृदय में श्रीआदिशक्ति माताजी का स्मरण करती हूँ और आपको बतलाती हूँ कि मैं आपके जीवन में दैवीय मिठास ले कर आऊँगी। मैं आपके लिये स्वादिष्ट भोजन पकाऊँगी जिसका आप आनन्द ले सकें। हमें सिर्फ सहजयोगियों द्वारा पकाया हुआ भोजन खाना चाहिये। कृपया मुझ पर जोर न डालें मिलने के लिये या ऐसे लोगों की संगत में रहने के लिये, जो अच्छे सहजयोगी नहीं है।

हमें कभी भी अपने बीच गन्दी और भ्रष्ट भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिये और कभी एक दूसरे पर चिल्लाना नहीं चाहिये। आपको शान्ति से मुझे सुनना चाहिये और मैं भी आपको शान्ति से सुनुंगी।

छठा फेरा

मैं अपने हृदय में श्रीआदिशक्ति माताजी का स्मरण करती हूँ और आपको बतलाती हूँ कि हमें नियमित ध्यान करना चाहिये और अपने बच्चों को भी सिखाना चाहिये और अपने मित्रों को भी सिखाना चाहिये कि ध्यान कैसे करें।

हमारा जीवन तपस्या समान होना चाहिये परंतु हमें शिकायत नहीं करनी चाहिये या अनावश्यक दूसरों को इसके बारे में नहीं बताना चाहिये और हर परिस्थिति में खुश रहना चाहिये। आपकी आँखें शुद्ध होनी चाहिये और स्त्री संभोग की इच्छा से मुक्त होनी चाहिये और किसी भी वस्तु की लालसा के रहित होनी चाहिये।

साँतवा फेरा

मैं अपने हृदय में श्रीआदिशक्ति माताजी का स्मरण करती हूँ और आपको बतलाती हूँ कि हमें सच्चाई से समझना चाहिये कि परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मलादेवी ने अपने उत्तम आशीर्वाद हमें प्रदान किये हैं। इसलिये हमें पूरी तरह से आत्मसमर्पण करना चाहिये और अपने हृदयों को उन्हे समर्पित करना चाहिये। यह समर्पण शरीर, मन और बुद्धि के सम्पूर्ण संगम के द्वारा होना चाहिये।

हमें ये ज्ञात होना चाहिये कि आत्मसाक्षात्कार कितना भव्य और अद्वितीय है और बाकी सब चीज़ें हमारे जीवन में महत्त्वहीन और निरर्थक हैं। यह मेरी शर्त है कि, हमें हमेशा बहने वाली ईश्वर की इस कृपा का दिन-रात निरंतर आनन्द लेना चाहिये। खुद को उन्हें (श्रीमाताजी) समर्पित करना चाहिये, निरमित सभी विधिओं के साथ उनकी पूजा करनी चाहिये और उनकी (श्रीमाताजी की उपस्थिति में बहुत ही नम्र होना चाहिये। अगर आप इन सब में मुझे असफ़ल होते हुये देखें तो कृपया मुझे सुधारें।

वर और वधु साथ मिल कर कहते हैं :

मैं मोक्ष का द्वार खोल दूँगा (या दूँगी) जो मुझे परम पूज्य श्रीमाताजी की कृपा से और आशीर्वाद के साथ मिला है-दूसरों के लिये भी और एक महान और साक्षात्कारी व्यक्ति की संगती में इस पूरे ब्रह्माण्ड की कुशलता को प्राप्त करूँगा (या करूँगी)।

एक रथ के दो पहिये

श्रीमाताजी ने बहुधा स्त्रियों और पुरुषों के विभिन्न विशेषताओं को विस्तार से बताया है। हर एक विवाह के अन्दर इन एक दूसरे के पूरक गुणों को मिला कर एक सुंदर मेल निर्माण होता है। जैसा कि कई बार कहा गया है, स्त्री और पुरुष बराबर है, पर अलग है। वे रथ के दो पहियों के समान हैं जो आकार में समान हैं, परंतु एक दाईं तरफ है तो दूसरा बाईं तरफ। उसमें, पति को मस्तक और पत्नी को हृदय कहा गया है।

सहजयोग की कई खूबियों में से एक खूबी ये है कि इन विभिन्न कर्तव्यों और गुणों को पहचाना गया है, उनका सम्मान किया गया है और उसका आनन्द लिया गया है।

एक रथ के दो पहिये

उन्हें और अधिक स्त्रियों की भाँति और पुरुषों को मर्दों की भाँति होना होगा:

''... हम स्त्रियों को और अधिक स्त्रियों की तरह होना चाहिये। उन्हें और अधिक स्त्रियों की भाँति और पुरुषों को मर्दों की तरह होना होगा। जैसा कि मैंने अभी आपसे कहा कि आपको पुरुष का अनुसरण करना होगा, वो करना ही होगा। यह सभ्य दिखता है, आप देखिये, एक पुरुष के लिये जो आपके आगे हो और स्त्री पीछे हो, वह शक्ति है। वह अपने पति के पीछे चलने वाली शक्ति है और उसे आगे चलने की और दिखावा करने की और उससे बहस करने की और उसे नीचा दिखाने की और उसका हाथ वैसे रखने की और वो सब करने की जरूरत नहीं है। ऐसा नहीं करना चाहिये। मत कीजिये, यह शोभनीय नहीं है। इस प्रकार का बर्ताव बहुत ही अशिष्ट है...।''

(१९८०, विवाह और सामूहिकता, यू.के)

स्त्री और पुरुष की दो भूमिकायें फूल और उसकी खुशबू के समान है :

''... और ये कि, 'मेरी पत्नी ऐसा कहती है' - ये बहुत ही गलत विचार है। मेरा मतलब है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं कि यदि पत्नी कहेगी कि दक्षिण की ओर जाओ तो वे दक्षिण की ओर जाएंगे। अगर वो कहेंगी उत्तर की तरफ जाओ तो वे उत्तर की ओर जाएंगे। मेरा मतलब है कि ऐसा नहीं होना चाहिये। ये शोभा नहीं देता।

एक पुरुष को पुरुष की भाँति व्यवहार करना चाहिये और उन्हें पुरुष ही रहने दें और आपको स्त्रियों की भाँति रहना है। आपको पता है स्त्री होना कितना महान है। एक स्त्री होना बहुत महान है क्योंकि स्त्री के पास ऐसी शक्तियाँ होती हैं। पुरुषों के साथ बराबरी करके हमने वास्तव में खुद को पूरी तरह से खत्म कर लिया है। तो स्त्री और पुरुष की दो भूमिकायें, मैं कहूँगी, एक फूल और दूसरी उसकी खुशबू की तरह है। कौन ऊँचा है? फूल या उसकी

खुशबू? अगर फूल नहीं है तो उसकी खुशबू भी नहीं होगी। लेकिन बिना खुशबू के एक फूल का क्या महत्व है? या उसकी क्या सुंदरता है? ये एक दूसरे से इतने अभिन्न हैं, खुशबू, उसकी सुंदरता और फूल। इसी प्रकार से फूल दर्शाता है, परंतु सुंदरता कौन है? और खुशबू कौन है? वो पत्नी है। ये इस प्रकार से होना चाहिये। तभी लोग आपकी और आपके पति का सम्मान करेंगे। और ये बहुत ही आसान होने वाला है। और इस प्रकार से ये बहुत आसानी से काम करता है। अगर ये विपरीत दिशा में होगा तो ये कभी काम नहीं करेगा तो इसे इसी प्रकार से काम करने दें...''

(१९८०, विवाह और सामूहिकता, यू.के)

इसलिये आप एक स्त्री होते हुए परिवार का हृदय है और वो (पति) मस्तक (मुख्य) हैं :

''... अब, उदाहरण के लिये, एक साधारण विवाह में, एक पुरुष वो व्यक्ति होता है जो परिवार का मुखिया (मस्तक) होता है, जैसा आप कहते हैं। अब, उसे मुखिया होना ही पड़ता है, कुछ कारणों की वजह से उसे मुखिया होना पड़ता है। पुरुष का मुखिया होना कुछ भी गलत नहीं है, ये ठीक है-आप हृदय बन जाईये। हृदय मस्तक से ज़्यादा महत्वपूर्ण है। शायद हम ये नहीं समझते कि हृदय कितना जरूरी है। आप देखिये, यदि मस्तक काम करना बंद भी कर दें तो भी हृदय चलता रहता है। हम तब तक चल सकते हैं जब तक हमारा हृदय चल रहा है। परंतु यदि हृदय थम जाए तो मस्तक भी थम जाता है।

इसलिये आप एक स्त्री होते हुए हृदय हैं और वो (पति) मस्तक हैं। उनमें ऐसी भावना रहने दीजिये कि वो मस्तक (मुख्य) हैं; ये केवल एक भावना है, केवल भावना। जैसे कि मस्तक को लगता है कि वही सारे निर्णय लेता है। परन्तु वो दिमाग है, जो ये भी जानता है कि उसे हृदय का भी ख्याल रखना होता है। वह हृदय है जो सर्वव्यापी है, जो सभी चीज़ों का वास्तविक स्रोत है।

इसलिये एक स्त्री का स्थान, अगर वो समझे कि कितना महत्वपूर्ण है, तो वो अपने आप को कभी भी नीचा या शोषित नहीं महसूस करेगी यदि वह जानती है कि वो हृदय है। मैं सोचती हूँ कि इसी मुद्दे को लोगों ने, महिलाओं

ने, खास कर पश्चिम में, खो दिया है और भूला दिया है और कभी महसूस नहीं किया है। अगर वे इस चीज़ को समझती तो वहाँ बहुत कम समस्यायें होती...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के)

''...**हृदय शक्ति है :** हृदय दूसरी सभी चीज़ों से शक्तिशाली है। वह हृदय है, जिसके पास मस्तिष्क को ढ़कने और शान्त करने की शक्ति होती है। मस्तिष्क एक सिरदर्द है, आप जानते हैं, ये काम करता है और पागलों की तरह काम करता है। परंतु, वो हृदय है, जो वास्तव में पूरे शरीर को अपने प्रेम से ढ़क सकता है और उसे शांत कर सकता है और उसे आनन्द दे सकता है। वो हृदय जिसके अन्दर आत्मा होती है। इसलिये यह बहुत महत्वपूर्ण चीज़ है, जो कि शक्ति है...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के)

एक रथ के दायें और बायें हिस्से को अपने केन्द्र पर होना चाहिये :

''... तो वो अच्छे से अपना खाना खाएगा, फिर जा कर अपने हाथ धोएगा और बैलगाडी में जाएगा, कार में नहीं, जहाँ हमेशा रास्ता जाम होता है। ठीक है, अब बैलगाड़ी समाप्त हो गयी है। हाथ-पंखे समाप्त हो गये हैं, आपको बहुत तेज़ होना होगा क्योंकि जिंदगी बहुत तेज़ हो गई है। इस तेज़ चीज़ में जैसा कि मैंने आपको बताया है कि पहिये के घेरे पर गति होती है, परन्तु उसकी धुरी पर नहीं। इसलिये सहजयोगियों को भी धूरी पर होना चाहिये और पति-पत्नी को जो कि एक रथ का दायाँ और बायाँ हिस्सा है, उन्हें धुरी पर होना चाहिये। और बायाँ, बायाँ है और दायाँ, दायाँ...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

एक ज़्यादा स्त्री और एक ज़्यादा पुरुष बनें और फिर आप इसका मज़ा देखेंगे :

''... मान लीजिये कि आप एक दफ्तर में काम करते हैं जहाँ पति कोई बड़े अफ़सर हैं और आप क्लार्क हैं, तो क्या आप पति को सुधारेंगे? ऐसे मामले में पत्नी को संस्था की देखभाल करनी चाहिये, अपने पति की हृदय से

प्रेम के साथ देखभाल करनी चाहिये, दिमाग से नहीं।

मैं सोचती हूँ कि मेरा स्त्री के रूप में जन्म लेना बहुत बड़ी बात है क्योंकि मैं हृदय का, भावनाओं का आनन्द ले सकती हूँ। मेरे प्रेम की भावनायें, मेरे प्रेम का कार्य और उसकी लीला। यह बहुत बड़ी बात है कि कोई अवतरण इतना आनन्द नहीं ले सकता जितना मैं ले सकती हूँ। इसलिये स्त्रियों को खुद को तुच्छ नहीं समझना चाहिये अगर उन्हें हृदय की देखभाल करनी पड़े, बल्कि उनका स्थान बहुत ऊँचा है एक तरह बहुत ऊँची छवि है। आप बिना विचार किये काम कर सकते हैं परन्तु आप बिना हृदय के काम नही कर सकते।

इसलिये औरतों को अपने पतियों के साथ बहस नहीं करनी चाहिये अगर वे लीड़र हैं। और वैसे भी किसी को बहस नहीं करनी चाहिये। क्योंकि मैंने देखा है कि यदि औरतें बहुत ज़्यादा बहस करने वाली होती है तो पति बहरे बन जाते हैं। वो बस सुनते ही नहीं कि औरते क्या बातें कर रही हैं। अब यदि वे बहुत ज़्यादा चिल्लाती हैं तो आदमी बिल्कुल चुप हो जाते हैं। इसलिये सम्बन्ध में एक दूसरे के साथ सामान्य रूप से व्यवहार करना चाहिये कि आप एक पुरुष हैं और आप एक स्त्री हैं। आपको एक ज़्यादा स्त्री और एक ज़्यादा पुरुष बनना चाहिये और फिर आप इसका मज़ा देखेंगे। कल्पना कीजिये कि यदि इस संसार में केवल स्त्री या केवल पुरुष होते तो क्या होता...''

(१९८६, सहस्रार पूजा, एल्प मोट, इटली)

एक अच्छे पारिवारिक सम्बन्ध को बनाये रखने के लिये दोनो ही जिम्मेदार है :

''... स्त्री धर्म जैसी कोई चीज़ होती है, जैसे पति-धर्म होता है, माता-धर्म, पिता-धर्म। हर चीज़ में धर्म है।* वो पुरुष जो अपनी स्त्रियों को सताते हैं, उनका हृदय बहुत खराब होता है। उसी तरह से जो अपने पत्नियों के हाथ के कठपुतली होते हैं उनका दायाँ हृदय बहुत खराब होता है।

आपको संतुलन में रहना चाहिये। आप पति हैं और वो आपकी पत्नी है और दोनों एक अच्छे पारिवारिक सम्बन्ध को बनाये रखने के लिये जिम्मेदार

हैं। ये एकतरफा नहीं है। ये केवल पति का या पत्नी का काम नहीं है, बल्कि दोनों का है। उन्हें इस प्रकार से होना चाहिये कि वो अपने पुरुष और स्त्री के स्वभाव के अनुसार कार्य करें, एक-दूसरे का आदर करें, एक-दूसरे से प्रेम करें, एक-दूसरे के साथ सबकुछ बाँटे और इस तरह से रहे कि लोग उन्हे एक रथ के दो पहियों की तरह देखें, एक बायीं ओर और दूसरा दायीं ओर। इसमें कोई असन्तुलन न हो। दोनों बराबर हैं पर एक जैसे नहीं है जैसा कि मैंने आपको कई बार बताया है...''

*धर्म का अर्थ होता है सदाचार, न्याय परायणता और कर्तव्य। पति धर्म - एक पति का, माता धर्म-एक माता का, पिता धर्म-एक पिता का।

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

पति को अपने पत्नी की रक्षा करनी ही चाहिये, उसे प्रेम देना चाहिये, उसे वो हर सुरक्षा देनी चाहिये जिसकी उसे ज़रूरत है। और पत्नी को अपने पति की देखभाल करनी चाहिये और उसे वो पूरा प्यार और लगाव देना चाहिये जो भी उसके पास है :

''... इन विवाहों के द्वारा हम एक बहुत ही खुशहाल और आनन्दमय वैवाहिक जीवन प्राप्त करना चाहते हैं। हमें जानना चाहिये कि विवाह में किसी को किसी पर हावी नहीं होना चाहिये। ये गलत विचार है। यदि हमारे पास रथ के दो पहिये हैं, एक बड़ा है और एक छोटा तो रथ कभी भी आगे नहीं बढ़ेगा, बस गोल-गोल घूमता रहेगा। दोनों एक समान हैं, एक आकार के हैं, परंतु एक जैसे नहीं है। जो दायाँ है वो बाँया नहीं हो सकता और जो बायाँ है वो दायाँ नहीं हो सकता। सहजयोग में एक पुरुष को पुरुष की तरह और स्त्री को स्त्री की तरह होना चाहिये। वे एक ही लिंग के लोग नहीं हो सकते। ये बहुत जरूरी है। पति को अपने पत्नी की रक्षा करनी ही चाहिये। उसे प्रेम देना चाहिये, उसे वो हर सुरक्षा देनी चाहिये जिसकी उसे ज़रूरत है। आरै पत्नी को अपने पति की देखभाल करनी चाहिये और वो पूरा प्यार और लगाव देना चाहिये जो भी उसके पास है...''

(१९९३, दूल्हों को सलाह, गणपतीपुले)

पत्नी की भूमिका

श्रीमाताजी ने बहुधा पत्नी के गुणों की पृथ्वी माता के गुणों से तुलना की है। वह पालन-पोषण करती है, सुंदरता प्रदान करती है और उसका सृजन करती है। उसे पत्नी भी कहा जाता है, जो शक्ति है या परिवार की ताकत है, जो कि एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। एक पत्नी की शक्तियाँ ज़्यादातर बायें भाग की होती हैं; वह प्रेम, क्षमा, कोमलता, उदारता, शान्ति, सुरक्षा और समझ दर्शाती है।

यदि वह स्वीकार कर ले कि ये उसकी वास्तविक शक्तियाँ हैं, तो वह परिवार और समाज में आनन्द और समृद्धि का स्रोत है।

अपने इन गुणों के द्वारा वो अपने पति की शोभा बढ़ाती है और उसे (पति को) धर्म-परायण और अपनी भूमिका को अपनाने के काबिल बनाती है। श्रीमाताजी ने एक बार कहा था, 'मुझे गर्व है कि मेरे पति एक धर्म का पालन करने वाले पुरुष हैं। यह सबसे बड़ा अलंकार और अभिमान है जो एक स्त्री के पास हो सकता है।'

एक महत्वपूर्ण भूमिका

I. शक्ति

वे परिवार की शक्ति है :

''... यदि एक स्त्री अपने स्त्री होने के दायित्व को समझे और उसकी परिपक्वता को समझे, क्योंकि वो शक्ति है, वो अपने परिवार की शक्ति है, अपने पति के साथ-साथ अपने बच्चों की प्रबल शक्ति है, परंतु यदि वे व्याकुल होती है तो पति भी व्याकुल होते हैं और बच्चे भी व्याकुल होते हैं...।''

(१९८१, नाभि चक्र, तिसरा सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी)

आप जो भी करेंगी वो पूरे परिवार में और पूरे सहजयोग प्रणाली में प्रतिबिंबित होगा :

''... आपके अन्दर इतनी सारी शक्तियाँ हैं, जो वैवाहिक जीवन में लायी गयी हैं और आप अब तक कुमारी थी। अब आपको विवाह के दूसरे जीवन में प्रवेश करना है। और ये आप सब पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि आप देखें कि आप अपने विवाह को सफल बनायें और आपको देखना होगा कि आप इस प्रकार से व्यवहार करें कि आप एक उचित मातृत्व का अपने अन्दर निर्माण कर सकें और ऐसा अनुशासन बनायें जो आप चाहें कि आपके पति और बच्चे धारण करें। आप ने अपनी माँ को देखा है, आपकी माँ (श्रीमाताजी) ९-१० घंटें से बैठी हुई है, कभी-कभी एक ही जगह पर, इस जगह से बाहर भी नहीं निकल रही है। पर मैंने देखा है कि लोग दो घंटे तक भी एक जगह पर नहीं बैठ सकते, यदि वो ध्यान में हो तो भी। और वे खड़े होंगे, दूसरे लोगों को परेशान करेंगे और बैठ जायेंगे। यह दर्शाता है, कि हम में अनुशासन की कमी है। हमारे माता-पिता ने हमें अनुशासित नहीं किया। हमने खुद को अनुशासित नहीं किया। तो पहली चीज़ ये है कि आपके स्वभाव में पूर्ण रूप से अनुशासन होना ही चाहिये और यह एक चिन्ह है कि आप वो लोग हैं जो पृथ्वी माता का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनके पास एक

विशेष प्रकार की बुद्धि है और एक विशेष ताकत है इस बुद्धि को व्यक्त करने की।

इसलिये आप लोगों को अत्यन्त सावधान रहना होगा कि आप जो भी करेंगी वो पूरे परिवार में और पूरे सहजयोग प्रणाली में प्रतिबिंबित होगा। अब जब आपका विवाह आपके पति के साथ हो जाता है तो समझने का प्रयत्न करें कि आप पृथ्वी माता हैं और आपको देना है और क्योंकि आप के पास शक्ति है आप दे सकती हैं। क्योंकि आप के अन्दर इतनी सारी शक्तियाँ हैं तो आप को देना ही है। इसका मतलब है कि आप में एक ऐसी विशिष्टता है कि आप दूसरों को दे सकती हैं। ताकि आपका अहंकार बार-बार बीच में खड़ा न हो और कहे, 'मुझे ही क्यों करना चाहिये ? मैं ही क्यों ?' और तब आप इस मातृत्व का आनन्द लेना शुरू करेंगी।

इसलिये अच्छी माँ, अच्छी पत्नी और एक जिम्मेदार सहजयोगी बनने का प्रयत्न करें। जो विवाह के बाद अपने पति को सहजयोग से विचलित करती हैं वो वास्तव में सबसे ज़्यादा शापित है। आपकी वाणी में दूसरों के लिये मिठास होनी चाहिये, आपको बात करते वक्त सावधान रहना चाहिये। आपको जिम्मेदार होना चाहिये, आप विशेष लोग हैं, कि आपका विवाह सहजयोग में हुआ है। मैं आशा करती हूँ कि आप इस बात को ध्यान में रखेंगे...''

(१९८४, दुल्हनों को सलाह, भारत)

मैं अपने वैवाहिक जीवन को अत्यन्त आनन्दमयी बनाऊंगी :

''... परंतु सर्वप्रथम अभिलाषा और विचार ये ही होना चाहिये कि मैं अपने वैवाहिक जीवन को अत्यन्त आनन्दमयी बनाऊँगी। क्योंकि यदि वैवाहिक जीवन सुखी होगा तो आप भी सुखी रहेंगे...''

(१९९३, दुल्हनों को सलाह, गणपति पूले)

II. गृहलक्ष्मी-गृहिणी

परिवार में एक उदाहरण :

''... इसलिये एक गृहलक्ष्मी वो है, जो एक शिष्ट स्त्री है, अपने परिवार

में एक उदाहरण है। जैसे कि एक गृहलक्ष्मी जो खुद शराबी है, दस बार विवाह करती है। उसके बच्चों का क्या हो? विचार कीजिये, एक ऐसी औरत, जिसे अपनी पवित्रता, अपने सौभाग्य, परिवार की सुरक्षा का कोई ज्ञान नहीं है, वो कैसे बात कर सकती है? वो कौन है? इससे क्या फ़र्क पड़ता है? मेरा मतलब है कि कोई दूसरा एक गृहलक्ष्मी को क्या आराम दे सकता है? वो ही एक है जो सबको आराम पहुँचाती है; आप उसे क्या आराम दे सकते हैं? उसके (गृहलक्ष्मी) लिये सबसे बड़ा आराम यही है कि आप ठीक से खाना खायें, ठीक से सोयें, आपकी सेहत ठीक रहे; यही सबसे बड़ा आराम है। तो ये हर एक को पता होना चाहिये कि गृहलक्ष्मी, परिवार में एक औरत होती है। वो गृहलक्ष्मी है। परंतु पुरुष को भी एक भेड़िया नहीं होना चाहिये और एक गृहलक्ष्मी भी एक भेड़िये से शादी नहीं कर सकती। ये आपको समझना ज़रूरी है। यदि पुरुष एक भेडिया है, तो वह एक गृहलक्ष्मी पाने के लायक नहीं है, पर उसे एक मादा-भेड़िया पत्नी के रूप में मिल सकती है, ये एक अच्छा विचार है। इसके बाद वो लड़-झगड़ सकते हैं, हर तरह के तलाक ले सकते हैं। मैं ऐसा ज़रूर कहूँगी कि अच्छे शुरूआत की ज़िम्मेदारी गृहलक्ष्मी पर होती है। अपने कर्तव्यों में संतुलन रखना, ये काम परिवार के दूसरे लोगों का नहीं है। ये वो (गृहलक्ष्मी) है, जो रखती है...... वह किसी भी कीमत पर हार नहीं मानती...... बिल्कुल, यदि वो (पति) भेड़िया है तो वो जंगल में जा सकता है। उसे (पत्नी को) कोई परवाह नहीं है...''

(१९८२, दिवाली पूजा, लंदन)

घर के अन्दर वो एक स्त्री है और बाहर स्वामिनी :

''... परन्तु, महाराष्ट्र में मुख्य चीज़ गृहलक्ष्मी है, जो महत्वपूर्ण है, बहुत महत्वपूर्ण है।

इसलिये, घर के अन्दर वो स्त्री है और बाहर स्वामिनी है। वो जो भी कहे, जहाँ भी जायें। परन्तु जब ये विपरीत दिशा में होता है तो सबकुछ उलटा हो जाता है। ये कभी भी आनन्ददायी नहीं हो सकता। परन्तु इसका मतलब ये नहीं है कि औरतों को बाहर भी रहना चाहिये और अन्दर भी। मेरा मतलब है कि औरतों को अपने पति के ऑफिस के काम में दखलअंदाज़ी नहीं करनी

चाहिये। दूसरी बाकि औरतों की तरह प्रभुत्व नहीं जमाना चाहिये जैसा शियांग काई-शेक की पत्नी और बाकि दूसरे लोगों ने किया। ये ज़रुरी नहीं है। उसे (औरत) एक सहारा बनना चाहिये, लेकिन घर में उसका सम्मान होना चाहिये। उसका घर में सम्मान होना ही चाहिये, नहीं तो घर में मंगल नहीं हो सकता; वहाँ शान्ति नहीं हो सकती और शान्ति गृहलक्ष्मी की देन है। अब कुछ लोग कह सकते हैं, 'अरे, सब ठीक है। उनका समय अच्छा नहीं है। पत्नी बुरी है, पर उसके पास पैसा है।' धन लक्ष्मी नहीं है। इस भ्रम को आप को अपने दिमाग से पूरी तरह से निकालना होगा...''

(१९८१, दिवाली पूजा, यू.के.)

आप को अपना हृदय, अपना घर हमेशा खुला रखना चाहिये :

''... तो, आपको ये भी समझना जरूरी है कि अब आपको अपने पति के जीवन शैली को अपनाना है। उन्हें अतिथी का सत्कार करना पसन्द है, तो उसका ध्यान रखिये। स्त्रियों को भी अतिथी का सत्कार करना चाहिये, उन्हें ध्यान रखना चाहिये। यदि कोई उनके साथ रूकने के लिये या रहने के लिये आ जाये तो उन्हे बुरा नहीं मानना चाहिये। उन्हे दिखावा नहीं करना चाहिये। बल्कि उन्हे खुश होना चाहिये कि वे एक सहजयोगी की देखभाल कर पाने में सक्षम है। इसलिये सहजयोगियों के लिये, आप को अपना हृदय हमेशा खुला रखना चाहिये, अपना घर खुला रखना चाहिये...''

(१९९३, दुल्हनों को सलाह, गणपति पुले)

ये मैं आपको क्यों बता रही हूँ? मैं इस गृहलक्ष्मी चक्र से गुजर चुकी हूँ :

''... तो मैं आपको यही बताना चाहती हूँ कि आपको एक बहुत अच्छी गृहलक्ष्मी, एक बहुत अच्छी गृहिणी बनना चाहिये। अब मैं आपको ये क्यूँ बता रही हूँ क्योंकि मैं गृहलक्ष्मी चक्र के तकलीफ से गुज़र चुकी हूँ और सभी डॉक्टरों ने मुझसे यही कहा है कि ऐसा इसलिये है क्योंकि सामूहिक गृहलक्ष्मी ठीक नहीं है, क्योंकि वे अच्छी गृहिणी नहीं है...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसंध्या पर, कबेला)

यह इस प्रकार की रीति है कि पत्नी माँ बन जाती है और यहाँ तक कि पति के भाई भी ज़्यादा तर उसकी पत्नी के साथ होते हैं, जो उनकी भाभी होती है। तो वे अपनी सारी समस्यायें जा कर भाभी को बताते हैं क्योंकि वे सीधे अपने बड़े भाई का सामना नहीं कर सकते। इसलिये वो जा कर भाभी से बताते हैं। तब भाभी अपनी चतुराई से अपने पति को बताती है और उनसे आज्ञा ले लेती है। यह सम्बन्ध स्थापित होना चाहिये जब आपका विवाह हो जाये। जब आपकी शादी होती है और मान लो आपको एक ननंद है, जो आपसे छोटी है, जिसकी शादी नहीं हुई है और वो प्यार और बाकी चीज़ों के बारे में नहीं जानती। यदि उसे कोई परेशानी है, जैसे उसकी शादी होने जा रही है या कुछ भी, तो वो अपनी माँ से सलाह नहीं लेगी, वो मेरे पास सलाह लेने नहीं आयेगी, पर वो अपनी भाभी से सलाह लेगी। ये एक बहुत ही मीठा सम्बन्ध है, जो देवर और भाभी के बीच में होता है और हर समय वे मज़ाक करते हैं और हँसते हैं और वो एक होते हैं...''

(१९८०, विवाह और सामूहिकता, यू.के.)

दान और उदारता

I. प्रेम देना और सभ्य रहना

एक पत्नी की मिठास, जो दूसरों को प्रेम और शान्ति प्रदान करेगी :

''... सबसे पहला गुण जो आप लोगों में होना बहुत ज़रूरी है,वो है उदारता। आपको कोई भी अपनी चीज़ किसी को देने में बुरा नहीं लगना चाहिये, यदि उन्हें ज़रूरत हो। अब आप अपनी उदारता का आनन्द उठायेंगे और उसमें आपको उदार होना चाहिये, जब आप दूसरों को क्षमा करें। क्षमा करना सबसे महत्वपूर्ण है और तब आप अपने वैवाहिक जीवन के प्रहार को कभी महसूस नहीं करेंगे। क्षमा करें। आप को स्वयं को भी क्षमा करना होगा। दोषी मत मानिये, किसी भी चीज़ के लिये अपने आप को बिल्कुल दोषी मत मानिये, क्योंकि आखिरकार आप लोग सहजयोगी हैं और अगर आपने कुछ गलत किया है तो ठीक है, कोई बात नहीं। परंतु आप में मिठास होनी चाहिये, एक पत्नी की मिठास, जो दूसरों को प्रेम और शान्ति प्रदान करेगी।

आपको किसी प्रकार का अधिकार जमाने वाला व्यक्तित्व या आक्रमक व्यक्ति नहीं होना चाहिये। बिल्कुल नहीं। इसके विपरीत आप एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो बहुत सारी चीज़ों को सह सकते हैं और हर निरर्थक चीज़ें जिसे देखते हैं, उसका मज़ाक बनाते हैं। कोई भी चीज़ इतनी गम्भीर नहीं है, जिसके लिये झगड़ा किया जाये, पर उन सब चीज़ों से मज़ा लेना और दूसरों को मज़ा देना। ऐसा ही आपको बनना है, हमेशा मुस्कुराते रहना और खुश रहना। आपको आश्चर्य होगा, आप अपने विवाह को इतना खुशहाल बना सकते हैं, अपने पति के लिये और सभी सहजयोगियों के लिये। इसलिये मुझे पूरा विश्वास है, कि यदि आपका विवाह सफल और सुखद होगा तो आपके बहुत ही अच्छे बच्चे होंगे, जो जन्मत: आत्मसाक्षात्कारी होंगे। इसलिये आपको एक अच्छी माँ बनना चाहिये। माँ जो अपने बच्चों का भला करें और दूसरे बच्चों का भी। भविष्य में ये सब आपके लिये संचित है।

मुझे पता है आप अपने भविष्य जीवन का भरपूर आनन्द लेंगे और इसे

इतना सुन्दर बनायेंगे कि हर एक को कहना चाहिये कि, 'इन सहजयोगिनियों को देखिये, उन्होंने अपना जीवन कितना खुशहाल बनाया है!' ये बहुत, बहुत जरूरी है कि हमें दूसरों की गलतियों पर ध्यान देने के बजाय खुद की गलतियों पर ध्यान देना चाहिये और उसे सुधारना चाहिये। देखिये, वे खुद की देखभाल करने में सक्षम है। सिर्फ आपको उनका ध्यान रखना चाहिये और आपको हर प्रकार से बहुत विनम्र और दयालु होना चाहिये। मुझे विश्वास है कि आप सभी बहुत, बहुत अच्छा परिवार बना सकती हैं, जो आज कल देखने को नहीं मिलता। आप ऐसे लोग देखते ही नहीं जो अपने परिवार में खुश हों।

इसलिये अपने पति के बारे में कोई शिकायत नहीं और किसी दूसरे की अपने पति से शिकायत नही, परन्तु आप अपने आप को इतना मृदुल बनाईये कि हर कोई आप से मार्ग-निर्देशन चाहे, आपका प्रेम पायें और वो सब आपके पास आयेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि आप ये कर सकते हैं। ऐसी कई सहजयोगिनियाँ हैं जिन्होंने ऐसा मान मुझे दिया है और इतना अच्छा काम किया है। मैं आपसे भी वही उम्मीद रखती हूँ...''

(२०००, दुल्हनों से बातचीत, दिल्ली)

ये आपकी शक्ति है कि आप प्रेम दे सकते हैं और प्रेम दे कर आप पायेंगे कि आपने खुद को समृद्ध बना लिया है :

''... आप कितने झगड़े निर्माण करते हैं, आप ऐसे झगड़ालू हो सकते हैं जब कि आपको शान्ति स्थापित करना है? मान लीजिये हम दो शान्ति स्थापकों को किसी देश में शान्ति बनाने के लिये भेजते हैं और वो दोनों एक-दूसरे का गला काट देते हैं? आप ऐसी चीज़ को क्या कहेंगे? आप वो लोग हैं जिन्हे सब चीज़ों को शान्त करना है। आप ही वो हैं जिन्हे प्रेम के ऐसे भाव को लाना है, ऐसी मिठास भरी चीज़ें लानी है कि पूरा परिवार आप में समा जाये आप में संतुष्ट हो जाये। क्योंकि आप माँ हैं। परिवार को आप में सुरक्षित महसूस करना चाहिये और यही आप के प्रेम की शक्ति है। ये आप की शक्ति है कि आप प्रेम दे सकते हैं और आप पायेंगे कि प्रेम देने से आप हमेशा खुद को धनवान बनाते हैं।

(१९८८, श्रीफातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

प्रेम ही आपके और उनके (पति के) बीच का आधार है :

''... अब पुरुषों की आदत होती है, कि वो कभी-कभी क्रोधित हो जाते हैं। कोई बात नहीं, ये उनकी आदत होती है। लेकिन आपको तुरन्त उसी प्रकार से क्रोधित नहीं होना चाहिये। बल्कि आप थोड़े अपने तरीके से, अपने मुस्कुराहट के मीठे प्रयोग से या हँसी में उड़ा कर या थोड़ा अच्छा बन कर उसे नियन्त्रित कर सकती हैं। परन्तु उसे गम्भीर मत बनाइये। ये बहुत ज़रूरी है।

तो पुरुषों को कैसे सम्भाला जाये? खास तौर से आपके पतियों को। ये एक कला है और इस कला को आप धीरे-धीरे सीखेंगे, जब आप देखना शुरू करेंगे। परन्तु यदि आप पुरुषों में गलतियाँ ढूँढ़ने लगेंगी और कहने लगेंगी, 'आप ये नहीं कर सकते, आप वो नहीं कर सकते। आप गाड़ी चलाना नहीं जानते या आप ये करना नहीं जानते।' ये सब चीज़ें। तो आप गये। आपको कहना चाहिये, 'आप सबसे अच्छे वाहन चालक हैं। आप सबसे अच्छे हैं।' इसी तरह से आपको उनसे व्यवहार करना होगा। परन्तु इसका ये मतलब नहीं है कि ऐसा कह कर आप उन्हे मूर्ख बना रही हैं। आप ऐसा इसलिये कहती हैं क्योंकि आप उनसे प्यार करती हैं। और प्रेम ही आपके और उनके बीच का आधार है और कुछ नहीं। पैसा नहीं, न ही आप उनके लिये जो उपहार लाती हैं या वो आपके लिये जो लाते हैं। वो सब कुछ नहीं।

ये सब चीज़ें भौतिक नहीं होती। प्रेम एक ऐसी चीज़ है जिसे आप किसी वस्तु के द्वारा भी दर्शा सकते हैं, कभी-कभी, कोई अच्छा सा उपहार दे कर, या अच्छा भोजन बना कर या कोई वस्तु दे कर। अच्छा भोजन बना कर या कोई वस्तु दे कर। परन्तु सबसे ज़रूरी चीज़ है आपका हृदय। आप को धोखा नहीं करना चाहिये और आपको ऐसा कोई काम करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये जो पवित्र न हो...''

(१९९३, दुल्हनों को सलाह, गणपतिपुले)

''...**आपको प्रेम करना होगा,** आपको अपने पति को हृदय में बसाना होगा। ये आपका कर्तव्य है, नहीं तो और आप क्या कर रहे हो?...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

वो पूरे परिवार को एक बहुत सुन्दर बगीचे के रूप में परिवर्तित कर सकती है :

''... तो, आपका तरीका बहुत ही सभ्य होना चाहिये, आपको चिल्लाना नहीं चाहिये, आपको क्रोधित नहीं होना चाहिये। आपको किसी से दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिये। मुझे तुरन्त पता चल जायेगा कौन निर्दयता से आतिथ्य-सत्कार करने वाली है। लोग मुझे बताते हैं कि, 'माँ, वो एक बहुत अजीब औरत है। उसे पता नहीं कि किस प्रकार से व्यवहार किया जाता है।' तो मैं ये सुनना नहीं चाहती। मैं ये सुनना चाहती हूँ कि आप का स्वभाव बहुत मधुर है। आप अच्छी पत्नी हैं, जो अपने पति की अच्छी तरह से देखभाल करती हैं, जो सहजयोगियों के परिवार का ख्याल रखती हैं। ये आपका काम है। इसमें अपने आप को नीचा या कम समझने की ज़रूरत नहीं है। आपको सहजयोग में ये ही करना है। इसलिये आप इतने महत्वपूर्ण हैं। आप नहीं जानते, एक औरत की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण है, इतनी महत्वपूर्ण है कि वो पूरे परिवार को एक बहुत सुन्दर बगीचे के रूप में परिवर्तित कर सकती है। यह उसकी अपनी मिठास है, उसका अपना प्रेम का सृजन दिमाग है, जो ऐसे कार्य कर सकता है। आपको अपने अन्दर इस प्रेम की कला को ढूँढना चाहिये और जो भी दु:खी है या जो अशान्त है उनकी परेशानी दूर करनी चाहिये। आप ये कर सकती हैं। आपको पता होना चाहिये कि उस व्यक्ति को शान्त कैसे करना चाहिये और उसे कैसे प्रभावित करना चाहिये...''

(२०००, दुल्हनों से बातचीत, दिल्ली)

उसने (पुरुष) विवाह क्यों किया है? खुशी के लिये, आनन्द के लिये, मिठास के लिये, एक घर के लिये :

''... पुरुष नहीं चाहता कि उसकी पत्नी घोड़े पर बैठे और चाबुक चलाये। उसने विवाह क्यों किया है? खुशी के लिये, आनन्द के लिये, मिठास के लिये, एक घर के लिये। ये बहुत ज़रूरी चीज़ है जिस पर मैं बात करना चाहती थीं क्योंकि बहुत सारी औरतें ऐसा सोचती हैं कि वो कोई बहुत महान चीज़ हैं। उनमें से किसी के पास थोड़ा पैसा है, किसी के पास कोई नौकरी है, परन्तु उनका पहला काम है समाज को बहुत खुश रखना और

अपने पति को खुश रखना। ये उनका पहला काम है। यदि कोई स्त्री अपने पति को खुश नहीं रख सकती तो हमारे किसी काम की नहीं है। वो एक अच्छी सहजयोगिनी नहीं है।

ये एक जगह है, जैसे कोई आदमी जो ऑफिस में काम कर रहा है, तो उसे अपने बॉस को खुश रखना ही पड़ता है। यदि वो अपने बॉस को खुश नहीं रख सकता तो उसका कोई उपयोग नहीं है, उसे नौकरी से बाहर निकाल दिया जाता है। इसी प्रकार से एक औरत को अपने पति के बारे में बहुत उदार भाव से सोचना चाहिये। क्योंकि यही उसका काम है। इसलिये उसका विवाह हुआ है। या तो फिर उसे विवाह नहीं करना चाहिये। वो जो चाहे वो कर सकती है। किसी को विश्वास दिलाना बहुत मुश्किल चीज़ है क्योंकि आप देखिये पुरूष दायीं ओर झुके होते हैं। वे क्रोधित स्वभाव के होते हैं। परन्तु मैंने आपको अभी बताया है कि आपको उनके क्रोध को कैसे नियन्त्रित करना है...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

ये कुछ खास है सीखने के लिये, ताकि सारे मतभेद मिट जायें :

''... तो ये वो चीज़ है। चीज़ों को करने का एक तरीका होता है। आपको वो सीखना होगा और उसमें श्रेष्ठता हासिल करनी होगी, जिससे आप बिना किसी को नुकसान पहुँचाये अच्छी चीज़ें कर सकते हैं, बिना किसी से कुछ कठोर शब्द कहे, बिना किसी से रूक्ष व्यवहार किये। अब यही व्यवस्था है, जो आपको देखनी है। ये कुछ खास है, जो आपको सीखना ही है, तो सारे मतभेद मिट जायेंगे। ठीक है?...''

(२००१, दुल्हनों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

II. सुरक्षा और शान्ति देना

वो जो सुरक्षा का, शान्ति का और स्वागत का बोध देती है :

''... अभी हमारे साथ एक बहुत अजीब किस्सा हुआ। हमारे पास जर्मनी से एक औरत आयी हुई थी और हमने उससे कहा कि, 'ये अच्छा है

कि लड़कियों को लड़कों के खाने तक इन्तजार करना चाहिये और उन पर ध्यान देना चाहिये। और उसके बाद लड़कियाँ अपना भोजन ग्रहण कर सकती हैं। ये बेहतर है।' और उसे ये बहुत अपमानित महसूस हुआ।

जब कि भारत में ऐसा शुरू से होता आया है, शुरू से कि स्त्री हमेशा अपने पति के भोजन समाप्त होने तक रूकेगी, क्योंकि ऐसा करने से वो उसकी तरफ पूरा ध्यान दे सकती है। मेरा मतलब है कि ये एक विशेष अधिकार है। ये बड़ी सिद्धता की बात है कि आप अपने पति का ध्यान रख सकती है; आप अपने बच्चों का ध्यान रख सकती हैं। ये आपका काम है, आप इसके लिये जिम्मेदार हैं। आप घर की स्त्री हैं। आपको ऐसा करना ही चाहिये। जैसा कि हेमा ने मुझे बताया कि, यहाँ कोई भी आपको खाने के लिये या किसी और चीज़ के लिये नहीं पूछता। जिसे जो चाहिये वो खा रहा है। वे जाते हैं और अपनी इच्छानुसार किसी भी वक्त खाते हैं। वे किसी भी समय खाते हैं और वो खाते ही जाते हैं, खाते ही जाते हैं। कोई भी नहीं पूछता कि, 'आप आईये और खाना खाईये' या कुछ भी। पर ऐसा भारत में होता है। तो फिर उसने कहा कि, 'मैंने एक दिन तक इन्तजार किया। किसी ने मुझ से कुछ नहीं पूछा। फिर मैंने कहा कि, अच्छा है कि खुद ही अपने लिये कुछ ले लेना चाहिये।'

इसलिये औरतों को ये अपने ऊपर जिम्मेदारी लेनी चाहिये कि उन्हें लोगों को आमंत्रित करना चाहिये और उनके लिये खास व्यंजन बनाने चाहिये। देखिये, ये एक स्त्री का काम है। उसमें ये गुण आने ही चाहिये, पुरुषों को पहले खिलाना, जब वे घर वापस आयें तो उनका ख्याल रखना, ये सब स्त्री गुण है। उसे चेहरे नहीं बनाने चाहिये और ऐसा दिखावा नहीं करना चाहिये कि, 'ये मेरा अपना घर है। और किसी को इस घर में नहीं आना चाहिये।' उसे ऐसा होना चाहिये, जो पति से ज़्यादा दूसरों का स्वागत करे। उसे ऐसा होना चाहिये जिसके साथ लोग अपनापन महसूस करें; जैसे पति के भाई और बहन, सभी रिश्तेदार। उसे ऐसा बनना चाहिये, जो सुरक्षा का, शान्ति का और बार-बार स्वागत का बोध कराये। ये उसका काम है। फिर वो ऐसी बन जाती है...''

(१९८१, दिवाली पूजा, महालक्ष्मी तत्व, नाभि, यू.के.)

एक औरत की ये क्षमता है कि वो परिवार में शान्ति लायें और सबको सुख और आनन्द की अनुभूति कराये :

''... और कभी-कभी वो मेरे साथ सिर्फ़ मुझे (श्रीमाताजी) छोड़ने के लिये आते हैं। आप देखते हैं। मैं उनसे (सर सी.पी. से) कहती हूँ कि, 'आप मत आईये।' परन्तु फिर भी वो आयेंगे और मेरे पीछे पड़े रहेंगे, 'तुम्हें देर हो रही है, तुम्हें देर हो रही है।' और उसके बाद विमान तीन घण्टे लेट होगा। तो ऐसा होता है। इस जीवन में इतना मज़ा है। इसे एक सुन्दर जीवन बनाइये। लड़ाई, झगड़ा करने से, जिद्दी बनने से कोई फायदा नहीं है। ये अच्छी चीज़ें नहीं है। और ये अच्छा है अगर कोई पति कहे कि, 'ये काम करो।'

'ठीक है, मैं करूंगी।' ऐसा कहिये।

अब आप ये खुद करती हैं, आपको ऐसा कोई काम करना अच्छा लगेगा, इसमें कोई नुकसान नहीं है। या लीड़र अगर आपसे कुछ कहे तो आपको वो करना चाहिये। परन्तु यदि आप हर चीज़ में 'ना, ना' करती हैं, तो वो आप से तंग आ जाते हैं। और उसमें कोई गरिमा नहीं रहती।

इसलिये समस्या क्यों पैदा करना। अब मान लीजिये यहाँ किसी ने कोई पर्दा लगा दिया, ठीक है। मान लीजिये, मैंने कोई पर्दा लगा दिया। परन्तु मान लीजिये, मेरे पति को वो पसन्द नहीं आया। तो वो कहेंगे, 'ठीक है, कृपया इस पर्दे को हटा दीजिये।' अब एक समझदार औरत कहेगी, 'ठीक है, मैं इसे हटा दूँगी। मुझे इसे कब हटाना चाहिये?' 'कल यहाँ पर पार्टी है, तो तुम नहीं हटा सकती।' 'ठीक है।' 'कल के दूसरे दिन हम बाहर जा रहे हैं, तो तुम नहीं हटा सकती।' 'ठीक है।' 'हम ये काम तीन दिन के बाद करेंगे।' इन तीन दिनों में जो लोग पार्टी में आएंगे वे जरूर कहेंगे, 'कितना सुन्दर पर्दा है!' सभी औरते कहेंगी क्योंकि औरतों को इसके बारे में ज़्यादा पता होता है। आप देखिये, पुरुषों को ऑफिस बनाना होता है, तो वो भी आयेंगे और कहेंगे, 'कितना सुन्दर पर्दा है, कितना सुन्दर...' तब पति कहेंगे, 'बेहतर होगा कि तुम इसे ऐसे ही रखो। ये बहुत अच्छी योजना है।' वे (पति) ऐसे ही होते हैं।

तो आप समझ गये कैसे, आपको पता होना जरूरी है कि चीज़ों को कैसे सम्भालना है। एक स्त्री में यही एक सुन्दरता होती है, उसे पता होता है

कि स्थिति को कैसे सम्भालना है। यदि वो स्थिति को सम्भालना नहीं जानती तो वो पति पर चिल्लाना शुरू कर देती है, बच्चों पर चिल्लाती है और ये सब दर्शाता है कि वो सक्षम नहीं है। और एक औरत की ये क्षमता है कि वो परिवार में शान्ति लाये और सबको सुख और आनन्द की अनुभूति कराये। आप देखते हैं वो कैसी है, हम कह सकते हैं कि वो दूसरे लोगों के साथ जुड़ जाती है। वो दूसरों को कैसे सुख की अनुभूति देती है। उसका घर उसके लिये उसकी भूसम्पत्ति होती है। और आप देखते हैं कि इसमें महिलायें निपुण होती हैं। और यही आपको अपनी बेटियों को भी बनाना है।

इस प्रकार से हमें सहजयोगी महिलायें प्राप्त होंगी। अभी हमें जोन ऑफ आर्क नहीं चाहिये। पर वो होशियार, धैर्यशाली और दयालु व्यक्तित्व की होनी चाहिये...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

बायीं नाभि गति को मापने का यंत्र है और यही वो है, जो हमें शान्ति प्रदान करता है :

''... मैं कहूँगी, कि हमारे लिये मुख्य चीज़ यही है कि एक गृहिणी कितनी महत्वपूर्ण है। जब पति सुबह उठता है, तो वह समाचार पत्र पढ़ता है। पढ़ना ही चाहिये, सभी पुरुष पढ़ते हैं। ठीक है, तो जब वे समाचार पत्र पढ़ते हैं, तो उन्हें सबसे पहला झटका लगता है। इसलिये वे बहुत उदास हो जाते हैं क्योंकि समाचार पत्रों में हमेशा बुरी खबर ही होती है। अब उसके बाद, अगर वहाँ एक अच्छी पत्नी है, तो वो उसे कहेगी, 'कोई बात नहीं, ये हमारे साथ घटित नहीं हो रहा है, तो आप इतने उदास क्यों हो?' सबसे पहले आप स्थिर हो जाओ और उसके बाद ये सारा विश्व आपके साथ स्थिर हो जायेगा। उसके बाद उन्हें काम पर जाना होता है, इसलिये उनके पास समय नहीं होता, वे जल्दी अपनी पतलून में घुस जाते हैं और सीढ़ियाँ चढ़ने लगते हैं। वे कार तक बिना नाश्ता किये ही चले जाते हैं। और पत्नी उनके पीछे नाश्ता लेकर दौड़ती है। और वो किसी तरह, आपने देखा होगा, गाड़ी चलाते-चलाते नाश्ता अपने अन्दर ढ़केलते हैं। और आगे रास्ते पर जैम होता है और फिर वो उदास हो जाते हैं और हर तरह की चीज़ें कहते हैं क्योंकि उन्हें देर हो रही होती

है। दूसरे झटके की शुरूआत होती है।

अब, जब आप खाना खा रहे होते हैं, तो आपके शरीर के लाल रक्तपेशियों को उसे पचाने के लिये वहाँ तक पहुँचना पड़ता है। शक्ति वहाँ तक पहुँचनी चाहिये। परन्तु जब आप गाड़ी चलाते हुये अपना नाश्ता करते हैं, और आप साथ में उदासीन स्थिति में भी होते हैं, तो आप देखिये उस बिचारे स्प्लीन को, जिसे आपके लिये इस विशेष चीज़ का निर्माण करना होता है, जो कि लाल रक्तपेशियाँ हैं, उसे पता नहीं चलता। वो सोचता है कि उसे अभी बनाना चाहिये कि बाद में? परन्तु उसका कोई नियमित समय नहीं है, कोई उचित गति नहीं है, कोई ताल नहीं है। अब एक बार उसने इस तरह से इधर-उधर घूमना शुरू कर दिया, तो वो पागल हो जाता है, और वो बहुत पागलों की तरह आचरण करने लगता है। अब इन सब की वजह से आप ब्लड कैन्सर की बीमारी से ग्रसित योग्य हो जायेंगे। क्योंकि ये एक गतिमापक यंत्र है, जो आपको शान्ति प्रदान करता है, क्योंकि यह सर्वव्यापि ताल के सम्पूर्ण क्रम पर काम करता है। इसलिये बायीं नाभि इस अँगुली से पकड़ती है। परन्तु जब ये इस बाँयी आज्ञा से जुड़ जाती है या बायें स्वाधिष्ठान से जुड़ जाती है, दोनों से या किसी एक से, तो आपको ब्लड कैन्सर होने का खतरा हो जाता है। और आपके अन्दर कैन्सर का समावेश ब्लड कैन्सर के रूप में हो जाता है।

अब, जो मातायें बहुत उत्तेजित स्वभाव की होती हैं, बहुत व्याकुल रहती है, ये करो, वो करो, अपने बच्चों के साथ भी हर समय बहुत उत्तेजित रहना चाहती है, वे अपनी गर्भावस्था में बच्चों को ब्लड कैन्सर दे सकती हैं जो अभी पैदा भी नहीं हुये। अब भारत में शायद लोगों को इसकी अनुभूति बहुत पहले हो गयी थी, इसलिये वहाँ ऐसी पद्धति है, कि मान लो, यदि आपका आफिस सुबह दस बजे है, तो पत्नी चार बजे उठ जाएगी, वो सारा भोजन बनाएगी और सब काम करेगी। पति आराम से उठेंगे और आप देखिये हमारे यहाँ अखबार नहीं होते; हालांकि आज कल हमारे यहाँ भी इसका आक्रमण हो रहा है, परन्तु भगवान की दया से हमारे अखबार इतने बुरे नहीं होते। हमारे यहाँ गंदी औरतों की तसवीरें और दूसरी गंदी चीज़ें नहीं होती। हमारे यहाँ सब कुछ सेन्सोर होता है। तो इसके बाद वो सुबह खाना बनाती है और उसके साथ एक पंखा ले कर बैठती है और वो (पती) जब खाता है तो

उसे पंखे से हवा देती है। तो आप देखिये, कि पंखा ताल देता है। पंखा, पंखा...''

(१९८६, बेल्जियम और होलैण्ड की भूमिका, बेल्जियम)

''...तो वह पति को धीरे-धीरे पंखा करती है और उसे अच्छी चीज़ें बताती हैं।

आप देखिये, आज आपको पता है क्यों, कैसे मेरा बेटा उठ गया और उसने कहा, 'मैं अपने पिता से बहुत प्रेम करता हूँ।'

उसने कहा, 'सच?'

'हाँ, हाँ, उसने कहा, उसने ऐसा कहा.....'

और पति को मालूम है, कि वो झूठ भी बोल रही है, परन्तु आप देखिये, सब अच्छी चीज़ें...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

''...शान्त करने का प्रयास करें। आप देखिये, यही उसका काम है ना कि दूसरों की आलोचना करना। पूर्ण रूप से एक स्त्री को कभी भी दायीं ओर का नहीं होना चाहिये, क्योंकि बहुत सारी ऐसी परेशानियाँ हैं जिसमें वो पड़ जायेंगी। मैंने सहजयोग में ऐसी चीज़ों को घटित होते हुये देखा है। एक लड़की थी, जो बहुत रजोगुणी थी और वो उसका पति बहुत महत्वपूर्ण बन गये। तो मैंने उससे कहा, 'बेहतर होगा कि तुम ठीक हो जाओ।' तो उसने ठीक होने का प्रयत्न किया और उसे एक बच्चा हुआ। परन्तु बच्चे का जन्म एक राक्षस के समान हुआ। रजोगुणी महिलाओं को गर्भपात भी हो सकता है। सबसे पहले तो वे गर्भधारण ही नहीं कर पायेंगी। अगर उन्होंने गर्भधारण कर भी लिया तो उनका गर्भपात हो जायेगा। अब अगर उनका गर्भपात नहीं हुआ और फिर भी उनके बच्चे हुये तो रजोगुणी महिलाओं के बच्चे ऐसे होंगे जो राक्षसी प्रवृत्ती के होंगे। वे बिगड़े हुये बच्चे होंगे, दूसरे बच्चों पर शासन करेंगे...''

(१९८७, समालोचना, अहंकार, रजोगुणी खतरे, फ्रान्स)

इसलिये आपको शान्त, स्थिर और एकत्रित होना चाहिये। एकसाथ

एकत्रित। और तब आप देखेंगे कि कैसे सभी गण (श्रीगणेश की शक्ति) आपके साथ हैं। और कुछ समय बाद आपके पति हर मार्ग पर आपके पीछे चलेंगे, पैसे के मामले में, और हर चीज़ में...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

इसकी शुरूआत एक स्त्री से होनी चाहिये, पुरुष से नहीं :

''... इसके बदले में, यदि स्त्री इसके सार को जानती है, मधुरता को, उसे पता होना चाहिये कि पति को कैसे खुश करना है, कैसे परिवार में शान्ति लानी है। अब कुछ पति शराबी होते हैं या और कुछ - सहजयोग में नहीं। किन चीज़ों से पति को आनन्द मिलता है? आप देखिये, एक तरह से ये एक खेल है। ये एक साक्षात्कारी आत्मा का खेल है, दूसरों को कैसे आनन्द दें। हम अपने पतियों के साथ क्या करते हैं? क्या हम उन्हे आनन्द देने का प्रयास करते हैं? सबसे पहले पता कीजिये कि उन्हें क्या पसन्द है। मेरे पति, मैं कहूँगी-अब ये दूर हो गयी है, भगवान का शुक्र है-वे कहा करते थे, 'तुम्हे अपने सिर पे कोई फूल नहीं लगाना चाहिये।' लेकिन महाराष्ट्र में सभी विवाहित महिलायें अपने सर पर फूल लगाती हैं। उस दिन से मैंने अपने सिर पे कोई फूल नहीं लगाया। ठीक है, कोई बात नहीं, उन्हे पता नहीं था कि मैं कौन हूँ? तो उन्होंने कहा, 'कोई भी फूल बिल्कुल मत लगाओ।' फिर उन्होंने कहा, 'मुझे चुड़ियाँ ज़रूर पहननी चाहिये, क्योंकि वे एक बहुत ही साम्प्रदायिक परिवार से हैं। अपने पूरे जीवन में मैंने चूड़ियाँ पहनी हैं। इससे उन्हें खुशी मिलती है, तो इसमें क्या परेशानी है? छोटी-छोटी चीज़ें जो आप करती हैं सिर्फ उन्हे खुशी देने के लिये, तो वो भी सोचने लगते हैं कि मुझे अपनी पत्नी के लिये क्या करना चाहिये। लेकिन पहले इसकी शुरुआत स्त्री से होनी चाहिये, पुरुष से नहीं, क्योंकि स्त्रियाँ समाज के लिये ज़िम्मेदार होती है...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

यदि आप पुरुषों के बारे में कुछ चीज़ें समझती हैं, तो इसका उपयोग हो सकता है :

''... मैं आपको बताती हूँ, पुरुष बहुत ही सरल होते हैं, परन्तु आपको

समझना होगा। कभी-कभी वे क्रोधित हो जाते हैं, कोई बात नहीं। असल में, अगर वो किसी और पर क्रोधित हैं तो वे आ कर सब आप पर निकाल देते हैं। ये बेहतर है क्योंकि अगर वो ऐसा किसी दूसरे के साथ करेंगे तो मार खायेंगे। आप उन्हें नहीं मारेंगे। अगर आप पुरुषों के बारे में कुछ चीज़ें समझ जाती हैं, तो इसका उपयोग हो सकता है...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

III. पोषण और उदारता

जैसे पृथ्वी माता वृक्ष का पोषण करती है :

''... और लोग एक प्रकार के ऐसे मध्य मार्ग में आ जायेंगे, जो प्रगति और पारिवारिक जीवन के भावनिक समझ के बीच है। परन्तु इसके लिये परिवार की औरतों को समझना होगा, परिपक्व होना होगा और अपने पतियों को बेकार की चीज़ों के लिये परेशान नहीं करना होगा। और उन्हे अपने पतियों को प्रोत्साहन देना चाहिये और उनका पोषण करना चाहिये। जैसे पृथ्वी माता वृक्ष का पोषण करती है। मुझे पूरा विश्वास है, कि इस प्रकार के सोच के साथ इन दो देशों के बीच शान्ति, न्याय और सम्पन्नता जरूर स्थापित होगी...''

(१९८६, बेल्जियम और हॉलैण्ड की भूमिका, बेल्जियम)

उसे अपने परिवार में ईश्वर की सुन्दरता स्थापित करनी है :

''... हालांकि कुछ भारतीय नारियाँ भी भयानक होती हैं। और जब वो परदेश आती हैं, तो पाश्चात्य हो जाती है और पाश्चात्य जीवन में रंग जाते हैं, जो भयानक भी हो सकता है। परन्तु भारत में एक स्त्री का व्यवहार भिन्न होता है, उसे परिवार में धर्म की स्थापना करनी होती है। उसे अपने परिवार में ईश्वर की सुन्दरता की स्थापना करनी होती है। उसे अपने बच्चों को सारे अच्छे मूल्य देने होते हैं। उसे विनम्र होना होता है। उसे अपनी आवाज़ ऊँची नहीं करनी होती। यदि वो अपनी आवाज़ ऊँची करती है, बच्चों पर चिल्लाती है, तो वो बच्चों को बिगाड़ती है। ऐसा करके वो बच्चों को भी आवाज़ ऊँची

करना सिखाती है। उसे एक प्रकार से अपने पति की बात माननी होती है, उसकी आज्ञा का पालन करना होता है, ताकि बच्चे भी उसकी बात मानें। ऐसा होता है। वहाँ का समाज यहाँ के समाज से बेहतर होता है...''

(१९८८, महिलाओं की भूमिका, यू.के.)

सब प्रकार से पोषण दें :

''... यदि आपको पता है कि मैं क्या हूँ? यदि आपको पता है कि मैं क्या कह रही हूँ और यदि आप को जो करना चाहिये, उसका अनुसरण करें तो आप उसी समय देखेंगे कि माँ हमारी जड़ों को मज़बूत करने का प्रयत्न कर रही हैं। क्योंकि आप वृक्ष की जड़ें हैं। आप को सम्पूर्ण पोषण देना है। आपका अन्य सहजयोगियों के प्रति माँ स्वरूप, बहन स्वरूप होना है। झगड़ा नहीं करना है, लड़ाई नहीं करनी और कटु बातें नहीं कहनी हैं। वह स्त्री का कार्य नहीं है। तर्क नहीं करना पर मौन रह कर देखना है। यहाँ तक कि यदि वे कुछ चक्रों पर पकड़ रहे हैं, आप उन्हें पत्नी के रूप में अच्छी प्रकार स्वच्छ कर सकती हैं। आप इसे गोपनीय तरीके से कार्यान्वित कर सकती हैं। आप कर सकती हैं। क्योंकि समस्या चाहे बहुत भयानक विनाशकारी और धक्का देने वाली लगती हो, उनकी चाबी घर की स्त्री के हाथों में होती है। यदि वे अपना गौरव और मूल्य समझें तो वे समस्या को दूर कर सकती हैं और स्वयं को सस्ता नहीं बनाती, साधी लोकप्रियता के पीछे नहीं भागती...''

(१९८८, महिलाओं की भूमिका, यू.के.)

आप को लोगों को प्रचुर मात्रा में प्रेम देना चाहिये, उसके लिये पैसा खर्चने की ज़रूरत नहीं है :

''... साधारणतया, यदि स्त्री सही ढ़ंग से पत्नी नहीं है, तो वह बहुत ही घमण्डी और अत्यन्त स्वार्थी, स्वयं में केन्द्रित हो सकती है। पुरूष भी हो सकते हैं, परन्तु स्त्रियाँ हो सकती हैं-यदि वे सही तरीके से पत्नी नहीं है। वे अपने पैसे दूसरों पर खर्च करना पसन्द नहीं करेंगी। वे नहीं चाहेंगी कि अन्य लोग उसके घर आयें और किसी चीज़ का उपयोग करें। परन्तु हमें न्यायिक दृष्टि से देखना है कि यह प्रेम में किया गया है, या नहीं? जैसे कि यदि पति

अपने मित्रों को घर लाता है और पत्नी को अच्छा नहीं लगता क्योंकि इसका अर्थ पैसा है। वे अपने लिये और आभूषण लेना पसन्द करेंगी न कि पति के मित्रों का घर आना। वे ऐसी हो सकती हैं। कुछ पुरुष भी वैसे होते हैं। परन्तु दोनों ही गलत हैं। इसे समझने के लिये हिस्सा बाँटना चाहिये।

और पूरी बात यह है कि आप को अपना प्रेम प्रचुर मात्रा में दूसरों को देना चाहिये, उसके लिये पैसे खर्चने की आवश्यकता नहीं है। ज़रूरत नहीं है। आप को उनके प्रति दयालु होना चाहिये, अच्छा होना चाहिये और थोड़ा सा पैसा भी। थोड़ा सा पैसा खर्चने में कोई हानि नहीं है, अपना प्रेम अभिव्यक्त करने के लिये...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

यदि पत्नी उदार है तो वह पुरस्कृत होती है :

''... मैंने देखा है कि सहजयोग में जो लोग उदार होते हैं, उनकी पत्नियाँ शायद नहीं होती और फिर वे बहुत तकलीफ पाती हैं, परन्तु यदि पत्नी उदार हो तो वह पुरस्कृत होती है। पूरा परिवार सौ गुना पुरस्कृत होता है। उदारता ऐसी होती है, कि एक दरवाज़ा आपका खुला होता है जिसके द्वारा सब कुछ अन्दर आता है और आप दे कर दूसरा दरवाज़ा खोलते हैं, सो, एक बड़ा अच्छा संचार होता है। मैं अपने औदार्य का बहुत आनन्द लेती हूँ और आप सब को भी औदार्य का आनन्द लेना चाहिये और उदारता इतनी पुरस्कृत करती है, इतनी पुरस्कृत कि विश्वास नहीं होता कि दिव्य शक्तियाँ उदार व्यक्ति को कैसे सहायता करती हैं...''

(१९९२, दिवाली पूजा, रूमानिया)

''...यदि आप एक भारतीय को प्रसन्न करना चाहते हैं, उन्हें कहें, 'कल मैं आकर आपके साथ खाना खाऊँगा।' उस की पत्नी उसी समय कहेंगी, 'आप बताईये, आपको क्या पसन्द है? कौन सा खाना आपको अच्छा लगता है?' अन्यथा क्या होता है, ज्यों ही आप कहते हैं, कि वह आ रहा है खाने के लिये, पत्नी कहेगी, 'नहीं, नहीं, मैं अपनी माँ के घर जा रही हूँ।' उसी समय उसका प्रोग्राम बन जाता है। मुझे समझ ही नहीं आता। उनके पास

सुन्दर घर हैं, साफ़-सुथरे, सब कुछ बहुत सुन्दर, परन्तु यदि कोई उनके घर आता है, तो उन्हें धक्का लगता है, जैसे कि उनमें विद्युत का धक्का लगा हो। सो, यह सब किस के लिये है...''

(१९९७, श्रीकृष्ण पूजा, कबेला)

'शायद वह सोचता है कि मैं आपसे ज़्यादा उदार हूँ' :

''... मैं आपको अपने जीवन का एक उदाहरण दूँगी-अनेक हैं, परन्तु एक मैं आपको दे सकती हूँ। मेरे पति के दफ़्तर से मेरे पास एक पुरूष आया और उसने कहा, 'मुझे माफ़ कर दीजिये। मैंने गलती करी, उनकी संस्था छोड़ कर दूसरी के साथ जुड़ गया था। परन्तु अब मुझे लगता है, कि मैं वहाँ खुश नहीं रह सकता और मैं वापस आना चाहता हूँ।'

सो, मेरे पति ने कहा, 'तुम्हारे लिये यहाँ कोई स्थान नहीं है। यह अनुशासन के अनुकूल नहीं है। यह ठीक नहीं है। आपने ऐसा क्यों किया? दूसरी संस्था के साथ क्यों जुड़े थे?'

उसने कहा, 'सर, मैं वापस आना चाहता हूँ, मैं आपसे निवेदन करता हूँ।' प्रतिदिन कहता था। परन्तु पुरुष एक बार जब कुछ दिमाग में ठान लेते हैं तो तत्क्षण बदलते नहीं। तब वह मेरे पास आया और बोला, 'मैं उसी संस्था में वापस आना चाहता हूँ।'

मैं अपने पति को बड़ी अच्छी तरह से जानती हूँ, तो मैंने कहा, 'ठीक है, देखते हैं।' जब मेरे पति आये, तब मैंने उनसे कहा, 'आप उसे वापस क्यों नहीं ले लेते?'

'ओह्, तो अब वह आपके पास आया है, उसे पता है कि किस उत्तम व्यक्ति के पास जाना है।'

'नहीं', मैंने कहा, 'शायद वह सोचता है कि मैं आपसे अधिक उदार हूँ।' वह बहुत बड़ी ललकार थी। 'इसलिये वह मेरे पास आया था, आपको उदार होना चाहिये।' तब उन्होंने उसे वापस ले लिया। और मैं कहूँगी कि पूरी

उम्र उस व्यक्ति ने मेरे पति की बड़ी सहायता की...''

(२००१, दुल्हनों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

IV. समझदारी और समाधान

''...परन्तु, महिलाओं को भी पता होना चाहिये कि उन्हें अन्य लोगों की उपस्थिति में, अपने पति पर आक्रमक नहीं होना चाहिये, शयनकक्षा में ठीक है। स्त्री को यह समझना चाहिये कि वह किस प्रकार का पति है। उदाहरण के लिये मैं अपने वैवाहिक जीवन के बारे में बताऊंगी। जिस दिन मेरा विवाह हुआ, उस दिन मेरे पति दफ़्तर गये, घर आ कर सायंकाल छह बजे विवाह किया और फ़िर अगले दिन दफ़्तर चले गये। तब से, कई वर्षों तक वे दफ़्तर जाते रहे। जब तक हम लन्दन आये, उन्होंने एक दिन भी छुट्टी नहीं ली। रविवार को भी नहीं। वे मेरे प्रिय पति हैं। घर पर भी, शनिवार को वे अपने साथ फाईलों का गट्ठा ले कर आते हैं और काम करते हैं। उनके अनुसार, चूंकि उन्होंने कड़ा परिश्रम किया है, उन्हें बड़ी पदवी मिली है। परन्तु मुझे पता नहीं कि इस बड़ी पदवी से मुझे क्या लाभ हुआ है, केवल निराशायें, परन्तु मैंने कभी इस विषय में शिकायत नहीं की। सारी उम्र, मैंने किसी बात की फर्माईश नहीं की। इसके विपरीत, मैंने उनके कार्य में सहायता की, जब भी इसकी आवश्यकता थी। मैंने उन्हें अपना साथ दिया और इस महीने की पच्चीस तारीख को, जिस छुट्टी को वे 'मैरिटाईम डे' कहते हैं, उस दिन मुझे करीब आठ सौ लोगों से हाथ मिलाना होगा, आठ सौ शराबी आस-पास। परन्तु वे पूर्णतया मुझ पर निर्भर करते हैं। जिस दिन मैं उन से कहूँगी कि अब मुझे संन्यास लेना होगा, मुझे अपना जन्म करना होगा, उनकी सारी बनी बनाई छवि बिखर जायेगी...''

(१९८६, बेल्जियम और हॉलैण्ड की भूमिका, बेल्जियम)

आप सहज, दयालु और विशेषतः समझदार रहें :

''... अनेक स्त्रियां मैंने देखा है, बड़ी आक्रमक हैं पतियों के प्रति, और तब पुरुष नपुंसक बन जाते हैं। यह बड़ा महत्वपूर्ण है, कि स्त्री को बात मानने वाली और विवाह के विषय में विवेकशील होना चाहिये। यदि वह अत्यन्त

आक्रमक होने का प्रयत्न करती है, तो समस्यायें होती हैं। इसलिये कृपया, यह सब करने का प्रयत्न न करें और सहज, दयालु, विशेषतया समझदार बनें...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

अपने पति को साक्षी रूप में समझने का प्रयत्न करें :

''... सर्वप्रथम, आप अच्छा खाना बनाना सीखें। पुरुष को घर में कोई भी कार्य करने की अनुमति न दें, कभी नहीं। अपने पति को घर का कार्य कभी न करने दें। वे पूर्णतया आप पर निर्भर करेंगे। सर्वोत्तम खाना बनायें। खाना बनाने में श्रेष्ठ बनें। पति घर वापस आयेगा। मैं इस व्यापार की युक्तियाँ बता रही हूँ। अपने पति को साक्षी भाव में समझने का प्रयत्न करें। कभी-कभी, वे बिना बात के क्रोधित हो जाते हैं, उसको साक्षी रूप में देखें। वह एक आपका दूसरा बच्चा है। यह बड़ी उम्र का बच्चा है और आप को बड़ी उम्र के बच्चे की देख भाल करनी है। दयालु एवं ध्यान से सुनने वाली रहें। यह हैरानगी की बात है कि अभी तक आप लोगों ने इन युक्तियों को सीखा नहीं है। शायद आपकी माताओं ने कभी बताया नहीं...''

(१९८८, महिलाओं की भूमिका, यू.के.)

उन्हें वैसा ही समझें, जैसे वे हैं :

''... यदि पति कहता है, 'मुझे यह रंग पसन्द नहीं है।' ठीक है, थोड़ी देर के लिये इसे छोड़ दें। तब कोई आ कर कहेगा, 'कितना अच्छा रंग है।'

'आह, कितना अच्छा रंग है! ओह, इसे मत बदलो।' स्त्रियों को पुरुषों को समझना चाहिये, उनकी दृष्टि विशाल होती है वे माईक्रोस्कोपी नहीं होते। वे, हर चीज़ को विशाल तरीके से देखते हैं। आज वे कुछ कहेंगे, कल उसे भूल जायेंगे। वे अत्यन्त.... इन चीज़ों से ऊपर होते हैं, आप को उन्हें उस प्रकार से समझना चाहिये, जैसे वे होते हैं...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

''...आप को उसे किसी बात के लिये कोसना नहीं चाहिये। यदि उन्हें कोई बात अच्छी नहीं लगी, तो आप उसे मत करें। छोटी-छोटी बातें जो उन्हें

पसन्द नहीं हैं, जैसे कि मेरा विवाह ऐसे परिवार में हुआ था, जिनकी संस्कृति एकदम भिन्न थी, बिल्कुल अलग। वे फूल नहीं पहनते। भारत में, दक्षिण भारत में, सब स्त्रियाँ, खास कर मेरी जाति, समुदाय में, सभी हर समय माला पहनते हैं। मेरे पति ने कहा, 'नहीं, ऐसा मत करो, क्योंकि हमारी जाति में केवल बुरी स्त्रियाँ, पुरुषों को आकर्षित करने के लिये पहनती हैं।' उस दिन से मैंने कभी नहीं पहनें। कोई फ़र्क नहीं पड़ता, इतना महत्वपूर्ण नहीं है...''

(१९९३, दुल्हनों को परामर्श, गणपतिपुले)

''**...आपको अपने पति की तुलना किसी से नहीं करनी चाहिये।** वह आपके पति हैं और आपको उनसे अत्यधिक अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये। 'उसने मुझे यह नहीं दिया। उसने मेरे लिये यह नहीं किया। वह ऐसा है।' यह आवश्यक नहीं है। आप को सदा यह सोचना चाहिये, 'मैंने उनके लिये क्या किया है?' और वह भी, 'मेरे अन्दर क्या गलत है?'...''

(१९९३, दुल्हनों को परामर्श, गणपतिपुले)

आपको केवल उनका हृदय देखना है :

''... वह यह नहीं समझते कि क्या वास्तविक है, क्या कृत्रिम है, कुछ नहीं-कोई बात नहीं। आपको केवल उनका हृदय देखना है। कैसे वे दे रहे हैं, किस प्रेम से वे दे रहे हैं। वह समझते नहीं है, वे क्या कर सकते हैं, बेचारा आदमी...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

महिलाओं की जिम्मेदारी है कि समझें, पुनः मैं कहूँगी समझे, पति को, परिवार को और जो कुछ भी आपके पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित है:

''... यदि आपके दिमाग में कुछ विचार धारा है, कुछ आदर्श की छवि, दिमाग में है, तो उसे निकाल दें। हमें वास्तविकता के साथ रहना है। हमें देखना है कि वास्तविकता क्या है? काल्पनिक विचारों को नहीं। सो, आपको धक्का नहीं लगना चाहिये और न ही पुरुष को। परन्तु यदि पुरुष को धक्का लगता है, तो समझदारी आप में होनी चाहिये। समझदारी की भावना

आप में होनी चाहिये और पुरुषों से अपेक्षा न रखें। पुरुषों को कमाने की जिम्मेदारी है। उनकी अन्य जिम्मेदारियां भी होती हैं, परन्तु स्त्रियों की जिम्मेदारी समझदारी में है, मैं पुनः कहूँगी समझें, पति को, परिवार को और जो कुछ भी आपके पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित हैं।

केवल स्त्रियों की समझदारी की भावना ही बड़े अच्छे परिवार बनाती हैं। स्त्री है जो पारिवारिक सम्बन्धी को शान्त कर सकती है, वे पति को भी समझती है और अपनी समझदारी से पति की सहायता भी करती हैं। एक बार जब पतियों के दिमाग में यह स्थापित हो जाता है कि आप समझदार हैं, सहजयोग की परवाह करती हैं, कि आप प्रतिष्ठित हैं, आप की सब समस्यायें दूर हो जायेंगी। यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि आप की जिम्मेदारी है कि आप में गहरायी की समझदारी हो। मुझे विश्वास है कि आप सब सफ़ल होंगे क्योंकि आप सहजयोगी हैं।

कभी दबाव न डालें-इसकी आवश्यकता नहीं है। परन्तु यदि आप बुद्धिमान हैं, तो आप अपने पति को शक्तियों या गलतफ़हमी का अहसास कर सकती हैं। परन्तु उसके लिये आपको स्त्री का विशेष जादू चाहिये, विशेष स्त्री की समझदारी मैं कहूँगी...''

(२००१, दुल्हनों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

अपने बच्चे के समान उनकी देखभाल करें और उनके प्रति अच्छे एवं मधुर रहें :

''... कुछ इतना कष्ट उठाने की बात नहीं है, परन्तु समझदारी की आवश्यकता है। यदि आप बुद्धिमान हैं और कुछ हो जाता है, तो आप एक विवेकशील मुद्रा, सन्तुलित मुद्रा, जिम्मेदारी की मुद्रा रखें। जहाँ तक परिवार की बात है, बच्चों की बात है पत्नी को पुरुष से कहीं अधिक जिम्मेदार होना है। परन्तु यदि आप गुस्सैल हैं, तो भगवान आपको बचायें और आपके पति को बचायें। सो, गर्म स्वभाव किसी स्त्री के अनुकूल नहीं है। यदि आप गुस्सैल हैं तो आप बड़ी जल्दी बूढ़ी लगनी शुरू हो जाएंगी और यदि आप में अहंकार है, अपने आप को बड़ा उच्च समझती हैं, तो तब भी ऐसा ही होगा। सर्वोत्तम यही है कि एक छोटी लड़की के समान व्यवहार करें, जो उसे प्रेम

करने आयी है। उसकी देखभाल करने आयी है और उसे मातृत्व दे। आपको सोचना है कि आप उसकी माँ है और वह कभी-कभी आपकी न्यायिक दृष्टि से वे मूर्खतापूर्ण होते हैं-कोई बात नहीं। सो, अपने बच्चे के समान उनकी देखभाल करें और उनके प्रति अच्छे और मधुर रहें। ठीक है...''

(२००२, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

यह बलिदान नहीं है किन्तु आनन्दमयी समझदारी है :

''... यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि आप सहजयोग में अपना रोल समझें, विवाहित स्त्री के रूप में। हमारे बीच कई अज़ीब औरतें रही हैं, जिन्होंने शादी की क्योंकि वे शादी करना चाहती थीं और उन्होंने इस बात का पूरा ख्याल रखा कि शादी सफ़ल नहीं हो। उन्होंने मेरे लिये इतनी मुसीबत खड़ी की मैं समझ नहीं पाती कि शादी के पूर्व वे यह क्यों नहीं देखती हैं कि उन्हें क्या करना है। सहजयोग में आपको एक सफ़ल विवाह बनाना है। यह साधारण विवाह नहीं है और उसके लिये यह बलिदान नहीं है, परन्तु एक आनन्दमयी समझदारी है। आपको अनेक तकलीफ़ों का सामना करना पड़ सकता है। आर्थिक रूप में हो सकता है कि कोई इतना अमीर न हो। हो सकता है, वह अमीर है, परन्तु आर्थिक रूप से आपका ध्यान नहीं रखता हो, आप को पैसा न दे रहा हो या बहुत दबाता हो-यह सम्भव हो सकता है, हर बात सम्भव हो सकती है। आप भी हो सकता है, वैसी ही हों...''

(२००१, दुल्हनों से बात, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

IV. देना आनन्ददायक है

आप अपनी नैतिकता का आनन्द लेते हैं किसी अन्य की नैतिकता का नहीं :

''... किसी भी प्रकार से वह आदर्श पति नहीं है, परन्तु मैं यह परामर्श दूँगी कि आपको आदर्श पत्नी बनना है। क्योंकि आप अपनी नैतिकता का आनन्द लेती हैं, किसी अन्य की नैतिकता का नहीं। कल्पना कीजिये, कि एक चोर है और वह कहे, 'मैं एक ईमानदार व्यक्ति के नैतिक गुणों का आनन्द

लेता हूँ, अपने नहीं।' तो कैसा होगा! सो, क्या लाभ है? और नैतिक व्यक्ति अपनी नैतिकता का आनन्द नहीं लेगा तो कौन आनन्द लेगा? क्या चोर? मेरा तात्पर्य है, कि हमें अपने नैतिक गुणों का स्वयं आनन्द लेना चाहिये। नहीं क्या? यदि एक पवित्र स्त्री है, उसे अपनी पवित्रता को समझना चाहिये और स्वयं आनन्द लेना चाहिये...''

(१९८६, बेल्जियम और हॉलैण्ड की भूमिका, बेल्जियम)

नैतिकता आपका आभूषण है, यह आपके गले का फन्दा नहीं है :

''... और दूसरी बात है-स्त्रियाँ जो पवित्र एवं अच्छी हैं-लोग इस का व्यर्थ का बखेड़ा बनाते हैं। यदि आप सोचते हैं कि आपके लिये यह कठिन है, तो बेहतर है छोड़ दो। नहीं क्या? मेरा अर्थ है कि नैतिकता तो आपका आभूषण है, यह आप के गले में पड़ा फ़न्दा नहीं है। जो लोग अपनी नैतिकता का आनन्द लेते हैं वे महान व्यक्ति हैं। वे इस से तकलीफ़ नहीं पाते, अप्रसन्न नहीं अनुभव करते, परन्तु अपनी नैतिकता पर उन्हें गर्व है। सो, यह आपके समझने के लिये है, कि जो भी आपके गुण हैं और उनके कारण लगे कि आप कष्ट पा रहे हैं, कोई बात नहीं...''

(१९८६, बेल्जियम और हॉलैण्ड की भूमिका, बेल्जियम)

वह सेवा ही आनन्द है :

''... जो लोग सोचते हैं कि उन का जीवन सेवा है, वे मूर्ख लोग हैं। उनका जीवन आनन्द पाना है, सेवा नहीं, परन्तु वह सेवा ही आनन्द है। परन्तु यदि आप केवल सेवा ही के साथ जुड़े रहते हैं, 'मैं बलिदान कर रही हूँ, यह मेरी तपस्या है', समाप्त! तब आप अन्त में दुर्बल से तपस्वी ही रह जाते हैं। आपको 'क्रौस' के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है। सहजयोग में यह आनन्द है किन्तु, यदि आप में हर चीज़ में आनन्द का सार नहीं है तो वह आनन्द नहीं हो सकता। यदि आप गन्ने में से रस निकाल दें तो क्या बचता है? इसी प्रकार जिसे सेवा (नि:स्वार्थ कार्य) और तपस्या कहा जाता है, उसमें

कोई मिठास नहीं है, तो वह समाप्त है। यह मिठास, स्त्रियों द्वारा उत्पन्न की जाती है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

देना, उसका एक ही आनन्द है :

''... वह इतनी शक्तिशाली है कि वह कुछ नहीं ले सकती, वह केवल देती है, वह देने में आनन्दित होती है। और देना ही केवल, एक उसका आनन्द है। और उस आनन्द से उसे ऊर्जा मिलती है...''

(१९८६, बेल्जियम और हॉलैण्ड की भूमिका, बेल्जियम)

परामर्श

I. सहने की शक्ति

वह सारी समस्याओं को अपने ऊपर ले लेती है क्योंकि वह सर्वाधिक मज़बूत है :

''... घर में, एक स्त्री सर्वाधिक मज़बूत केन्द्र है। भूमि माता के समान वह सारी समस्यायें अपने ऊपर ले लेती है क्योंकि वह सब से अधिक मज़बूत है। और कौन इस प्रकार का बोझ अपने ऊपर सहन कर सकता है? यह माँ है।

इसी प्रकार घर में स्त्री, एक माँ है और उसे सहन करना है। यह अच्छा है कि पति घर आकर कहता है, जो उसे कहना है और अपना सारा कचरा आप पर निकालता है, बजाय इसके कि, पति ऐसा हो जो बड़ा मीठा हो, 'हैलो, हैलो' और बाहर वह सब के ऊपर शेर के समान दहाड़ता है। पुरुष बच्चों के समान होते हैं और उन्हें केवल अपनी पत्नियों पर ही तनाव निकालना होता है और आपको वह सारा सोख लेना चाहिये। वह स्त्री का प्रतीक है। मज़बूत स्त्री ऐसी भावनाओं से सरलता से घबड़ाती नहीं है। उसे फ़र्क नहीं पड़ता है। वह कहती है, 'ठीक है, तुम छोटे बच्चे, आओ! मेरे चार बच्चे हैं अब यह पाँचवा है, जो सबसे छोटा है, आया है।' उसे चिल्लाने दो। यहाँ तक कि बच्चों के साथ भी आप को सहनशील होना पड़ता है...।''

(१९८०, बचपन पर, यू.के.)

आप में सहन करने की शक्ति होनी चाहिये, शहीदी के रूप में नहीं :

''... उदाहरण के लिये, मैं बताऊंगी कि पिछले चार सालों से सी.पी. साहब मेरे लिये 'सॉलिटेयर' हीरा खरीदने का प्रयत्न कर रहे हैं, क्योंकि मैंने अपने सारे हीरे अपनी बेटियों को दे दिये हैं। कोशिश, कोशिश, इस बार नहीं कर सकते, इस बार कार्यान्वित नहीं होगा, अगली बार, उस समय...।

क्योंकि मुझे पता था कि वे खरीदना चाहते थे, वही मेरे लिये काफ़ी है,

नहीं क्या? मैं इसे टाल रही हूँ, 'ठीक है, हम अब करेंगे, आप का अभी घर है।' इस प्रकार।

आदेश देना, 'मुझे यह दो,' इसकी आवश्यकता नहीं है। पुरुषों को यह देखना शुरू करने दें कि, 'ओह्, इसके पास नहीं है, उसके पास होना चाहिये।' यह वह है जो उन्हें करना चाहिये और स्त्रियों को कभी फ़र्माईश नहीं करनी चाहिये। यह शिष्टाचार के विरोध में है, सहज योग के अनुसार। आपको कभी माँग नहीं करनी चाहिये, आप को अधिक सहनशील होना चाहिये: आप को इसे सहने की शक्ति होनी चाहिये। बड़े बलिदान के साथ नहीं, 'ओह्, मैं सहन कर रही हूँ, इत्यादि।' परन्तु इस समझदारी के साथ कि आप बड़ी हो गयी हैं और परिपक्व हो गयी हैं...''

(१९८१, दिवाली पूजा, यू.के.)

वे स्त्रियां हैं, क्योंकि वे करुणामयी हैं और सहनशील हैं :

''... स्त्रियों को यह समझना है, कि वे स्त्रियाँ हैं क्योंकि वे करुणामयी हैं, सहनशील हैं। वे भूमि माता के समान हैं। उन लोगों का अहंकार बड़ा विकसित है, सावधान रहें। आज अमेरिका क्यों खत्म है? उनकी स्त्रियों के कारण! मैं आपको अनेक भारतीय लड़कियों का उदाहरण दे सकती हूँ जिनकी शादी यहाँ हुयी है। वे अपने पतियों को सही स्थान पर ले आयी हैं। उन्होंने सब ठीक कर दिया है। वे उन्हें धीरे-धीरे और आराम से सहजयोग में ले आयी हैं...''

(१९८८, महिलाओं की भूमिका, यू.के.)

II. पति को व्यवस्थित करना

यह स्त्री की कला है, यह स्त्री का सौंदर्य है कि वह अपने पति को कैसे व्यवस्थित करती है :

''... परन्तु उसे अपने पति को प्रसन्न भी रखना है। यदि वह उसे प्रसन्न नहीं कर पाती, यदि वह आसानी से प्रसन्न नहीं होता, फिर भी उसे ऐसा बनाना चाहिये, कि वह प्रसन्न हो। शायद सबसे कठिन पुरुष। यह स्त्री की

कला है, यह स्त्री का सौंदर्य है, कि वह अपने पति को कैसे व्यवस्थित करती है, क्योंकि वह वहाँ उस प्रकार के कार्य के लिये हैं। यदि वह इसे नही कर सकती, तब वह उस कार्य में असफ़ल हो रही है।

सो, उसे दोनों चीज़ें करनी हैं: आप को दोनों में सन्तुलन बनाना है। कभी-कभी पति चाहता है, कि उसे आप का साथ चाहिये, ठीक है उसे जितना आपका साथ चाहिये, उसे दें। परन्तु आपको यह भी जान लेना है कि जब तक आपका पति आपको अधिकार न दें, आप सबके साथ न रहे, क्योंकि पति ने आपको अधिकार दिया है, अन्य लोगों से बात करने का, यदि वह कहता है कि तुम्हें मेरे साथ होना है सारे समय, तब आप ना नहीं कह सकती हैं। उन्हें अधिकार है आपके साथ का पाना। सो, आप को समझना है और सन्तुलन बनाना है। कुछ भी अन्तिम सीमा तक न करें। हमें बड़ा साधारण होना है, यह दूसरी बात है, जो मैं आप से बताना चाहती हूँ...''

(१९८०, विवाह और सामूहिकता, यू.के.)

यदि आप उन्हें यह अहसास दिला सकें कि वे आपके लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं तो आप उन्हें अच्छी तरह व्यवस्थित कर सकती हैं :

''... सर्वप्रथम बात यह है कि हमें यह समझना है, वह ही आप का पति है और कोई आपका पति नहीं है। उनसे अधिक और कोई भी महत्वपूर्ण नहीं है। देखिये, पुरुषों को नियंत्रित करना बड़ा सरल है। आप उन्हें यह अहसास यदि दिला सकें कि वे आपके लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं तो आप उन्हें अच्छी तरह व्यवस्थित कर सकती हैं...''

(१९९३, दुल्हनों को परामर्श, गणपतिपुले)

आप सहजयोग का दूसरा भाग हैं, जो शान्ति, आनन्द, पोषण और सम्पूर्ण शान्त वातावरण देता है :

''... सो, समझने का प्रयत्न करें कि अपने पति की 'बॉस' नहीं बनें या चीज़ें सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न न करें या तनाव में कुछ न करें। मैंने देखा है कि कुछ स्त्रियां बड़ी तनाव वाली होती हैं, वे कभी आनन्द नहीं दे सकती

हैं। वे स्वयं भी आनन्द में नहीं होती हैं, वे कैसे आनन्द दे सकती हैं, वे खुद ही आनन्द में नहीं होती हैं।

सो, तनाव नहीं होना चाहिये, किसी प्रकार का। ढ़ीला छोड़ें। आप सहजयोग का दूसरा पहलु हैं जो शान्ति, आनन्द, पोषण और सम्पूर्ण शान्त वातावरण देता है। परिवार में आप ही शान्त वातावरण के लिये जिम्मेदार हैं। चाहे पति क्रोधित हो, बच्चे झगड़ रहे हों, यदि माँ शान्त हैं तो स्थिति को सम्भाल सकती है।

स्थिति को इस प्रकार नियंत्रित करना है कि आप सबका जीवन प्रसन्नमय कर देती हैं। जब मैं स्त्रियों को यह बताती हूँ, तो कभी-कभी वे बड़ी क्रोधित हो जाती हैं, कि पहले बच्चों को खाना खिलाओ, फिर पति को और तब आप स्वयं खाओ, क्योंकि वह स्त्री का काम है। जिस प्रकार पुरुष को जा कर कमाना है, जो भी करना चाहता है करें, काम आदि। परन्तु स्त्री को पति, परिवार, सब की देखभाल करनी है...''

सारे समय क्षमा करें और उन्हें यह जानने दें कि पूरे विश्व में श्री माँ के सिवा एक वही उनका है :

''... और आप पायेंगे कि हमारे हिन्दुस्तानी पति इतने अच्छे नहीं हैं बागबानी में या आप कह सकते हैं कि उन्हें कार ठीक करनी या नलीं की मरम्मत करनी आदि नहीं आती। कोई बात नहीं, इस बात को आसानी से लें। धीरे-धीरे वे सीख जायेंगे। वे सीखेंगे और करेंगे, परन्तु उनके साथ धीरज न खोयें, केवल हंस दें, वह इसे सम्भालने का सर्वोत्तम तरीका है और अत्यधिक अपेक्षा न रखें कि वे इसे बड़ी अच्छी तरह से करेंगे। कभी-कभी वे बर्तन अच्छी तरह नहीं धो सकते हैं, उन्हें यह करना नहीं आता है। सो, ठीक है, हंस कर टाल दें और आनन्द लें क्योंकि उन्हें सीखना है।

आप देखें, इंग्लैंड या अमेरिका, वहाँ नौकर नहीं होते हैं। जब कि हमारे यहाँ नौकर होते हैं। सो, ये सब लड़के, नौकरों द्वारा बिगड़ गये हैं। इसलिये इन सब कार्यों में व्यर्थ हैं। परन्तु यदि आप उन्हें सीखाने का एवं सहायता करने का प्रयत्न करें वे निश्चित ही इसे पूरी तरह करेंगे। आपको एक काम

करना है, कि उन्हें साफ़ हृदय से प्रेम करें और सारे समय क्षमा करें और उन्हें यह जानने दें कि मेरे पास पूरे विश्व में केवल श्री माँ के सिवा, वे ही हैं...''

(१९९३, दुल्हनों को परामर्श, गणपतिपुले)

III. पुरूषों को प्रभुत्व (सत्ता) दें

उन्हें यह देखना है, कि वे उस प्रभुत्व को पुरुषों को दें :

''... हम एक आदर्श जाति, आदर्श परिवार, सब कुछ आदर्श बनने वाले हैं। हम विश्व को दिखाने वाले हैं कि जो भी युक्तियाँ लोग हमारे ऊपर करने वाले हैं, हमें फ़र्क नहीं पड़ता है। हमें आगे, और आगे जाना है। श्रीगणेश के समान, कह सकते हैं। एक विशाल हाथी जिसे हर तरह की रस्सियों व चेनों से बाँधा गया हो, फिर भी आगे धक्का लगता है। इस प्रकार से हम सब सहजयोगी इसे कार्यान्वित करेंगे। परन्तु सहजयोग की स्त्रियों को इसे कार्यान्वित करना है। उन्हें यह देखना है, कि उन्हें वह सत्ता पुरुषों को देनी है। यदि मैं किसी पति को कमज़ोर पाती हूँ, तो मुझे पता है, कि पत्नी कोसने वाली है या बड़ी दबाने वाली स्त्री है या अपने आप को बड़ा ऊँचा समझती है, यदि मैं किसी पुरुष को बड़ा शक्तिशाली देखती हूँ तो मुझे पता है, कि उसके पीछे एक स्त्री है...''

(१९८८, महिलाओं की भूमिका, यू.के.)

उन्हें पीछे ही होना है क्योंकि हमें उस सब की देखभाल करनी है :

''... जिस प्रकार घर की स्त्री घर को सजाती है, सब कुछ शान्त करती है, उससे उन्हें प्रसन्नता मिलती है, वह सब की देखभाल करती है-सब को पता है कि वह वहाँ खड़ी है। कल्पना करिये कि आधुनिक ज़माने का तरीका यह होगा कि आप सब को अपने बच्चे के जन्मदिन की पार्टी में बुलाती है और आप पहले स्वयं ही केक काटती हैं क्योंकि आप घर की पत्नी हैं, तो यह कैसा लगेगा? यह उतना अज़ीब है। जिस प्रकार घर की पत्नी स्वयं को सबसे पहले सब से आगे रखती है- तो उन्हें पीछे ही होना होगा, क्योंकि हमें उनकी

देखभाल करनी है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

स्थिर होना, स्त्री का कार्य होता है और पुरुष को कार्य करना है :

''... कोई भी घर में नहीं रूकना चाहता क्योंकि दोनों के बीच में गृहलक्ष्मी तत्व नहीं है, परन्तु राग में बैठक चाहिये-स्थिरता। जब तक आप स्थिर नहीं होते आप राग का आनन्द नहीं उठा सकते हैं। कल्पना करें, कि कोई राग को सुन रहा है, जब वह उछल रहा हो। इसलिये स्थिर होना है एवं वह स्थिरता स्त्री का कार्य है, जो घर की पत्नी है और पुरुष को कार्य करना है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

उनकी उपस्थिति में अपनी अच्छी छवि जनसाधारण में बनायें :

''... पुरुष जनसाधारण की राय को बड़ा महत्व देते हैं और आप इस बात का ध्यान रखें कि आप जनसाधारण में, उनकी उपस्थिति में एक अच्छी छवि बनायें, ताकि वे आपको सराहें...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

IV. तर्क न करें

वह लड़ाई, झगड़े, अनावश्यक तर्क की निरर्थकता को देख सकती है :

''... इसलिये अब, पुरुष का मिजाज़, पत्नी ठीक रखती है और सुबह-सुबह उसके साथ परिवार की भयंकर बातों का विवेचन कर के उसे तनाव में नहीं डालती। वह बड़ा महत्वपूर्ण है अन्यथा आप एक-दूसरा अख़बार बन जायेंगी। वास्तव में वह घर में शान्ति का वातावरण बनाती है। वह कैसे करती है चीज़ें सहन कर के, भूमि माँ के समान सोख कर। वह बड़ी परिपक्व व्यक्ति है और लड़ाई, झगड़े और अनावश्यक तर्क की निरर्थकता को देख सकती है...''

(१९८६, बेल्जियम और हॉलैण्ड की भूमिका, बेल्जियम)

तर्क के बाद आप कुछ हासिल नहीं कर सकती हैं :

''... पुरुष इतने अधिक बुद्धिमान होते हैं कि उनमें साधारण बोध एवं व्यवहारिक बोध की कमी होती है। उनके पास एक ही प्रकार के वस्त्र होते हैं जिन्हें वे पहनते रहते हैं, आप कितनी बार बदल सकते हैं, पर उनके पास कोई समय नहीं होता है। वे स्थूल लोग होते हैं। साधारण बोध उनमें नहीं होता है, सो आप उनके प्रशंसासूचक हैं। वे नियमों में एवं उन्हें लागू करने में अच्छे हैं, वहाँ वे जो भी कह रहे हैं, आपको मान लेना चाहिये। यदि वे कहें, यह करो, वह करो, तो आपको स्वीकार करना चाहिये। क्योंकि वह भाग उन्हें पता है। वे उसमें जानकार हैं और आपको कभी तर्क नहीं करना चाहिये। आप तर्क से कुछ हासिल नहीं कर सकती हैं...''

(१९८८, इन्टयूशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

यदि स्त्रियाँ झगड़ालू लड़ाकू और व्यंग करती हैं तो पुरुष के लिये नर्क होता है :

''... मैं उन लोगों के साथ बात करना चाहती हूँ, जिनका विवाह सहजयोग में हुआ है, विशेष कर स्त्रियो के साथ। मैं सोचती हूँ कि उनमें से कुछ अत्यन्त दबाने वाली और मूर्ख हैं। शादी क्या है? वे कहती हैं कि शादी हनीमून है। हनी (शहद) सार है, मून (चन्द्रमा) शान्ति है। यदि स्त्रियाँ झगड़ालू, लड़ाकू, व्यंगात्मक हैं, पुरुष के लिये पूर्णतया नर्क हैं। उसके बजाये यदि स्त्री को सार पता है, शहद, उसे पता होना चाहिये कि पति को कैसे प्रसन्न करना चाहिये, परिवार में शान्ति लाना...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

V. प्रभुत्व जमाना

आप अपनी प्रतिष्ठा के अधिनस्थ हैं, अपनी पवित्रता के, अपने सम्मान के बोध के और सर्वोपरि अपनी धार्मिकता के :

''... यदि वह घोड़े पर बैठता है, तो मुझे भी घोड़े पर बैठना है और नीचे गिरना है। यदि वह स्कींग के लिये जाता है, तो मुझे भी स्कींग के लिये

जाना है। यदि वह अपनी मांसपेशिया बनाता है, तो मुझे भी मसल्ज बनानी हैं, यह उस केन्द्र तक पहुँच रहा है। मेरा तात्पर्य है, कि स्त्रियां इस पृथ्वी पर अज़ीब सी दिखाई देनी लगती हैं आप जानते नहीं हैं कि ये स्त्रियां बड़ी-बड़ी मांसपेशियों के साथ बिना मूछों के, कैसी दिखती हैं। सो, इस प्रकार के निरर्थक, मूर्खताभरे विचार हम में होते हैं, पर वे किसी के अधीनस्थ नहीं हैं। आप अपनी स्वयं की प्रतिष्ठा के अधीनस्थ हैं, अपनी पवित्रता के, अपने सम्मान के, बोध के और सर्वोपरि अपनी धार्मिकता के, क्योंकि आप उसके जिम्मेदार हैं-पुरुष को दूसरे भाग को देखना है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

''...**बाह्य प्रभुत्व के आधार पर न्यायिक न हों,** जैसे कि, वह कहता है, 'वह रंग अच्छा नहीं है।'

'ठीक है, जो आपको पसन्द है, वह मैं लगा दूंगी।'

तब वह कहता है, 'ओह्, जो तुमने लगाया था, वह अच्छा था, मैं वास्तव में मूर्ख था,' वह ऐसा कहेगा, आप केवल मान लें। मैंने अपने जीवन में इसका अनुभव किया है। मैंने किया है। उदाहरण के लिये, मेरे पति को सड़कों का अधिक पता नहीं है और यदि हम कहीं जा रहे हैं, वे कहेंगे, 'मेरे विचार से इस रास्ते से हमें जाना है।'

मैंने कहा, 'ठीक है, आप आगे बढ़ें' और मैं उनके साथ चलूंगी, परन्तु मैंने कहा, 'नहीं, मेरे विचार से यह सड़क नहीं है, मुझे आपके साथ वापिस चलना होगा, निश्चित ही, ठीक है, यदि आप चाहते हैं, मैं आपके साथ चल सकती हूँ। ठीक है, मैं चल रही हूँ। मैं मज़ा ले रही हूँ। मुझे शायद इस तरफ़ जाना पड़ेगा या उस तरफ़।' वे सोचने लगते हैं, क्या यह सच है? क्या यह ठीक है?

तब वे सोचने लगते हैं, 'क्या यह सच में या शायद...?' क्योंकि पत्नी की मूल प्रवृत्ति होती है। उसे आन्तरिक ज्ञान होता है। उसके पास अनेक चीज़ें होती हैं, उसे वह मिलती है। उसे अचानक ही एक इशारा मिल जाता है, जिसे अंग्रेजी में 'हिच' कहते हैं, (किसी ने श्रोताओं में से 'हन्च' कहा) उसे हन्च

कहते हैं। और यह वही है और एक बार पतियों को समझ आना लगता है कि पत्नी का 'हन्च' सही है, तब वे एक प्रकार से अनुसरण करते हैं। परन्तु अपने पतियों को आपका अनुसरण करवाने में कौन सी महान बात है? यह गलत है। मैं सोचती हूँ कि उसे अनुसरण की आवश्यकता नहीं है...''

(१९८०, विवाह का महत्त्व, यू.के.)

यदि भूमि माता सोचे कि ये पेड़ उसे दबा रहे हैं, तो हम क्या कह सकते हैं:

''... परन्तु स्त्रियों के लिये यह और भी खराब है, अपने अनुभव से मैंने देखा है, जब स्त्रियाँ दबाने का प्रयत्न करती हैं। वास्तव में स्त्री भूमि माता के समान है और यदि भूमि माँ सोचे कि, ये पेड़ उसे दबा रहे हैं, तो हम क्या कह सकते हैं? उसी प्रकार यदि स्त्रियाँ सोचें कि पति दबा रहे हैं, तो मैं कहूँगी कि वे बड़ी गलत हैं।

पतियों को सम्भालना बड़ा आसान है। परन्तु यदि आप बुद्धिमान नहीं हैं, मूर्ख हैं व सोचती हैं कि प्रबल बन कर, बातें कह कर-बुरी बातें कह कर आप उन्हें सम्भाल सकती हैं, तो आप ऐसा नहीं कर सकती हैं। परन्तु अपने पति को सम्भालने के लिये यह महत्वपूर्ण है कि आप दिखाये कि आप विनीत (आज्ञाकारी) हैं और इस प्रकार विनीत होना अच्छा है। पुरुष बड़े सीधे होते हैं, वे कोणीय नहीं होते। स्त्रियाँ कोणीय होती हैं क्योंकि वे एक साथ नहीं रहती हैं। पुरुष एक साथ रहते हैं इसलिये वे कोणीय नहीं होते हैं...''

(१९८७, क्रिटिसिज़्म, ईगो, राईट साइडेड डेन्जर, फ्रान्स)

ऐसा चरित्र होना चाहिये जो दिखाये कि व्यक्ति में प्रकाश है :

''... मैं यह कह रही हूँ कि आप को अपने बच्चों को बिगाड़ना नहीं चाहिये और बच्चों पर प्रभुत्व भी नहीं जमाना चाहिये, न पति पर और न परिवार पर। यह स्त्रियों के लिये बिल्कुल भी अच्छा नहीं है, यह मधुर भी नहीं है। आप ऐसे घर में नहीं जायेंगी जहाँ सब हाथ में झाड़ू ले कर खड़े हों। भाग जायेंगे, किसी को अच्छा नहीं लगता।

हमारा चित्त हमारी आत्मा पर होना चाहिये, ऊँचे स्तर पर, यह नहीं कि

आप कैसे चम्मच रखती हैं, कैसे काँटा रखती हैं, किसी ऊँचे स्तर पर ही नहीं। सारे समय चित्त आत्मा पर होना चाहिये क्योंकि हमें विकसित होना है। दूसरों के चैतन्य के प्रति न्यायिक न हों और दूसरों के प्रति कर्कश न हों। यह एक सहजयोगी को शोभा नहीं देता कि वह दूसरों के साथ कर्कशता से बात करे, शोभा नहीं देता, कमीनापन, स्वार्थ एवं कजूंसी को छोड़ो। ऐसा चरित्र होना चाहिये, जो दिखायें कि व्यक्ति में प्रकाश है। नीचता, पीठ पीछे बात करना जिसे क्राईस्ट ने 'मरमरिंग सोल' कहा है, दूसरों के मीन-मेख निकालना, वह आपके लिये एवं सहजयोग के लिये खतरा है। रोज ध्यान करें। निर्विचारिता में रहें। कोई विचार आये तो कहिये, 'क्षमा, क्षमा, क्षमा' और विकसित हो। जब तक कि आप सहजयोग में परिपक्व नहीं होते, तब तक आप परमात्मा के आशीर्वाद का आनन्द नहीं पा सकते...''

(१९८७, क्रिटिसिज़्म, ईगो, राईट साइडेड डेन्जर, फ्रान्स)

यह सब स्वार्थ, एकांतता सहजयोग के विरोध में है :

''... दूसरों पर प्रभुत्व जमा कर, दूसरों का गला घोंट कर, अपने पति को कुएँ का मेंढ़क बना कर, उसे कह कर, 'आखिर हम दोनों हैं, हमें आनन्द लेना चाहिये, आओ हम अलग घर बनायें, किसी को घर में नहीं आना चाहिये।' यहाँ तक कि एक चूहा भी उस घर में प्रवेश नहीं करेगा। यह भी कहा, 'ये मेरे बच्चे हैं, मेरा पति, मैं' यह सहजयोग में नकारात्मकता है, यह समझदारी की नकारात्मकता है। ये सब पूर्णतया निरर्थक बाते हैं। वे सहजयोगी या सहजयोगिनी के समान दिखायी भी नहीं देते। यह सब स्वार्थ, सब एकांतता, सहजयोग के विरोध में है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

आपके पास अपना धर्म है, अपना जीवन है और आपको अपने बारे में चिंता करनी चाहिये और यदि नहीं समझता है तो भूल जाओ :

''... यदि पति नर्क में जाना चाहता है, तो उसे जाने दो, आप क्यों वैसा ही करना चाहती हैं? आखिर, आपके पास अपना धर्म है, आपके पास अपना स्वयं का जीवन है, आपको केवल अपने बारे में सोचना है, यदि वह

आपको समझता नहीं है, भूल जाओ। ऐसे गैरजिम्मेदार और मूर्ख व्यक्ति पर दया करनी चाहिये परन्तु खुद उसका अनुसरण नहीं करना चाहिये क्योंकि आपकी कहीं अधिक विस्तृत जिम्मेदारी है। यह नहीं प्रयत्न करना चाहिये कि हम छोटे लगें और सारे समय पति को अपने प्रति मोह में जकड़ कर अपने जीवन को दु:खद न बनायें क्योंकि ऐसा कर के आप अपनी शक्ति को खो देंगी। परन्तु यदि आपका पति चरित्रवान है, तो आपको उसका हर प्रकार से सम्मान करना चाहिये व समर्थन करना चाहिये और जहाँ तक सम्भव हो उसे सहन करें...''

(१९९२, दिवाली पूजा, रूमानिया)

केवल आधारभूत बातों पर आप डटी रहें :

''... जब हम सोचें कि हमें अपने पति को नियंत्रित करना है, तो बेहतर है, कि आप इसे बड़ी सीधी प्रकार से करें, केवल भौतिक आधार की बातों पर आप डटी रहें। अन्यथा यदि आप छोटी-छोटी बातों पर अपने पति पर प्रभुत्व दिखाती रहें तो आप केन्द्र से हट जायेंगी। आप का विवाह मूर्खता के लिये या हनीमून के लिये हुआ है...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

भौतिक बातें निश्चित ही हैं, परन्तु आपको छोटी-छोटी बातों के लिये अपने पति पर प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये :

''... मैंने देखा है कि कुछ लड़कियाँ अपने पतियों को खूब दबा कर रखती हैं। इसकी आवश्यकता नहीं है। यदि आप अपने पति से प्रेम करती हैं, वही प्रभुत्व है, सर्वोत्तम तरीका है, पति को प्रेम करें, उसका ध्यान रखें, जो ज़रूरत है वह करें क्योंकि यह दिखावा करने में लाभ नहीं है कि आप उनसे बेहतर समाज से हैं, बेहतर संस्कृति या बेहतर परिवार से हैं। आप केवल यह दिखा सकती हैं कि आप एक अच्छा व्यक्तित्व हैं और आपकी अच्छाई उसे जीत लेंगी।

सो, यह केवल पत्नी ही है, जो शादी को बनाती है या बिगाड़ती है और मुझे आप से नि:संकोच यह कहना है कि अभी भी यदि आप को अपनी शादी में संदेह है, यदि अभी भी आप सोच रही हैं कि यह अच्छा जोड़ा नहीं है तो आप वापिस ले लें, परन्तु बाद में, अपने पति में दोष नहीं ढूँढती रहें।

देखिये, पुरुष, पुरुष हैं और स्त्रियाँ, स्त्रियाँ हैं। पुरुष स्त्री नहीं बन सकते, परन्तु आप उनकी समझ में ला सकती हैं कि स्त्रियों का सम्मान होना चाहिये, वह कैसे? वह आप के व्यवहार से देख सकते हैं, यदि आपका व्यवहार अच्छा है तो वे आपका सम्मान करेंगे, परन्तु यदि आपका व्यवहार बच्चों जैसा होगा या व्यवहार आक्रमक होगा, कोई भी पुरुष ऐसी स्त्री को नहीं सराहेगा जो आक्रमक हो, इसलिये आपको आक्रमक नहीं होना चाहिये। जो भी वह कहे, आपको मानना व सुनना चाहिये। भौतिक बातें, निश्चित ही हैं पर छोटी-छोटी बातों में आपको पति पर प्रभुत्व नहीं जमाना चाहिये। यह सहजयोगिनी का प्रतीक नहीं है। सहजयोगिनी को प्रेम व समझदारी व विवेक के साथ पति को जीतना है, न कि प्रभुत्व दिखा कर। यह बात हमें समझ लेनी चाहिये कि अनेक शादियाँ प्रभुत्व दिखाने के कारण टूट जाती हैं...''

(२००२, दुल्हनों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

पति के लिये आवश्यक नहीं है कि वह अनुसरण करें :

''... अपने पति से अनुसरण करवाने में क्या महानता है? यह गलत है। मैं सोचती हूँ कि उसे अनुसरण करने की कोई आवश्यकता नहीं है...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

''...जब आपका पति तर्क कर रहा हो तो आप केवल उसे बन्धन दें, समाप्त। सहजयोगिनी के लिये यह बड़ा सरल है। पति को बन्धन दें, कोई समस्या नहीं। प्रभुत्व जमाने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि आप गृहलक्ष्मी हैं, शक्ति है और सब देवता आप की सहायता पहले करेंगे, आपके पति की सहायता से पहले, परन्तु शर्त यह है कि प्रथम आपको गृहलक्ष्मी बनना है, आप में गृहलक्ष्मी के सब गुण होने चाहिये। यदि आप दबाने वाली स्त्री हैं, सब में दोष निकालती हैं, तो आप गृहलक्ष्मी बिल्कुल भी नहीं हैं...''

(१९८७, क्रिटिसिज़्म, ईगो, राईट साइडेड डेन्जर, फ्रान्स)

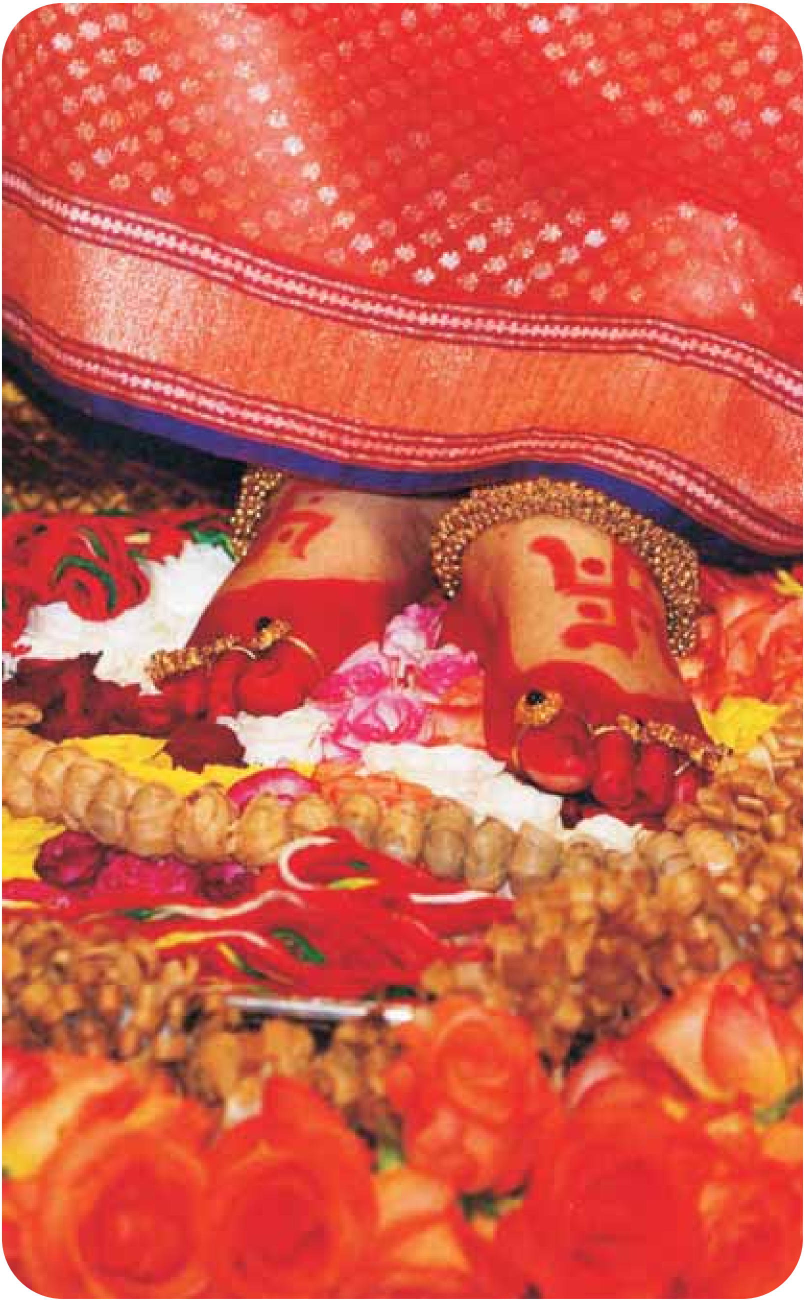

मोह, पैसा और समाज

I. समाज की परिरक्षा और सहजयोग

यह आपका कर्तव्य है कि सहजयोगियों के समाज की परिरक्षा करें :

"... आप को उसका सम्मान करना चाहिये, उसकी देखभाल करनी चाहिये और उसकी परवाह करनी चाहिये। कभी-कभी उसका सन्तुलन थोड़ा हिल सकता है। आपका अपने कोमल तरीकों से उसे वापिस सन्तुलन में लाना है। यह आपका कर्तव्य है, कि सहजयोगियों के समाज की परिरक्षा करें। लोग आपके घर आयेंगे, यदि वे सहजयोगी हैं तो आप उनकी पत्नी, बच्चों की देखभाल करें क्योंकि आप सहजयोग के समाज के जिम्मेदार हैं। आप हो सकता है बहुत कमाते हो, सब कुछ है आपके पास, परन्तु आप को हमेशा विनम्र रहना है और समझना है कि आपको अपने विवाह द्वारा सहजयोग का कार्य करना है। यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आप के लिये यह सहजयोग के समाज के लोगों एवं बच्चों की परिरक्षा है। इसलिये आपको उन सबको प्रेम करना है, आपको उनकी परवाह करनी है।

कभी नही सोचें कि यह आपका स्वयं का घर है और आप इसकी रानी हैं। परन्तु आप माँ हैं, बहन हैं, आप इन सहजयोगियों की सम्पूर्ण सम्बन्धी हैं, सो, जब वे आप के घर आते हैं तो आपको पूरा सम्मान व आदर दिखाना चाहिये।

उन सब से अपने पति की शिकायत न करें, उसे अच्छा नहीं लगेगा। आपको यह भी याद रखना है कि आपकी सहनशक्ति, आपका प्रेम आपका मार्गदर्शन, निश्चित ही आपके वैवाहिक जीवन को बनाने में सहायक होगा। यदि आपको खुश रहना है, तो आपको जानना चाहिये कि दूसरों को कैसे खुश करना है। यदि आप नहीं जानती कि दूसरों को कैसे खुश करना चाहिये, आप कभी खुश नहीं हो सकती हैं। आपको केवल अपनी फ़र्माईशों, ज़रूरतों का ही नहीं सोचना है या अपने विचारों का, जो कुछ भी है आपको बड़े कोमल तरीके से करना है क्योंकि आप स्त्रियाँ हैं, आप भद्र स्त्रियाँ हैं ..."

(२०००, दुल्हनों से बात, दिल्ली)

गट (ग्रुप) नहीं बनायें :

''... परन्तु एक बुरी पत्नी समस्यायें खड़ी कर सकती है। वह समस्या बना देंगी, वह एक गट बना लेगी लोगों का, स्त्रियों का गट, वह अपने भूत सब को देती रहेगी या वह अपनी पढ़ाई को लेकर बड़ी सचेत है, या अपने पद को लेकर सचेत है या पैसे के कारण इत्यादि, और अपने पति को अकेला रखने का प्रयत्न करेगी। ऐसे लोगों को यह सब करने का मूल्य चुकाना होगा...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

महसूस करें कि हम सहजयोग समाज को सन्तुलित समाज बनाने के लिये जिम्मेदार हैं :

''... अनेक बाते हैं, जो मैं आपको बताना चाहूँगी, परन्तु इतने कम समय में, मैं यही कहूँगी, कि स्त्रियों की यह जिम्मेदारी है कि अपनी शादी को खुश बनायें। यह उनके विवेक एवं सहजयोग के प्रति समर्पण पर निर्भर है। यह आपकी जिम्मेदारी है। यदि आप विस्तृत तरीके से देखें, जिम्मेदारी स्त्रियों की है, अच्छा समाज बनाने के लिये। यदि उसे कष्ट उठाना पड़े तो वह कर सकती है। वह इस भूमि माँ के समान है। वह कुछ भी तकलीफ़ उठा सकती है, वह यह सोचती नहीं है, कि वह तकलीफ़ उठा रही है, सो वह महान है।

आप लोग शक्ति हैं, सो शक्ति के रूप में यदि आपको कुछ तकलीफ़ उठानी पड़ें, तो आपको बुरा नहीं लगता। आपको यह भावना रखनी है कि हम सहजयोग के समाज को उत्तम बनाने के लिये जिम्मेदार हैं। यह हमारी जिम्मेदारी है। आपके सब लोभ, इच्छायें, सब कुछ को, एक खुशहाल वैवाहिक जीवन की ओर निर्देशित करना है...''

(१९९३, दुल्हनों को परामर्श, गणपतीपुले)

मैं भी एक स्त्री हूँ और मैं समझती हूँ कि मेरे लिये समाज कितना महत्वपूर्ण है :

''... अन्त में, पर आखिरी नहीं, कुछ शादियों की समस्या जो यहाँ प्राय: होती है, मैं अचम्भित हूँ। पुरुष, जिनसे आपने विवाह करना है, आपको

पूरा मौका दिया जाता है कि आप फ़ैसला लें किस से विवाह करना है, और विवाह के उपरान्त यह खत्म हो जाता है। अधिकतर यह स्त्रियों की गलती होती है यहाँ। मैं बड़ी हैरान हूँ क्योंकि सदैव स्त्री ही होती है, जो प्रभुत्व जमाती है। उसे यह चाहिये, उसे वह चाहिये, इस प्रकार।

अब आपको यह जानना है कि स्त्रियाँ समाज के लिये बड़ी महत्वपूर्ण हैं। आपको समस्या राजनैतिक समस्या नहीं है या आर्थिक समस्या नहीं है। यह हर पाश्चात्य देश में समस्या है, परन्तु मुख्य समस्या जिसका आप सामना कर रहे हैं, वह है आपका समाज, आप को पता है कि आप के समाज में क्या हो रहा है, कितना भयंकर समाज है यह, कैसे बच्चों को हानि पहुँचायी जाती है, कैसे स्त्रियों को यातना दी जाती है, कैसे इतनी चीज़ें हमारे समाज में हो रही हैं, हर प्रकार की गन्दी बातें हो रही हैं, जिन्हें किसी प्रकार से भी विकासशीलता के समीप नहीं कह सकते हैं। ये सब चीज़ें हम अपने आस-पास देखते हैं और हम अपने बच्चों को उसके कारण कष्ट पाते देखते हैं।

इसलिये कौन है समाज के लिये जिम्मेदार? स्त्रियां! स्त्रियां, समाज के लिये जिम्मेदार हैं। उन्हें यह करना है। मैं भी एक स्त्री हूँ और मैं समझती हूँ कि मेरे लिये समाज कितना महत्वपूर्ण है। मुझे स्वयं कुछ ऐसा नहीं करना चाहिये जो गलत हो। मुझे अपने बच्चों को भी कुछ गलत नहीं करने देना चाहिये...''

(१९९४, कॉन्सर्ट के पूर्व बातचीत, सिडनी)

क्योंकि आप विवेकशील स्त्रियां हैं, आप सहजयोग को गौरवान्वित करेंगी :

''... अब यह किसी प्रकार से स्त्रियों की जिम्मेदारी अधिक है, क्योंकि विवाह उसकी जिम्मेदारी है और उसे एक खुशहाल विवाह बनाना है। यदि अब, आप में से कोई किसी विशेष व्यक्ति से शादी नहीं करना चाहता है, आप 'ना' कह सकते हैं। परन्तु अब यदि आप शादी कर रही हैं, तो कृपा कर के उस प्रकार सोचें कि सहजयोगिनी की शादी हो रही है। सहजयोग का नाम ऊँचा करने की जिम्मेदारी आप की है। हम आप की शादी इसलिये नहीं कर रहे हैं कि यह एक प्रकार की सामाजिक घटना है। नहीं, इसलिये कि आप सहजयोगिनी हैं, क्योंकि आप विवेकशील स्त्रियां हैं और आप सहजयोग को

गौरव प्रदान करेंगी...''

(२००२, दुल्हनों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

II. परिवार के प्रति मोह (आसक्ति)

यदि आपका परिवार के प्रति मोह है, आसक्ति है, तो आप तब भी सम्बन्ध बिगाड़ देंगी :

''... दूसरी बात है, आपके लिये स्वाभाविक है, कि माता-पिता के साथ आपका मोह है, परिवार के साथ मोह है, अपने देश के प्रति मोह है। परन्तु अब भूल जाओ, अपने पति के परिवार के प्रति प्रीति रखें, पति के साथ और आस-पास की चीज़ों के साथ। क्योंकि यदि आप अपने परिवार के साथा आसक्त हैं, तो तब भी आप सम्बन्ध बिगाड़ देंगी। मैंने कई जोड़ियाँ देखी हैं, जो इसी कारण से टूट गयीं। एक लड़की थी जो अपने पिता के लिये बड़ी चिन्तित थी, क्योंकि पिता को व्यापार में नुकसान हो गया था और उसने पूरा जीवन दयनीय बना दिया था। इसलिये उसका पति गायब हो गया और वह कुछ और करना चाहता था और वह एक कठिन स्थिति में रह गयी और उसे अपने पिता के घर जाना पड़ा और वहाँ उसने जाना कि पिता के घर रहना कितना कठिन होता है।

सो, यह आपका घर है, आपका पति है, आपको दूसरा व्यक्ति ढूँढ़ने की ज़रूरत नहीं है या दूसरी स्त्री, कि जो आपकी सहायता करेगी। ये आप हैं, जो स्वयं की सहायता कर सकते हैं। ठीक है, हमें कुछ लड़कियों के अत्यन्त खराब अनुभव हुये हैं, जिन्होंने अपने पतियों को छोड़ा और अपने परिवारों के पास आ गयी, अपने बच्चों के साथ। क्या पूरे जीवन भर उनके परिवार उनकी देखभाल करेंगे? कौन उनकी देखभाल करने वाला है? इसलिये अपना मस्तिष्क इस्तेमाल में लायें और यह मत सोचिये कि आप कुछ ऊँची चीज़ हैं या बहुत कुछ अधिक हैं। आपको विनम्र होना चाहिये। जितना विनम्र होंगी, उतना ही आपके लिये बेहतर है। अन्यथा घमण्ड आपको शोभा नहीं देती, कभी-कभी वह घोड़े के समान दिखाई देती है और पता नहीं किस के समान दिखती हैं। सो, यह बेहतर होता हैं कि विनम्र, दयालु और अच्छी रहें ताकि

यह सिद्ध हो सके कि आप एक अच्छे स्वभाव की व्यक्ति हैं...''

(२००२, दुल्हनों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

III. पैसों के प्रति झुकाव

पैसे की दिशा नहीं, पर प्रेम की दिशा :

''... दूसरी बात मुझे आपको बतानी है, क्योंकि आप पश्चिम से हैं। पाश्चात्य स्त्रियाँ बहुत अधिक पैसे के प्रति झुकी होती हैं, यहाँ तक कि भारतीय भी वैसी हो गयी हैं। उन्हें कार चाहिये, घर चाहिये, उन्हें यह चाहिये वह चाहिये। आपको कुछ नहीं चाहना चाहिये। आपको अपने पति को व परिवार को देना है। आपको किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। वह आपकी सुन्दरता है, वह आपकी सजावट है, वह आपको सुन्दर बना देगा, परन्तु यदि आप हर समय पीछे पड़ी रहेंगी कि मुझे यह चाहिये, वह चाहिये, तो उसका तो कोई अन्त नहीं है। विशेषकर पाश्चात्य दिमाग, वे अत्यधिक पैसे की ओर झुके रहते हैं और इतनी समस्यायें खड़ी कर दी हैं कि मुझे समझ नहीं आता कि क्या कहूँ।

सो, दूसरी बात है कि आप को पैसे की दिशा में नहीं जाना है, परन्तु आपको प्रेम की दिशा में जाना है। अपने प्रेम की अभिव्यक्ति विभिन्न चीज़ों द्वारा करें। अच्छा खाना बना कर, अच्छा बिस्तर बना कर पति के लिये, घर की व्यवस्था कर के सब चीज़ें अच्छी तरह रख कर, क्योंकि यदि घर की पत्नी स्वच्छ नहीं है तो घर अस्वच्छ रहेगा। पति का यह कार्य नहीं है, घर की देखभाल करना। आप एक सुन्दर घर का आनन्द लेंगे और एक सुन्दर कमरे का, यदि आप इसे ठीक से रखेंगी।

सो, यह सब का आपको आनन्द लेना चाहिये। परिवार के लिये सब कुछ करने का आनन्द लें। विशेषकर पति के लिये। छोटी-छोटी बातें उसे खुशी देंगी। क्योंकि दफ़्तर में काम करके वह इतना थक जाता है। घर थक कर आना और फ़िर आप उसके पीछे पड़ जायें, वह गलत है। सो, आप इस प्रवृत्ति को बदल दें, हमें कुछ नहीं चाहिये, आपके पास सब कुछ है, आप सहजयोगी हैं, आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हैं, परन्तु यदि आप फ़र्माइशें करती

जाएंगी तो यह बड़ा कठिन हो जायेगा, यह मैं आपको बता दूँ...''

(२००२, दुल्हनों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

उसे अपने प्रति फ़िज़ूल खर्च नहीं होना चाहिये :

''... पुरुष को अपनी पत्नी से अपने पैसे छुपाने पड़ते हैं क्योंकि पत्नी खर्च देगी। इसके विपरीत है। परन्तु स्त्री स्वार्थी एवं स्वकेन्द्रित होना शुरू हो जाती है और पैसे की चिन्ता करती है, तब यह गलत बात है। उसे अपने प्रति फ़िज़ूल खर्च नहीं होना चाहिये, जैसे कि कहीं जा कर अपने लिये कुछ महंगा खरीदना। परन्तु अपने पति के लिये, बच्चों के लिये सस्ती चीज़ें लेना। दूसरों के लिये करो और अपने आप वे करते हैं। उनके लिये करने के लिये उत्सुक होती हैं, इस ओर सोचना शुरू करें...''

(१९८१, दिवाली पूजा, यू.के.)

किसी चीज़ की माँग न करें :

''... सबसे बड़ी बात है कि पत्नी को पति से पैसे ले कर अपने सम्बन्धियों को नहीं भेजने चाहिये। कभी नहीं, यह एक गलत बात है, कि अपने परिवार को पति के पैसों से सम्भालें। इसकी बिल्कुल भी अनुमति नहीं है। वह नहीं होना चाहिये... आपको अपने परिवार का भार अपने पति पर नहीं डालना चाहिये। यह स्पष्टत: आप में समझदारी होनी है कि आप नहीं लेंगी, आप को अपना आत्मसम्मान रखना चाहिये। कुछ मांग नहीं करें। यदि वह आपको कुछ देता है तो ठीक है, परन्तु माँगे नहीं। फ़र्माईश न करें, अन्यथा इसका अर्थ है, कि आप सहजयोगी नहीं है। यदि आप सन्तुष्ट आत्मा हैं तो आपको क्यों कुछ माँगना है? या किसी को कुछ मिलता है, उसके पास यह है, उसके पास.... उस प्रकार का कुछ नहीं। आप सन्तुष्ट रहें। और इस प्रकार से कुछ लड़कियाँ अपने पतियों को कोसती हैं...''

(१९९३, दुल्हनों को परामर्श, गणपतिपुले)

भारतीय और पाश्चात्य महिलायें

शेर :

''... सो, यह है, जहाँ हम सामूहिकता में पीछे रह जाते हैं। मैं कह रही थी कि सब हिन्दुस्तानियों को कोई स्थान ढूँढना चाहिये, जहाँ जा कर वे कुछ पौधे लगायें। कोई स्थान निश्चित कर लें जहाँ वे अच्छे बरगद के पेड़ के पौधे लगायें, पानी दें और एक साथ कार्यान्वित करें। हिन्दुस्तानी स्त्रियां, उस तरीके से बेहतर हैं। वे बहुत कार्य करती हैं, जहाँ तक कि खाना बनाने का काम है, परन्तु दूसरा भाग गायब है। वह दूसरा भाग है बुद्धिमानी, एक भाग है सोच-विचार। यदि सारे समय वे सोचती रहें कि, 'मेरे पति को यह पसन्द है, मुझे उसके लिये यह खाना पकाना है।' यदि पति को उदाहरण के लिये खाने में नीबू चाहिये, अब घर में नीबू नहीं है, तो यह स्त्री इधर से उधर भागेगी, पति के लिये नीबू लाने के लिये, अन्यथा वह खाना नहीं खायेगा। कोई बात नहीं, एक बार यदि वह खाना नहीं खायेगा तो फ़र्क नहीं पड़ता, ठीक है। परन्तु स्त्रियां प्रयत्न करती हैं क्योंकि उन्हें अपने पति के स्वाद को ठीक रखना है। भारत में वे काफ़ी होशियार हैं क्योंकि वहाँ वे असली शेरनियाँ हैं। सब पति के समान हैं, सो आपको उन्हें खिलाते रहना है, अन्यथा भगवान ही जाने शेर कब उन पर उछल पड़े।

इंग्लैंड या अमेरिका में इसके विपरीत मैंने देखा है, पति बकरी के समान हैं और स्त्रियां शेर। और जो भारतीय स्त्रियां पाश्चात्य बन गयी हैं, वे भी वैसी हैं और जब वे पश्चिम में आती हैं, तो मैंने देखा है कि सीधी-साधारण स्त्रियां भी शेरनी बन जाती हैं। कुछ हैरानगी की बात है, कि वे कैसे तत्क्षण बदल जाती हैं, चाहे वे जीन्स न पहनें और वे सब चीज़ें, पर वे वैसी बन जाती हैं।

सो, यह असन्तुलन व्यक्ति में शुरू हो जाता है, जब वह यह नहीं समझता है, कि उसे भूमि माता का अक्षरेखा बनना है न कि मकर रेखा या कर्क रेखा। यह सन्तुलन हमारी गहराई से आता है और उस गहराई को सुधारना है। केवल इसके बारे में बात करके नहीं, सहजयोग की बात करके ही नहीं, परन्तु वास्तव में

गम्भीरता से ध्यान कर के ...''

(१९८८, श्रीसूर्य पूजा, मुम्बई)

भारत में स्त्रियां हैं, जिन्होंने सहजयोग को बनाया है :

''... हिन्दुस्तान में बुद्धिमान स्त्री हैं। वह केन्द्रबिन्दु को देखती है, वह जानती है, कि यह आदिशक्ति हैं.....'मैं इस घर से निकल जाऊंगी, यदि आप ठीक से व्यवहार नहीं करेंगी।' यह स्त्री है भारत में, जिसने सहजयोग को सफ़ल बनाया है, बड़ी बुद्धिमान स्त्रियां...''

(१९८८, महिलाओं की भूमिका, यू.के.)

यहाँ स्त्रियां आक्रमक हैं पर बुद्धिमान नहीं :

''... विशेषतया, यह यूरोप में अधिक है, मैं देखती हूँ और इंग्लैंड और अमेरिका में, स्त्रियां बहुत प्रभुत्वमयी हो गयी हैं। उन्हें पता है, कि पुरुषों को कहानियां सुना कर कि परिवार को कैसे देखा जायें, बच्चों को कैसे देखा जाये, वह कैसे करें। कभी-कभी हैरानगी होती है और आप उसमें खो जाते हैं। मैंने अनेक इस प्रकार के देखे हैं। इससे कितनी समस्यायें आ गयी हैं। अब मैं सब स्त्रियों से विनती करती हूँ कि ठीक से व्यवहार करें और समझें कि वे पत्नियां हैं। जो भी सहजयोग से उन्हें आशीर्वाद मिले हैं, वे वापिस चले जायेंगे, यदि आप दुर्व्यवहार करना शुरू करेंगी। और सब प्रकार की तकलीफ़ें उन पर आयेंगी, मेरे कारण नहीं, परन्तु एकादश रूद्र के कारण। जैसे, आप सब कुछ भूतों पर डाल देती हैं, मुझे यह सब देवताओं पर डालने दो। मैं कोई जिम्मेदारी नहीं लेती हूँ। यदि आप गैर-जिम्मेदार हैं, तो वे आपको ज़ोर से आघात करेंगे और आप को कैन्सर या कुछ और गम्भीर हो जायेगा और तब मुझे दोष नहीं देना।

यह आज स्थिति है। मुझे कुछ सहजयोगिनियों का पता है, जिन्होंने मेरे सामने स्वीकार किया है, कि वे यह सब करती रही हैं। वे परिवारों के बारे में बातें करती रही हैं, इसके, उसके और उन्हें तकलीफ़ हुई। इस बात को समझना चाहिये क्योंकि मैं सोचती हूँ कि पश्चिम में स्त्रियों के पास बुद्धिमत्ता

नहीं है। वे बुद्धिमान नहीं हैं, मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ। कुछ में बुद्धिमत्ता है और चाहे वे पकड़ में हैं तब भी वे विवेकशील हैं। परन्तु स्त्रियां यहाँ आक्रमक हैं पर बुद्धिमान नहीं हैं...''

(१९८८, महिलाओं की भूमिका, यू.के.)

वे समझती नहीं हैं कि मैं कौन हूँ :

''... यहाँ स्त्रियों में विवेक नहीं है क्योंकि वे इतनी आक्रमक हैं। वे केन्द्रबिन्दु को नहीं देखती है। वे समझती नहीं हैं कि मैं कौन हूँ? उन्हें अपनी योग्यता नहीं समझ आती है। उनके लिये सब निरर्थक, मूर्खता भरी बाते महत्त्वपूर्ण हैं। आप सभी नहीं, पर आप में से कुछ और क्योंकि विवेक कम है इसलिये आप मूर्ख स्त्रियों की ओर झुक जाती हैं। वे आपको हर प्रकार की बातें बताती हैं। वे अच्छी तरह बात करेंगी। मैंने देखा है, यहाँ केवल स्त्रियां ही बोलती हैं, पुरुष नहीं बोलते...''

(१९८८, महिलाओं की भूमिका, यू.के.)

इस पागलपन की होड़ में बच्चों की अवहेलना हो जाती है, घर की अवहेलना होती है और दोनों के बीच हर समय झगड़ा होता रहता है :

''... उदाहरण के लिये हर स्त्री मां बनना चाहती हैं, परन्तु पाश्चात्य देशों में अनेक स्त्रियां नहीं चाहती हैं। विशेषकर अमेरिका में वे सोचती हैं, कि इससे उनका शरीर बिगड़ जायेगा या कुछ और होगा और उनके पति उनकी ओर आकर्षित नहीं होंगे, सो, हर समय पति और पत्नी के बीच पागलपन की होड़ चलती रहती है। पति अनेक स्त्रियों के पीछे भाग रहा है और स्त्रियां भी अनेक पुरुषों के पीछे भाग रही हैं, या वे अपने पतियों पर प्रभुत्व जमाती हैं। इस पागलपन की होड़ में बच्चों की अवहेलना हो जाती है, घर की अवहेलना होती है और दानों के बीच हर समय झगड़ा होता रहता है।

सो, स्त्रियों को इस पागलपन की 'रेस' की अनुसेवी बनने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये। उन्हें, अपनी प्रतिष्ठा रखनी चाहिये। उन्हें अपना चरित्र रखना चाहिये। उन्हें पति की हरकतों की परवाह किये बिना बच्चों की देखभाल करनी चाहिये। सबसे खराब चीज़ जो एकदम स्वीकार्य है, वह है

तलाक, उन्हें भय है कि पुरुष उन्हें तलाक दे देंगे और वे एक कठिन स्थिति में छोड़ दी जायेंगी। परन्तु पश्चिम में हर बात का प्रबन्ध है। यदि पुरुष किसी और स्त्री से शादी कर लेता है तो बच्चों एवं मां को, देखभाल के लिये काफ़ी पैसा मिलता है। ऐसे हालात में स्त्रियों को अपने पति को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिये और उस के लिये लड़ना चाहिये और यदि वे सही रास्ते पर नही आते हैं, उन्हें पूर्णतया अलगाव करना चाहिये...''

(१९९२, दिवाली पूजा, रूमानिया)

पति की भूमिका

श्रीमाताजी ने पति के गुणों की तुलना श्रीराम के साथ की है। वे बड़े तेजस्वी एवं सच्चरित्रवान थे। पति की विशेषतायें दायीं ओर की अधिक हैं। वह अपनी पत्नी और परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के लिये सजग है। उनसे अपेक्षित है कि वे आदर्शवादी और दृढ़ विश्वासी हों।

विवाह में इन गुणों की अभिव्यक्ति पति अपनी पत्नी की आवश्यकतायें और संवेदनाओं को ध्यान में रख कर करता है। वह जानता है, कि अपनी जिम्मेदारियों को कैसे निभाना है और साथ ही पत्नी का सम्मान कैसे करना है उसे समझना है और उसके प्रति अपनी चिन्ता और प्रशंसा दर्शाना है

सम्मान

I. पत्नी और उसके गुणों का सम्मान करना

जितना अधिक आप घर की पत्नी का सम्मान करेंगे, सारा समाज बदल जायेगा :

''... पुरुषों को यह समझना चाहिये। जितना अधिक आप घर की पत्नी का सम्मान करना शुरू करेंगे-परिवार की गृहलक्ष्मी का-जितना अधिक उनका सम्मान होगा, उतना ही अधिक इन स्त्रियों को उनके सही स्थान पर स्थिरता मिलेगी। अपने घर और परिवार पर गर्वित होंगी और उनका स्वयं का तरीका जो उन्हें प्राप्त करना है। वे अनुभव करेंगी कि उनका कोई अर्थ है और पूरा समाज बदलेगा। परन्तु यदि पुरुष गन्दी सस्ती स्त्रियों के पीछे भागेंगे तो घर की स्त्रियां भी वही करेंगी। सो, यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि उनका सम्मान होना चाहिये क्योंकि वे गृहलक्ष्मी हैं। यह एक बात है...''

(१९८२, दिवाली पूजा, लंदन)

''...**सो, हृदय का सम्मान होना चाहिये।** हृदय का सम्मान होना चाहिये, हृदय का आज्ञा पालन होना चाहिये, यही मुख्य बात है, हृदय का आज्ञा पालन होना चाहिये, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि स्त्रियों को पुरुषों पर प्रभुत्व दिखाना चाहिये। इसका यह अर्थ नहीं है। आज्ञा पालन का अर्थ है, कि आपको समझना चाहिये कि आप का प्रेम क्या कहता है। प्रेम में करें। यदि आप प्रेम में करेंगे, तो बड़ा अच्छा है...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

''...**माँ की प्रतिष्ठा का सम्मान होना चाहिये।** मुझे विश्वास है, कि आप लोगों ने अपनी माताओं का पूरा सम्मान किया होगा, परन्तु अब वे मां के रूप में सम्मानित होंगी या नहीं, मुझे पता नहीं है। एक बार यह स्थापित हो जाये कि माँ का पद एक उच्चतम पद है, जहाँ स्त्री पहुँच सकती है और उसका सम्मान होना चाहिये। स्त्रियों में भी सब प्राथमिकतायें बदल जायेंगी, क्योंकि

वे क्या कर सकती हैं? उनके पास माँ के रूप में कोई स्थान नहीं है इसलिये वे बच्चों से तंग आ जाती हैं। वे सोचती हैं, 'इस मातृत्व का क्या लाभ है? यह आभाररहित कार्य है।' यह सब तभी बदल सकता है, जब पुरुष अपने अन्दर से बदलता है, जब परिवर्तन होता है...''

(१९८२, बिकमिंग द नॉलेज, डर्बी, यू.के.)

विवाह विशेष प्रकार का पवित्र मेल होना चाहिये :

''... दूसरी शादियों और सहजयोग की शादियों में अन्तर होता है, जिसमें हमें समझना है कि शादी को एक विशेष होना है, जिसे यज्ञ कहते हैं, अर्थात् कि एक विशेष प्रकार का पवित्र मेल, जिसमें आपको अत्यन्त सहज जीवन बिताना है, अपनी पत्नी के साथ और उसे समझना है। वह भी एक सहजयोगिनी है इसलिये आपको उसका सम्मान करना है, उससे प्रेम करना चाहिये और वह वास्तव में समझे कि आप उसकी चिन्ता करने वाले प्रेम करने वाले और कोमल पति हैं। आपको उसके लिये पूरा ख्याल दिखाना है क्योंकि वह सहजयोगिनी है। वह साधारण स्त्री नहीं है और उस सम्मान के साथ, मुझे विश्वास है, कि आप एक सुन्दर सहज जीवन बिता सकते हैं...''

(२०००, दुल्हनों और दूल्हों के साथ बातचीत, दिल्ली)

आपको अपनी पत्नी का ध्यान रखना है, कभी भी दूसरों के सामने अपमानित न करें :

''... सहजयोग में हमें समझना चाहिये, आपको अपनी पत्नी का, उसकी आवश्यकताओं का हर चीज़ का ध्यान रखना होगा। आपको उसे सम्मान देना है, उसे कभी भी दूसरों के समक्ष अपमानित नहीं करें, यह पूर्णतया निषिद्ध है...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

एक पुरुष को अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिये और पत्नी को भी सम्माननीय होना चाहिये :

''... और अन्त में उनका यह प्रतीक हाथ (लक्ष्मी जी का) वह कहती

हैं कि, 'जो आपकी सुरक्षा में हैं, आपको उनकी देखभाल करनी चाहिये।' इसका अर्थ है, कि जो आपके सम्पर्क में आते हैं, उन्हें आपको आशीर्वादित करना है और आपको उन सभी लोगों की चिन्ता करनी है, जो आपके नियंत्रण में हैं।

सो, लक्ष्मी का प्रतीक न केवल स्त्रियों के लिये है, परन्तु अधिक पुरुषों के लिये है। पुरुष को अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिये और पत्नी को सम्माननीय होना चाहिये, यदि वह नहीं है, तो परिवार में मंगलता नहीं आयेगी। सो, आपको लक्ष्मी जी के सब आशीर्वाद मिलते हैं यदि आप की पत्नी एक अच्छी व्यक्ति है। लक्ष्मी जी का यह प्रतीक इस बात को अभिव्यक्त करता है, कि एक स्त्री या एक पुरुष से किस प्रकार के व्यक्तित्व की अपेक्षा की जाती है, जिनके पास पैसे का आशीर्वाद है। सो, वह मैं आपको बता रही थी, पहले दिन के विषय में, क्या होता है। दूसरे दिन क्या है, मुख्य बात है कि दिवाली के दिन हमें लक्ष्मी की पूजा करनी है।

सो, आज जब हम लक्ष्मी की पूजा कर रहे हैं, पुरुषों को भी यह जानना है, कि उन्हें जीवन में पूर्ण सन्तुलन रखना है, उन्हें उदार होना चाहिये और लोगों का ध्यान रखना चाहिये, जो उनके नियंत्रण में हैं...''

(१९९२, दिवाली पूजा, रूमानिया)

उसे किसी भी प्रकार से पत्नी को अपमानित नहीं करना है, परन्तु यदि वह समस्या खड़ी करती है :

''... परन्तु पति को यह समझ लेना है, कि उसे पत्नी का सम्मान करना है, अन्यथा वह असफ़ल है, समाप्त है, वह किसी भी बात के लिये अच्छा नहीं है। पहली बात है, कि उसे देखना है कि परिवार में पत्नी का सम्मान होना चाहिये, गृहलक्ष्मी के रूप में, तब आशीर्वाद मिलते हैं पर किसी भी तरीके से उसे पत्नी को अपमानित नहीं करना है, या निर्दयी हो और ऊँची आवाज़ में कुछ कहता हो, नहीं होना चाहिये।

परन्तु पत्नी भी सम्मान के योग्य होनी चाहिये, निःसंदेह। उसे प्रभुत्व नहीं दिखाना है, उसे दूसरों के अन्दर से प्रभुत्वता को निकालना है। वह शान्ति

का स्रोत है, वह आनन्द का स्रोत है और वह शान्ति बनाने वाली है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

उसे यह प्रमाणित करिये कि आप उससे अत्यन्त प्रेम करते हैं और जो भी आपका है, वह उसके लिये है :

''... सो, यहाँ हम नये जीवन की चौखट पर प्रवेश करने के लिये खड़े हैं, जहाँ आपका अपना साथी है। वह आपकी पत्नी होगी न केवल इसलिये कि वह सहजयोग में है और आपने उससे शादी की है, वह आपकी अपनी है। इसलिये उसे यह प्रमाणित करने का प्रयत्न करें कि आप उससे बहुत प्रेम करते हैं, वह आपकी पत्नी है और जो कुछ भी आपका है, वह उसके लिये है। यहाँ प्रारम्भ में ही बड़ा महत्वपूर्ण है...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपतिपुले)

''...घर की पत्नी का सम्मान करना सहज संस्कृति में सबसे महत्वपूर्ण है, परन्तु उसका यह अर्थ नहीं है कि स्त्रियां प्रभुत्व दिखाने का प्रयत्न करें और तकलीफ़ दें व पति के साथ झगड़ा करें। परन्तु इसका अर्थ है कि घर की पत्नी का समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वह देवी के समान मानी जाती है, पर उसे भी देवी होना चाहिये। यदि आप उसे द्वार पर रखी टाट के समान देखेंगे, तो बच्चे भी कभी उसका सम्मान नहीं करेंगे। यदि आप उसे सही सम्मान नहीं देंगे तो बच्चे माँ का सम्मान नहीं करेंगे और बच्चों के ऊपर माँ का कोई असर नहीं होगा। उसका परिणाम यह होगा कि बच्चे आवारा बन जायेंगे और जिस समाज में या देश में, जहाँ माँ का सम्मान नहीं होता, वहाँ बच्चे अत्यन्त दबाने वाले, गुस्सैल और भयंकर असामूहिक हो जाते हैं।

सो, आज के दिन यह बड़ा महत्वपूर्ण है, जिसे हम 'धनतेरस' कहते हैं (तेरहवां दिन) आपको अपनी पत्नी के लिये कुछ खरीदना होता है, उसे कुछ उपहार देना होता है। कम से कम एक छोटा सा बर्तन या कुछ ऐसी वस्तु जो रसोई घर में उपयोगी हो, अपना सम्मान उसे दिखाने के लिये।

जिन परिवारों में मां का सम्मान नही ंहोता है, बच्चे अत्यन्त तकलीफ़दायक होते हैं और पूरा परिवार कष्ट पाता है, जहाँ भी उनकी शादी

हो या उन्हें कुछ भी हो।

पुरुषों को यह समझ लेना है कि यह उनकी गलती है कि उन्होंने कभी अपनी पत्नी का सम्मान नहीं किया, जैसा कि उन्हें करना चाहिये था। बच्चों की उपस्थिति में यदि वे चिल्लाते हैं, या बच्चों की उपस्थिति में सम्मान नहीं देते हैं, तो बच्चे कभी मां को सम्मान नहीं दे सकते हैं। यह स्त्रियों के प्रति अपराध है, जो घर में है, आपके लिये कार्य कर रही है, आपकी देखभाल कर रही है, परिवार की देखभाल और कुछ फ़र्माईश नहीं करती।

यदि आप देखना चाहे कि वे कैसे तकलीफ़दायक हो सकती हैं, तो उन्हें राजनीति में देखें। जब वे राजनीति में जाती हैं, वे सब पुरूषों को उल्टा कर देती है। एक स्त्री उन सबको सही अक्ल में ला सकती है। क्योंकि उनका क्षेत्र घर है, परिवार है। यदि परिवार में वे सम्मानित नहीं होती हैं, तो वे परिवार से बाहर निकलती हैं और ऐसा व्यवहार करती हैं कि आप कल्पना नहीं कर सकते...''

(१९८८, दिवाली पूजा का महत्व, इटली)

परिवार में उसका सम्मान होना चाहिये :

''... उसे बहुत सहना होता है, कष्ट उठाना पड़ता है, परन्तु परिवार में उसका सम्मान होना चाहिये, वह गृहलक्ष्मी का अत्यधिक महत्वपूर्ण संदेश है...''

(१९८८, दिवाली पूजा का महत्व, इटली)

II. पत्नी को समझना और प्रोत्साहित करना

उसकी बाजू समझने का भी प्रयत्न करें :

''... समझदारी सर्वोत्तम बात है। उसे समझने का प्रयत्न करें। कभी-कभी वे दूसरे देशों से आती हैं और भिन्न संस्कृति से हैं, इसलिये समझने का प्रयत्न करें। इस प्रकार आप समझेंगे कि उस देश की संस्कृति क्या है, जहाँ से वह आयी है। और यह आपके बच्चों के लिये भी अच्छा है कि आप हमेशा अपनी पत्नी का सम्मान करें। आपके दिमाग में पत्नी के बारे में कुछ आदर्श

नहीं होने चाहिये और जो भी बन्धन आप के थे या आपने समाज में देखे हैं, उन्हें भूल जाओ...''

(२०००, दूल्हों और दुल्हनों के साथ बातचीत, दिल्ली)

अपना हृदय खोलें, पत्नी में दोष देखने का प्रयत्न न करें :

''... सो, तैयार हो जाएं, स्वयं को मैत्रीपूर्ण बनायें, हृदय को खोलें। अपनी पत्नी में दोष न ढूँढें। मेरा अर्थ है कि कुछ चीज़ें आप को नहीं आती हैं, कोई बात नहीं। हर समय दोष निकालने के प्रयत्न से आप दोषमय हो जाते हैं। दोष मत निकालिये। यदि आप किसी को कुछ गलत करते हुये देखते हैं, कल्पना कीजिये कि यदि आप देखते हैं कि वह व्यक्ति कुछ गलत करने की कोशिश कर रहा है, ठीक है, आप खुद ही कर लें या कहे नहीं। धीरे-धीरे वह आप से सीख लेगी कि कैसे सही प्रकार से करना है। ऐसे क्षणों को हंस कर हल्के से लेना चाहिये। उदाहरण के लिये, मुझे पता नहीं है कि बैंकिग किस प्रकार करते हैं, चैक कैसे लिखते हैं। मैं कई चीज़ों में बहुत खराब हूँ, टैलिविजन भी नहीं खोल सकती, यहाँ तक कि एयर-कंडिशनर भी नहीं, कई चीज़ें मैं नहीं कर सकती, कोई बात नहीं, मेरे पति भी मेरे समान ही है, सो, हम एक दूसरे का आनन्द लेते हैं...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपतिपुले)

आपको सम्पूर्ण समझदारी चाहिये :

''... यह आपसी समझदारी के कारण है। जो प्रेम आप अभिव्यक्त कर रहे हैं, उसकी पूरी समझदारी होनी चाहिये, यदि आप उस पर संदेह कर रहे हैं, तो वह गलत है। या यदि आप सोचें कि, 'यह सब मेरा है, वह कौन है पूछने वाली?' मुझे पसन्द नहीं है कि स्त्रियां नौकरी करें, पर यदि उन्हें करना है तो वे करेंगी। यदि वे कर रही हैं, मैंने पहले ही उन्हें बता दिया है, कि उन्हें बड़ा सावधना रहना होगा, उन्हें प्रथम घर की पत्नी होना है। हमें केवल शादियां नहीं चाहिये हैं, हमें सहजयोगी चाहिये जिनकी शादी हो गयी है, जिनके बढ़िया बच्चे होंगे, बढ़िया परिवार। हमें सुन्दर परिवार चाहिये...''

(२०००, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

वह बराबर की महत्वपूर्ण है :

''... साधारणतया, यह समझने का प्रयत्न करें, क्यों वह घर का कार्य करते हुये बराबर की महत्वपूर्ण है, आपसे भी अधिक महत्वपूर्ण। यदि आप इस दृष्टिकोण से देखें कि शादी दो आत्माओं की है, जो बायीं और दायीं ओर है, तो वहाँ सम्पूर्ण समझदारी होगी। भावनिक भाग इसका-मैं देखती हूँ कि शादियों में लोगों में भावनिक समझदारी नहीं होती है। यदि वह उदास है, यदि वह रोती है, तो थोड़े से प्रेम भरे शब्द दें और व्यक्ति को प्यार देना सबसे ऊँची बात है। इससे बढ़ कर कोई बात ही नहीं हो सकती कि किसी को प्यार करें...''

(२०००, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

सो, आप उससे बात करें एवं उसे समझायें :

''... चूंकि पत्नी एक दूसरे परिवार से आ रही है, शायद दूसरे देश से, तो समझने में थोड़ा अन्तर होगा। आप उसे समझायें, उससे बात करें, उससे कहें, ठीक है, आओ, बैठो।' परन्तु गुस्सा करने से कोई लाभ नहीं। आप जो भी स्पष्टीकरण दें, वह ठीक नहीं, उससे आपको कोई सहायता नहीं, उससे आपको कोई सहायता नहीं होगी। मैं आप सब को देखना चाहती हूँ कि आप कैसे पूर्ण सफ़लता के साथ दिखायेंगे कि आप की शादी पत्नी के साथ अच्छी चल रही है। परन्तु मैं यह नहीं कह रही कि आप उन्हें बिगाड़ दें, बिल्कुल नहीं। मैंने पहले ही उनसे कह दिया है। उन्हें बिगाड़ें नहीं परन्तु उन्हें भी सहजयोग के सही रास्ते पर रखें। और सहजयोग के अच्छे स्वयंसेवक बनें। वे बड़ी अच्छी मातायें बनेंगी और ऐसे बच्चे बनायेंगी, जैसे हमें अब चाहिये, जो विश्व को पूरी तरह से बदल देंगे...''

(२०००, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

उनके गुणों को, अच्छाई को प्रोत्साहित करें :

''... और पति को उनमें दोष नहीं निकालने चाहिये। प्रारम्भ में हो सकता है वे गलतियां करें, तब प्रोत्साहन दें। उनके गुणों को, अच्छाई को प्रोत्साहित करें...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

परामर्श

पत्नी से प्रेम, उसकी और बच्चों की देखभाल महत्वपूर्ण है :

''... सो, अब एक बार आप फ़ैसला कर लें कि आप शादी कर रहे हैं- यह बहुत-बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। हम सहजयोग की शादियों को अत्यन्त सफ़ल देखना चाहते हैं और आप सब एक अत्यन्त प्रसन्नताभरा वैवाहिक जीवन व्यतीत करें। प्रभुत्व दिखाने, नियंत्रित करने का कोई लाभ नहीं है, परन्तु आपस में एक दूसरे के साथ का आनन्द लें क्योंकि आप की पत्नी भी सहजयोगिनी है और आप भी सहजयोगी हैं और हम आपकी शादी नहीं करते हैं, यदि आप सहजयोगी नहीं है। इसका कारण है कि हम प्रकाशित लोग हैं, हमारी उच्च चेतना है। हमारी अपनी आध्यात्मिक जिन्दगी है। हमें अपने जीवन में यह दिखाना है, कि आप दूसरे लोग जो मूर्ख हैं, उनसे अलग व्यवहार के हैं, वे लोग झगड़ा करते रहते हैं, सब कुछ बिगाड़ते रहते हैं।

ताकि आपके बढ़िया बच्चे होंगे, उनकी देखभाल करें, परिवार देखभाल करें, वह आपकी प्रथम बात है। आप में से कुछ लोग काम में अत्यन्त व्यस्त होंगे, वह ठीक है, परन्तु पत्नी से प्रेम करना, उसकी व बच्चों की देखभाल बड़ी महत्वपूर्ण है। अन्यथा आप कुँवारे रहें, शादी नहीं करनी चाहिये। परन्तु यदि आप शादी कर रहे हैं, तो आपको पत्नी की जिम्मेदारी लेनी है। वह किसी की बेटी है और एक पिता अपनी बेटी आपको दे रहे हैं। अभी तक तो लड़कों का व्यवहार अच्छा रहा है, सहजयोग में।

सो, अब आपको भी विवेक होना चाहिये और समझदारी होनी चाहिये कि आप यहाँ सहजयोगी बच्चों को जन्म देने के लिये हैं, जो सहजयोग में सहायक हों क्योंकि हमें विश्व को बदलना है, उसका उद्धार करना है। यदि आपकी शादी के विषय में बड़ी निम्न स्तर की समझदारी है तो यह कार्यान्वित नहीं होगा ...''

(२००२, दूल्हों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

आपको अपनी जिम्मेदारी समझनी है :

''... मैं बड़े सम्मान के साथ आपसे विनम्र निवेदन कर रही हूँ कि कृपया, यदि आप सहजयोग में विवाहित जीवन में प्रवेश कर रहे हैं, तो आपको अपनी जिम्मेदारी को समझना है, यह एक बड़ी ऊँची जिम्मेदारी है। यह पूरे विश्व के लिये जिम्मेदारी है, क्योंकि हमें पूरे विश्व को बदलना है और यदि आप अपने देश के दूसरे पतियों के समान व्यवहार करेंगे या दूसरे देशों के, तो फिर सहजयोग में विवाह करने का क्या लाभ है? आप बाहर जाकर एक अच्छी शादी कर सकते हैं। परन्तु यदि आप सहजयोग में विवाह कर रहे हैं, तो आपको यह जानना है कि यह शैतान के विरोध में बड़ा युद्ध है, अन्याय के विरोध में और हर प्रकार की अव्यवस्था के विरोध में। हमें एक सुन्दर विश्व बनाना चाहते हैं और सुन्दर विश्व बनाने के लिये हमें ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो सुन्दर हों जो स्वयं सबका सम्मान करते हों।

सो, मुझे बार-बार वही निवेदन आप से करना है कि आप बड़े अच्छे, विनम्र और सम्मान करने वाले पति हो। दूसरों का अनुसरण नहीं करें क्योंकि मैंने अजीब बातें सुनी हैं और मैं हैरान थी कि ये लोग सहजयोग के विवाहों में ऐसे कैसे बन गये। पर हमें पता चला कि वे सब पागल थे और उन्होंने पागलों के जैसा व्यवहार किया...''

(२०००, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

I. पत्नी के साथ बाँटना

आप अपनी पत्नी के साथ अपनी सब भावनाओं को बाँट सकते हैं :

''... सो, आप अपने अन्दर की शादी करने की इच्छा को समझें। शादी का अर्थ है-पत्नी जो आपका अंग-प्रत्यंग है। एक पत्नी जिस पर आप निर्भर कर सकते हैं। वह आपकी माँ है, बहन है, आपका बच्चा है, वह सब कुछ है। आप अपनी सब भावनाओं को अपनी पत्नी के साथ बाँट सकते हैं। सो यह महत्वपूर्ण है, कि पत्नी को ऐसा होना चाहिये कि वह समझे कि यह शादी की ज़रूरत है...''

(१९८०, विवाह का महत्त्व, यू.के.)

एक बार बाँटना शुरू करेंगे तो आप उसकी सहायता करने का एवं समझने का आनन्द ले सकेंगे :

''... आप लोग बड़े विभिन्न लोग हैं। आप पूरी तरह से सहजयोग के विशेष कार्य के लिये चुने गये लोग हैं। एक बार जब आप इस बात को समझ जाते हैं कि आप यहाँ उन लड़कियों से शादी कर रहे हैं, जो सहजयोगिनी हैं और वे आपका ध्यान रखेंगी। मैं उन्हें भी बताऊंगी कि उन्हें क्या करना है। परन्तु मैं आप से निवेदन करूंगी कि पुरुष का प्रभुत्व न रखें या सोचें कि आप परिवार का मुखिया हैं, पत्नी को कष्ट देने के लिये। उसके साथ बाँटे। कृपया, समझिये इस बात को और एक बार आप समझ गये तो आप उसकी सहायता करने में और उसे समझने में आनन्द लेंगे...''

(२०००, दुल्हनों और दूल्हों के साथ बातचीत, दिल्ली)

एक बात बड़ी महत्वपूर्ण है कि आप को बाँटना चाहिये :

''... अब सहजयोग में जैसा कि, आपने देखा है, आप सब को समस्यायें बायीं ओर की या दायीं ओर की। अब जब ये शादियां होंगी, अधिकतर सहज ही यह प्रकृति के अनुसार ही होगा कि आप उस व्यक्ति से शादी करेंगे जो आप के व्यक्तित्व के लिये सही है। यदि आप बायीं ओर के व्यक्ति हैं और आप की शादी ऐसे व्यक्ति के साथ होती है, जिसकी बायीं ओर बड़ी मज़बूत होती है तो वह बराबर हो जायेगा और इस प्रकार आप एक अच्छी शादी के लिये एक बात बड़ी महत्वपूर्ण है कि आप को बाँटना जरूरी है। आपको अपने जीवन का हर क्षण बाँटना चाहिये। यदि आपको जीवन को बाँटना नहीं आता है, तो यह अत्यन्त कठिन होने वाला है...''

(१९८०, विवाह का महत्त्व, यू.के.)

II. पत्नी की अवहेलना नहीं करें

पुरुष को अपनी पत्नी की अवहेलना नहीं करनी चाहिये :

''... पुरुषों के दुर्व्यवहार के परिणाम स्वरूप, स्त्रियां अत्यन्त असुरक्षित हो जाती हैं और उसके परिणाम से पुरुष भी तकलीफ़ पाते हैं और स्त्रियां भी

कष्ट पाती हैं.... क्योंकि बायीं नाभि बड़ी महत्वपूर्ण है। यदि बायीं नाभि को बड़ा उत्तेजित कर दिया जाये, भाग दौड़ आदि उछलने के कारण तो बायीं नाभि तीव्रता के कारण उत्तेजित हो जाती है और आपको ब्लडकैन्सर हो जाता है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

यह महत्वपूर्ण है कि पुरुषों को कुछ समय और चित्त देना चाहिये :

''... अब पुरुषों के लिये यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें कुछ समय निकाल कर देना चाहिये। थोड़ा ध्यान देना चाहिये और कुछ चीज़ें लायें जो वे पसन्द करती हैं। मैं अपना स्वयं का उदाहरण आप को देती हूँ। मेरे पति ने कभी मेरे लिये फूल नहीं खरीदे, आप सब मेरे लिये फूल लाते हैं, पर उन्होंने कभी मेरे लिये फूल नहीं लिये, चाहे मेरा जन्म दिवस हो या कुछ और। तब मैंने यह जाना कि इस व्यक्ति को फूलों का बोध ही नहीं है। वे जानते ही नहीं हैं कि गुलाब कौनसा है और अन्य कोई और फूल। वे हो सकता है कि कुछ भयंकर लें आयें, शायद 'कैक्टस' ले आयें। बेहतर है, कि वे कुछ नहीं लायें क्योंकि वह अपमानजनक हो सकता है, फिर एक दिन उन्होंने स्वीकारा, 'मुझे फूलों के बारे में पता नहीं है, क्या आप मुझे बताओगी, सिवाय गुलाब के, मुझे कुछ नहीं पता।'

सो, इस प्रकार की अनभिग्यता से यदि आप के पति कुछ नहीं लाते, तो आपके लिये समझदारी ही है। परन्तु पुरुषों को यह जानने का प्रयत्न करना चाहिये कि स्त्री को क्या पसन्द है, क्या चाहिये। पुरुषों का सोचने का अपना ही ढंग होता है...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

आपकी जिम्मेदारी है कि पत्नी को ध्यान दें :

''... आपकी यह भी जिम्मेदारी है, कि उसको ध्यान दें, अवहेलना न करें, परन्तु आप व्यस्त हैं और आप इसे न्यायिक करते हैं। परन्तु आप को कुछ समय पत्नी को देना है। आप की उपेक्षा नहीं करनी है, वह पहली बात है। उदाहरण के लिये, जब आप काम से वापिस आते हैं, मुझे पता है, कि

आप थके हुये हैं, पर केवल देखिये कि वह क्या कर रही है, पूछिये, यदि वह व्यस्त है तो उसकी सहायता करने का प्रयत्न करें, आप अपने प्रेम में क्या दिखाते हैं, यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है पुरुषों के लिये। अन्यथा आप इसे आराम से ले लेंगे कि आप विवाहित हैं। ऐसा नहीं है। सो, पहले घर आकर उससे अच्छी तरह बात करें। पूछो, वह क्या कर रही थी, कुछ चाहिये क्या...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

III. प्रभुत्व

जिस प्रकार मैं आपको प्रेम से नियंत्रित करती हूँ, वैसे ही आप पति को प्रेम से नियंत्रित करें :

''... प्रभुत्व जैसा कुछ नहीं है, कौन आपकी आत्मा को प्रभुत्व दिखा सकता है? कोई भी आप की आत्मा पर प्रभुत्व नहीं जमा सकता है, परन्तु यह एक समायोजन है क्योंकि समाज में पुरुष को सब बाह्य कार्य करने होते हैं। वह गति सम्बन्धी व्यक्ति है और आप शक्तिशाली ऊर्जा हैं।

सो, स्त्री को पुरुष का कहा मानना चाहिये क्योंकि वह अपनी ऊर्जा को इसके कारण बचा कर रखती है और प्रभुत्व जैसा कुछ नहीं है। कोई आपको दबा नहीं सकता, इसके विपरीत पुरुष पर ऐसा प्रभुत्व होता है, कि वह अपने काम के बाद सीधे घर आता है, इस प्रकार आपको पति को नियंत्रित करना चाहिये। प्रेम का नियंत्रण, जैसे मैं आपको प्रेम से नियंत्रित करती हूँ, आपको भी प्रेम से नियंत्रित करना चाहिये। प्रश्न यह है कि आप कितना प्रेम करती हैं, आप कितनी गौरवमयी हैं, कितनी सुन्दर हैं...''

(१९८०, विवाह और सामूहिकता, यू.के.)

आपको उसकी सहायता करने की ज़रूरत को देखना है, उसे समझना है :

''... वैसे भी, जैसा कि आप जानते हैं कि सहजयोग में हम आपस में एक-दूसरे के दोष नहीं निकालते रहते हैं। हम दूसरे व्यक्ति के अच्छे गुण देखते हैं और हमारे अन्दर क्षमा करने का महान सामर्थ्य है, सो, क्षमा करना, सहन करना या कष्ट पाना नहीं है, परन्तु आप क्षमा करते हैं क्योंकि आप

तेजस्वी हैं, आप सहजयोगी हैं। सो, सारे समय अपनी पत्नी के दोष नहीं निकालते रहिये। और सारे समय आप उसे आदेश नहीं देते रहें, यह करो, वह करो, परन्तु उसका हाथ बँटायें। क्योंकि सहजयोग में हम व्यक्तिगत अधिकारो में विश्वास नहीं रखते कि दूसरे पर प्रभुत्व जमायें। सो, आपको देखना चाहिये कि उसे किस सहायता की आवश्यकता है, उसे समझें और सब समस्यायें बाँट लें। उस पर समस्यायें नहीं डालें, परन्तु सहायता भरा हाथ बढ़ायें, जिस की आवश्यकता है। वह आपकी साथी है। वह आपकी दासी नहीं है, वह आपकी नौकरानी नहीं है और न ही आप उसके बॉस हैं...''

(२०००, दूल्हों एवं दुल्हनों के साथ बातचीत, दिल्ली)

अपनी पत्नी की ज़िन्दगी को उदासीन न बनायें-आनन्द पाने के कितने तरीके हैं :

''... सो, न्यायिक न बनें उन पर प्रभुत्व न जमायें, यदि वे आपसे पथ-प्रदर्शन माँगती हैं, तो ठीक है, परन्तु यदि पति सारे समय कहता है, 'यह करो, वह करो' तो वह उदासीनता देता है, नहीं क्या? आपको देखना चाहिये कि आप अपनी एवं पत्नी की ज़िन्दगी को उदासीन न बनायें क्योंकि ज़िन्दगी में आनन्द उठाने के अनेक तरीके हैं। यहाँ तक कि एक साथ बैठ कर आपस में बात कर के। परन्तु यदि आपको यह कला समझ नहीं आती है, तो हो सकता है, आप को समस्यायें आयें, पत्नी को समस्यायें आ सकती हैं...''

(२००१, दूल्हों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

आपको पता होना चाहिये कि पत्नी को कैसे प्यार करना चाहिये :

''... आपकी पत्नी होगी जो आपकी देखभाल करेगी, वह आपके प्रति दयालु होगी, वह आप से प्रेम करेगी क्योंकि वह सहजयोगिनी है और आपको भी उसके प्रति अत्यन्त दयालु होना चाहिये, उस पर प्रभुत्व न जमायें, अपने विचार उस पर नहीं थोपें। देखिये, कि उसे क्या चाहिये। आपको पता होना चाहिये कि पत्नी से कैसे प्रेम करना है, अन्यथा शादियाँ सम्भव नहीं है...''

(२००२, दूल्हों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

आप इन लड़कियों के साथ, पूरे विश्व की भलाई के लिये शादी कर रहे हैं :

''... इसलिये आक्रमकता इ. की अनुमति नहीं है, आप इन लड़कियों के साथ, विशेषकर पूरे विश्व की भलाई के लिये शादी कर रहे हैं। न केवल आपके अपने लिये, न केवल बच्चों के लिये, न परिवार, परन्तु पूरे विश्व के लिये। पूरे विश्व के सम्मुख आपको दिखाना है, कि आप बड़े विवेकशील, बुद्धिमान और अत्यन्त विकसित व्यक्ति हैं। यह निम्न स्तर के लोगों की शादी नहीं है, सो यह आपके ऊपर जिम्मेदारी है कि दिखायें कि आप बड़े परिपक्व हैं और आप में प्रकाशित होने की भावना है। आप हैं, प्रकाशित लोग और आप पूरे विश्व को प्रकाशित कर सकते हैं...''

(२००२, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

''...अब यदि मस्तिष्क, हृदय पर अत्यधिक दबाव डालता है, तो क्या होगा ? तब शुष्कता आ जाएगी...''

(१९८०, विवाह का महत्त्व, यू.के.)

IV. सुरक्षितता देना

उस लड़की के प्रति दयालु होना जिसकी शादी आपके परिवार में हुई है :

''... जैसे एक स्त्री सोचिये कि उसका पति जो सब के साथ झूठे प्रेमालाप करता है, उसकी आँखें अस्थिर हैं, तो वह स्त्री असुरक्षित हो जाती हैं। तब उसके मातृत्व को ललकार मिलती है, और जब ऐसा होता है, तो उसे छाती में बीमारी हो जाती है, 'ब्रेस्ट कैन्सर' आदि असुरक्षितता के कारण होते हैं। यदि एक स्त्री असुरक्षित है, वह किसी भी कारण से असुरक्षित है, तो उसे ब्रेस्ट कैन्सर हो जाता है।

जब हम दूसरों के प्रति क्रूर होते हैं, तो हमें पता नहीं कि हम उन्हें कैन्सर दे रहे हैं। जिस लड़की की शादी हमारे परिवार में हुई है उसके प्रति दयालु होने में क्या लगता है ? वह हमारे घर आई हैं। दूसरों को चुभती हुई बातें कहने में हम प्रवीण हैं। हम बचपन से ही सीखते हैं कि किस प्रकार लोगों से बात करें ताकि वे वास्तव में दुःखी हो। उन्हें दुःख पहुँचा कर हम उन्हें कैन्सर दे रहे हैं, परन्तु इस बात

की समझ तभी आती है, जब आपको साक्षात्कार मिल जाता है...''

(१९८२, बिकमिंग द नॉलेज, सार्वजनिक कार्यक्रम, यू.के.)

हर समय अपनी पत्नी की 'साईड' (समर्थन) लें, बाद में आप उससे बात कर सकते हैं :

''... एक सहजयोगी दूसरों के लिये जीता है, स्वयं के लिये नहीं, शुरूआत अपनी पत्नी से करें। यदि समस्यायें हैं, तो निश्चित ही वे सुलझाई जा सकती हैं। आप मुझे लिख सकते हैं, हम जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु प्रथम आप को भावनिक सन्तुलन रखना है। उसे समझना जरुरी है। यदि पत्नी अप्रसन्न है, तो आपको पूछना चाहिये, 'क्यों? क्या बात है?'

सदैव उसके साथ खड़े होईये, चाहे आपके माता, पिता या अन्य कोई भी हो, उसका साथ दें और फ़िर बतायें कि, 'सही बात क्या है। परन्तु यदि आप विपरित दिशा को लेंगे तो उसे समझ नहीं आयेगा, परन्तु यदि आप उसका समर्थन करें..... उसका आत्म-सम्मान स्थापित करें। उसे यह अनुभव करने दें कि वह किसी के द्वारा भी अपमानित नहीं की जायेगी। यदि कोई आपकी पत्नी का अपमान करता है, तो उस समय आप उसके साथ खड़े होईये, बाद में आप जाँच कर सकते हैं। किसी की हिम्मत नहीं होनी चाहिये कि आपकी पत्नी से कुछ कहे, कुछ उसके साथ करे, परन्तु अपनी पत्नी का समर्थन करें हमेशा क्योंकि आखिर वह एक सहजयोगिनी भी है और आप बाद में उसके साथ बात कर सकते हैं और पूछ सकते हैं कि क्या बात है? उसे शयनकक्ष में ले जाकर पूछें, 'क्या हुआ?'

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

अपनी माँ की बात नहीं सुने। पत्नी की बात पहले सुनें और जानिये की समस्या क्या है? :

''... उससे इस प्रकार बात करें कि उसे लगे कि आप उसके पति हैं और वह आपकी पत्नी। यह एक प्रकार की कला है और चूंकि आप लोग सहजयेगी हैं, आपको विश्व को दिखाना है कि, 'सहजयोग के कारण हमारी

शादी बड़ी सफ़ल है।' अपनी माँ की मत सुनें, किसी और की मत सुनें, प्रथम पत्नी की बात सुनें और जानें कि समस्या क्या है। अन्यथा ऐसी शादियाँ टूट जाती हैं। जब आपकी शादी हो चुकी है, तो आपको किसी और स्त्री में कोई रूचि नहीं दिखानी चाहिये। कोई भी रूचि नहीं। पहले आपकी पत्नी है क्योंकि वह अनावश्यक रूचि पर स्त्रियों में, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। आपकी अपनी स्त्री है। अपनी पत्नी है। आपको दूसरी स्त्रियों में क्यों रूचि होनी चाहिये?...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

एक पत्नी :

''... समाज में, हमें जानना चाहिये, कि हम वास्तव में तभी आनन्द ले सकते हैं, यदि एक पत्नी हो। आप का समाज भी इससे आनन्द ले सकता है और आप भी बेहतर जीवन का आनन्द पा सकते हैं, यदि आपकी एक ही पत्नी है, जिसे आप प्रेम करते हैं और वह आप से प्रेम करती है।

आधुनिक समाजों में हम क्या देखते हैं कि चाहे शादी हो चुकी है, चाहे दस बच्चे हैं, बूढ़े पुरुष दुल्हनें ढूँढते फ़िरते हैं। यह ऊर्जा व्यर्थ गँवानी है, पूर्णतया आनन्दरहित मूर्खता...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लंदन)

V. पत्नी पर विश्वास करें

पत्नी पर संदेह न करें :

''... कोई भी सहजयोगी आपके घर आता है, विशेष कर भारतीय स्त्रियाँ, मेहमानों की बड़ी अच्छी देखभाल करेंगी। फ़िर एक प्रकार की जलन (मत्सर) बाहर आती है। यह निरर्थक है। भारतीय स्त्रियां किसी को भी अपना पति नहीं बनायेंगी, केवल उनका अपना पति। सो, ऐसे अजीब विचार न रखें, कि वह बड़ी मित्रता रखती है, सब लोगों की देखरेख करती है, यह और वह। इस प्रकार की मूर्खता नहीं होनी चाहिये। सहजयोग में वे सब बातें नहीं हैं, वे अत्यन्त पवित्र हो गयी हैं, उनकी आँखें इतनी पवित्र हैं। सो, अपनी पत्नियों

के विषय में कोई सन्देह न रखें। इसी से पत्नियों को अधिक प्रसन्नता एवं विश्वास मिलेगा...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपति पुले)

VI. चिंता और गुण सराहना

वह आपकी साथी है, वह आपकी मित्र है, वह सबकुछ है आपके लिये:

''... मैंने आपको यह बनाने के लिये बुलाया है, कि आपको अपने वैवाहिक जीवन का आनन्द लेना है और एक बात आपको स्मरण करनी है- अकेले, आप नहीं कर सकते। सो, वह आपकी साथी है, वह आपकी मित्र है, वह आपके लिये सब कुछ है, इस बारे में सुन्दर भावना रखें। मेरा अर्थ है, कि कुछ लोग अत्यधिक रोमांटिक होते हैं और कुछ बिल्कुल भी नहीं, सो, किसी चीज़ की अतिशयता की आवश्यकता नहीं है, परन्तु सहजयोगी होने के नाते, आप को अपनी पत्नी के गुणों की सराहना करनी चाहिये और सहजयोग विवाह की...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

यह सब मीठी-मीठी बातें बड़ी सहायक होती हैं :

''... मैंने कुछ बड़े ही अच्छे पति देखे हैं, वे बड़े परिश्रमी हैं, उनके पास पत्नियों के लिये कोई समय नहीं है, सो, वे बार-बार फोन करेंगे और पूछेंगे कि आप कैसे हो। मैं आपको श्री.लालबहादुर शास्त्री जी का उदाहरण दूंगी। वे अपनी पत्नी को बहुत पसन्द करते थे। उनकी पत्नी एक साधारण स्त्री थी, ज़्यादा पढ़ी-लिखी नहीं। साधारण परिवार से थी। परन्तु एक बार मैं उनके घर में थी, सुबह करीब दस बजे मैं वहाँ थी और उन्होंने उसे दफ़्तर से एक पत्र भेजा कि, 'मैं जल्दी उठ गया था और रोज़ की भाँति स्नान इत्यादि किया और आप सो रही थी और मैं आपके नींद में विघ्न नहीं डालना चाहता था। क्योंकि पिछली रात आप सोई नहीं थी, इसलिये मैं आप के नींद में विघ्न नहीं डालना चाहता था। मुझे क्षमा करना, परन्तु मैंने अभी तक चाय नहीं पी है, सो, क्या मैं आकर आपके साथ चाय पी सकता हूँ।'

हम एक दूसरे के बड़े समीप थे। देखिये, कितनी छू लेने वाली बात है। वे आयें, मैंने देखा और मैं चकित थी, भारत का प्रधानमंत्री। उन्हें देखिये, वे पत्नी के लिये कितने चिन्तित थे। वे आये और उनके साथ चाय पी। मैंने अपने आप को छुपा लिया। मैंने कहा कि, 'मैं हस्तक्षेप नहीं करना चाहती हूँ।'

ये सब मीठी-मीठी बातें आपको बहुत सहायता देती हैं और हालांकि श्री.शास्त्री जी इतने व्यस्त व्यक्ति थे, वे सदा पत्नी और परिवार के बारे में सोचते थे। जब मैं वहाँ पर थी, मैं हैरान हो गयी, उन्होंने अपनी बेटियों से कहा, 'तुम लोग अपने बच्चों की देखभाल करो, मेरी पत्नी नौकरानी के समान नहीं काम करेगी, मैं उसे आया नहीं बनने दूंगा, तुम ध्यान देना।'

सो, बच्चों की तुलना में पत्नी को कितना विनीत आचरण दिया गया था। ऐसा होना चाहिये। आप देखिये, इस प्रकार हम दूसरे व्यक्ति के साथ रहना सीखते हैं। सदैव यदि आप अपने बारे में सोचते रहेंगे, 'मुझे क्या आराम मिला, यह खाना अच्छा नहीं था। यह सहजयोगी के समान रहना नहीं है...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

पति को देखना है, कि उसकी पत्नी कैसे व्यवहार करती है :

''... यह बायीं नाभि, दायीं नाभि विशेषकर बायीं नाभि, एक बड़ी समस्या है, जहाँ एक स्त्री को गृहलक्ष्मी होना चाहिये और पति को 'रोमियो' नहीं होना चाहिये, परन्तु पति होना चाहिये। उसे देखना चाहिये कि उसकी पत्नी कैसे व्यवहार करती है, उसे सुधारें-वह उसका कार्य है, उसका कर्तव्य है, उसे इससे बचना नहीं चाहिये...''

(१९९१, हम्सा पूजा, न्यूयौर्क)

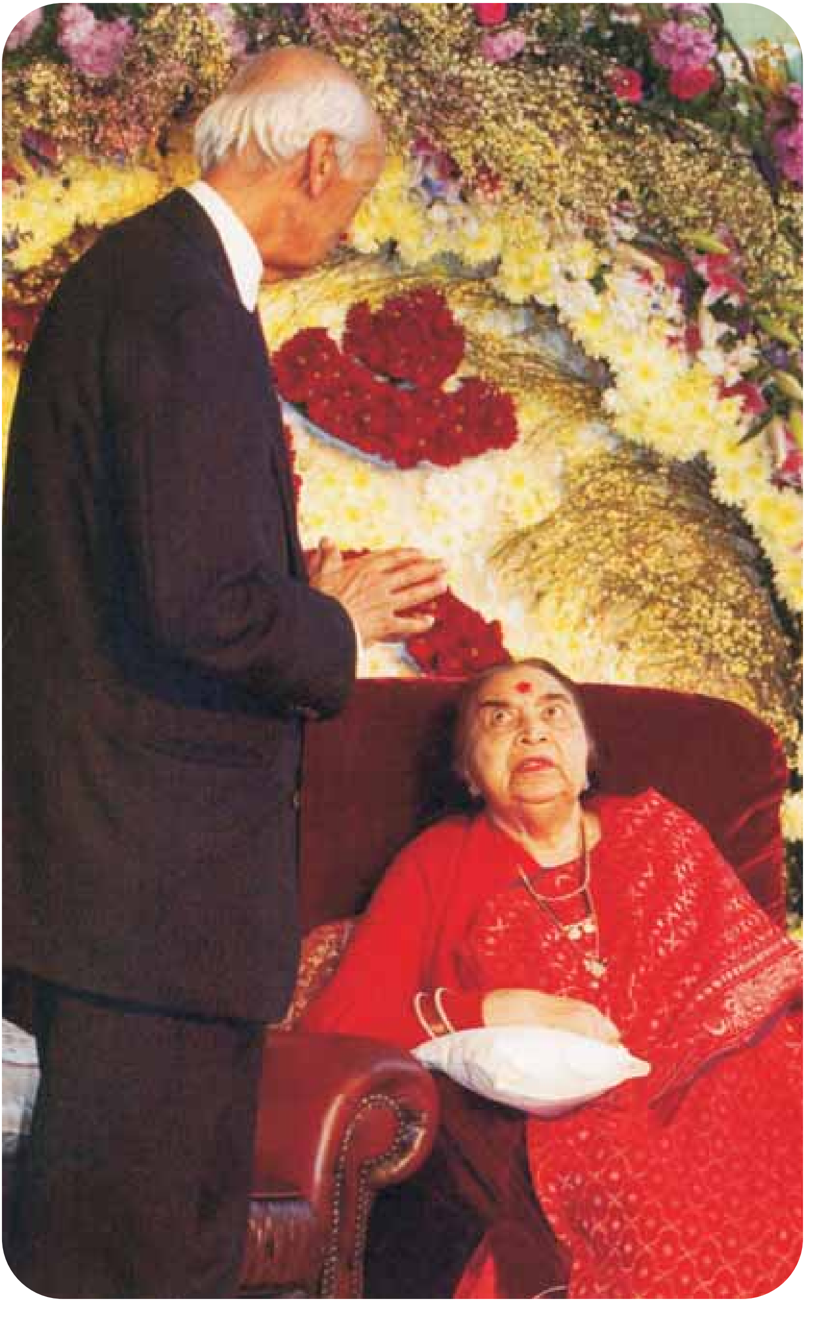

सज्जनता

आपके पास प्रेम एवं करूणा की इतनी महान शक्ति है :

''... अन्य लोगों की उपस्थिति में आपको उस पर चिल्लाना नहीं चाहिये और सब के सामने सुधारना नहीं चाहिये। किसी भी पति को पत्नी पर चिल्लाना नहीं चाहिये। मुझे यह बात समझ नहीं आती है कि पति को क्यों चिल्लाना है? यह दर्शाता है, कि बड़ा खराब लालन-पालन हुआ है। हम सब सहजयोगी हैं। आप मेरे द्वारा बड़े हुये हैं, मैं आप की माँ हूँ। कृपा कर के अपनी पत्नियों पर कभी नहीं चिल्लायें, कभी अपना क्रोध न दिखायें। मेरा तात्पर्य है, कि कुछ बड़ी साधारण बातें प्रेम द्वारा हल की जा सकती हैं। जैसे मैं आप से प्रेम करती हूँ, आप मुझ से प्रेम करते हैं और यदि आप में कुछ खराबी आती है, मैं आप पर कभी नहीं चिल्लाऊंगी, कभी नहीं। मैं क्या करूँगी? मैं आपको बड़े प्रेम से समझाऊंगी।

आपके पास इतनी महान शक्ति है, प्रेम एवं करूणा की। यदि आप अपनी पत्नी से प्रेम नहीं कर सकते, तो किस से प्रेम करेंगे? बच्चों से अधिक, किसी से भी अधिक। आप अपना थोड़ा सा प्रेम बाँटें, और आप हैरान हो जायेंगे...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

उनके प्रति दयालु रहें, सज्जन रहें :

''... मैंने देखा है, छोटी-छोटी बातों के लिये भी सहजयोगी अपनी पत्नियों के साथ क्रोधित हो जाते हैं, उदाहरण के लिये। मैं आपकी माँ हूँ, सबकुछ हूँ। परन्तु कभी यदि आप की पत्नी पूजा में कोई गलती करती है या किसी और चीज़ में.....समझने का प्रयत्न करें। मुझे फ़र्क नहीं पड़ता है। बाद में आप उससे कहें, 'यह गलती थी, आपको नहीं करनी चाहिये थी, वह हमारी माँ हैं।' और वे इसका मान करेंगी। परन्तु यदि आप चिल्लाते जायेंगे, तो उनके बीच अन्तर आ जायेगा। यदि इस प्रकार आप उनसे बात करेंगे, तो

उन का पूरा जीवन बदल जायेगा। उन के प्रति दयालु रहें, सज्जन रहें, अत्यधिक, यह आवश्यक है।

विशेषकर, मैंने देखा है, कि पाश्चात्य जीवन में, लोगों को यह सिखाया ही नहीं गया है, कि पत्नी के साथ कैसे व्यवहार करें। ऐसी कोई व्यवस्था ही नहीं है, भारत में यह है। जब वे पहले मिलते हैं, पति और पत्नी, तो एक बड़ा उत्सव होता है और सब चीज़ों को करने का कोमल तरीका होता है...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

आपको धीरे व कोमलता से आगे बढ़ना चाहिये :

''... चाहे सम्बन्ध है, परन्तु आपको इसे स्थापित करना है। आपको धीरे-धीरे व कोमलता से सीधी तरह से आगे बढ़ना है, यह नहीं कि स्त्री पर उछल पड़े, यह सही नहीं है। हमारे पास तीन-चार किस्से इस प्रकार के थे, इतने अधिक नहीं, इतने सालों तक, पर फ़िर भी उससे कोमलता से व्यवहार करें, कोमलता से बात करें...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

उन्हें यह देखने दें कि आप बुद्धिमत्ता में ऊँचे हैं और विवेकशील हैं :

''... मैं यह जान कर बड़ी प्रसन्न हूँ। सो, आपको ज़्यादा विवेकशील होना है और पत्नी को समझाना है, 'अब यह, यह है और यह, यह है।' उन्हें यह देखने दें कि बुद्धिमत्ता में आप अधिक ऊँचे हैं, न केवल वह, पर आप बड़े विवेकशील हैं। आध्यात्मिकता में आप समझते हैं। तब वे आपका कहा मानेंगी। दयालु रहें, अच्छे रहें, वे अपने माता-पिता को छोड़ रही हैं, वे अपने परिवारों को छोड़ रही हैं और कुछ तो अपने देशों को भी छोड़ रही हैं। इसलिये दयालु रहें, कोमल रहें और किसी भी बात पर क्रोधित न हों। क्रोधित होने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। मेरे पूरे जीवन में मैं कभी क्रोधित नहीं हुई हूँ।

सो, यह दर्शाता है, कि बिना किसी आवश्यकता के लोग क्रोधित हो जाते हैं, कोई ज़रूरत ही नहीं है। केवल चुप रहें। यदि कुछ अच्छा नहीं लगता

है, तो चुप रहें, पर अपना गुस्सा मत दिखायें। आपको दिखाना है, कि आप विवेकशील, प्रतिष्ठित लोग हैं। मैंने देखा है, कुछ पति चीज़ें फेंकते हैं, चिल्लाते हैं, हर प्रकार की चीज़ें करते हैं। तो पत्नी आप के लिये सम्मान कैसे रख सकती है, जब तक कि आप सम्माननीय न हों। आप उनके प्रति दयालु होंगे, अच्छे होंगे। मैं यह नहीं कह रही कि आप उन्हें बिगाड़ दें, बिल्कुल नहीं। यदि आपको लगता है, कि कुछ खराबी है, तो उसे बैठने दें, स्वयं बैठें और उसे समझायें कि सहजयोग के दृष्टिकोण से यह ठीक नहीं होगा, ठीक है...''

(२००२, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

श्रीराम पूर्णतया शोभायुक्त पुरुष थे :

''... और यह इस राक्षस की बहन के साथ था, शूर्पनखा। सो, आज कल यदि कोई स्त्री भारत में वैसे व्यवहार करती है, पुरुषों को आसक्त करने का प्रयत्न करती है, तो उसे शूर्पनखा कहते हैं। सो, यह स्त्री आयी और श्रीराम को आकर्षित करने का प्रयत्न किया, कितनी निर्लज्जता, सोचिये। श्रीराम तो संकोचित थे-वे पूर्ण शोभायुक्त पुरुष थे, उन्होंने उससे कहा, 'देखो, मेरे पीछे भागने का क्या लाभ है, मेरे पास पहले ही एक सुन्दर पत्नी है।' उन्हें पता था, कि उनका भाई शेषनाग है-शेषनाग एक बहुत बड़ा साँप है, और वह बड़ा गुस्सैल है, उसे पता होगा कि कैसे इस स्त्री से निपटना है और 'मैं इस दृश्य को नहीं सम्भाल सकता हूँ।' क्योंकि वे एक स्त्री के साथ अभद्र व्यवहार नहीं कर सकते थे, यह उनके लिये अत्यधिक था, चाहे वह शूर्पनखा थी, वह एक स्त्री थी। सो, उन्होंने उससे कहा, 'आप जा कर उसे देखो।' लक्ष्मण बाहर बैठे थे। लक्ष्मण ने शपथ ली थी कि वे चौदह वर्ष की तपस्या में ब्रह्मचारी रहेंगे, चाहे वे विवाहित पुरूष थे। यह उन्हें करना था, क्योंकि इसी प्रकार वे एक दूसरे राक्षस को मार सकते थे, जिसका नाम मेघनाद था, सो, वह ब्रह्मचारी लक्ष्मण के पास गयी, उनकी पत्नी अयोध्या में थी और वे ब्रह्मचारी का जीवन बिता रहे थे। यह भारत में साधारण बात है, यदि आपकी पत्नी दूर गयी है, तो आपको केवल उसका ही सोचना है और उसके बारे में सोच कर ही आप आनन्द लेते हैं। आप सोचते हैं, कि क्या अच्छी चीज़ें उसने आपके लिये की हैं। परन्तु यदि उसने हर समय बुरे काम किये हैं, तो आप उसके विषय में नहीं सोचना चाहते हैं और तब ये सब राक्षसी चीज़ें शुरू होती हैं। ठीक है?

सो, यह जब उसने शुरू किया, तो उसने बड़े अच्छे कपड़े पहने, बड़े आकर्षक रूप में, अपने शरीर के प्रदर्शन का प्रयत्न किया, बड़ी अजीब तरह से, न कि परम्परागत भद्र तरीके से, बड़े ही अभद्र और अशोभनीय प्रकार से, केवल आकर्षित करने के लिये। लक्ष्मण उससे इतने क्रोधित हो गये कि उसकी नाक काट दी ताकि वह इस प्रकार का व्यवहार किसी और के साथ न करें और अपने झूठे घमण्ड से हट जाये, उसका अहंकार खत्म करने के लिये, क्योंकि नाक ही वास्तव में अहंकार की अभिव्यक्ति करता है।

सो, जब उन्होंने उसकी नाक काट दी-नाक को नासिका कहते हैं संस्कृत में। यह स्थान था जहाँ नाक काटी थी और इसलिये इस स्थान को नासिक कहते हैं। अब हमें याद रखना है कि हम ऐसे स्थान पर आये हैं, जहाँ नाक कट सकती हैं, सो हमें सावधान रहना है और इस बात का ध्यान रखना है, कि हमें कोई ऐसा लक्षण नहीं दिखाना है, जो शूर्पनखा ने दिखाया। अब से हमें इस प्रकार से व्यवहार करना है, कि हम सहजयोगी हैं और सहजयोगिनी हैं। हमें वह सही प्रकार का चरित्र रखना है, जो अन्दर की निर्मलता से आता है...''

(१९८५, पूजा, नासिक, भारत)

पति और पत्नियाँ

विवाह का अर्थ है आनन्द देना। श्रीमाताजी ने कहा कि, 'प्रेम करने और विश्वास करने में प्रतियोगिता होनी चाहिये, ईमानदारी और दया में।' उन्होंने इस बात का भी संकेत किया है कि रोमान्स के जाल में फँसना हमारे उत्थान के लिये खतरनाक है।

श्रीमाताजी ने वैवाहिक जीवन के अनेक पहलुओं के विषय में परामर्श दिया है : उदारता, एक होने की भावना, सम्मान, आपसी समझदारी....इत्यादि उनमें से कुछ हैं।

सहजयोग के विवाह का एक कारण है कि पति और पत्नी दोनों सहजयोग के प्रसार में भाग लें। यदि दोनों पति और पत्नी अपना वैवाहिक जीवन, श्रीमाताजी और सहजयोग पर चित्त रख कर व्यतीत करें, तो विवाह प्रेम, गहराई, एकता और सफ़लता से परिपूण होगा।

विवाह की शुरूआत

यदि सहजयोग में भी प्रतिकूलता है, तो अनुकूलता कहाँ होगी :

''... कुछ लोग शुरू में बड़ी दूर हैं, वे सोचते हैं, 'इस लड़की के घुंघराले बाल हैं'-समाप्त- 'उसका पिता यह होगा, वह ऐसा होगा, यह ऐसी होगी।' इस प्रकार। या लड़की अपने पति के बारे में शायद सोच रही हो, 'ऐसा हुआ होगा, मैं इसलिये अभी भी बैठ कर न्याय कर रही हूँ, मुझे कुछ समय लगेगा, इसमें कुछ प्रतिकुलता है।' यह नया शब्द है (इनकम्पेटिबिलिटी) मैंने इस शब्द को सीखा, जब मैं इंग्लैंड गयी, पहली बार। मुझे नहीं पता था कि यह 'प्रतिकूलता' क्या होती है। यदि सहजयोग में भी प्रतिकूलता है, तो अनुकूलता कहाँ होगी? मेरा अर्थ है, कि क्या कोई नाप-तोल है, जिससे हम अनुकूलता और प्रतिकूलता जान सकते हैं। ये सब विचार आपको मनोवैज्ञानिकों द्वारा दिये गये, समुद्र में फेंक देने चाहिये। अब हम वहाँ जा रहे हैं और संभव हो तो इन सब मनोवैज्ञानिकों को भी वहाँ फेंक दो...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

विवाह में हमें देना सीखना है, जो कि देने की एक व्यवस्था है :

''... परन्तु सब कार्यान्वित हो जाता है, धीरे-धीरे हम सुधर सकते हैं, हमारे अन्दर धैर्य होना चाहिये। यदि पहले दिन ही आप किसी चीज़ की फ़र्माईश शुरू कर देते हैं, तो यह कार्यान्वित नहीं होगा। विवाह में हमें देना सीखना है, जो कि देने की एक व्यवस्था है। हमें देना है। हमें कुछ त्यागना है। आपके पास ऐसा क्या है, जिस का बलिदान देना है? ये सब निरर्थक बाते हैं। अपनी आत्मा का आप बलिदान नहीं कर सकते हैं, सो आप आत्मा में रहें, आप क्या बलिदान करने वाले हैं? मेरा अर्थ है, कि आप को क्या देना है? तभी आप आनन्द पा सकते हैं, तभी आप आत्मा का आनन्द ले सकते हैं...''

(१९९०, विवाह-स्त्रियों को परामर्श, भारत)

वे एक-दूसरे का न्याय करना शुरू कर देते हैं :

''... मेरा अनुभव है, कि पाश्चात्य के लड़के अत्यधिक दयालु होते हैं, पूर्व की लड़कियों के प्रति अत्यधिक दयालु होते हैं, कभी-कभी तो उन्हें बिगाड़ने की सीमा तक। और पश्चिम की लड़कियां, जब वे भारतीय लड़कों के साथ शादी करती हैं, तो वे अत्यन्त मधुर एवं अच्छी होती हैं-अधिकतर, उनमें से। वे अत्यन्त अच्छे व कोमल होते हैं। मुझे पता नहीं कि क्या हो जाता है, जब वे अपने देशों के लोगों के साथ शादी करते हैं, तब वे अपने पाश्चात्य ढ़ंग से कार्यान्वित करना शुरू कर देते हैं। जब वे आपस में शादी करते हैं, तो वे कहते हैं कि हमें कार्यान्वित करना पड़ेगा। हमें स्वयं देखना है, हमें निर्णय करना है, सब प्रकार की बातें वे कहते हैं, इसे आप को छोड़ देना चाहिये, क्योंकि मुझे लगता है, कि दोनों व्यक्तियों में एक सी आदतें, बंधन होते हैं और तब वे बंधन सात गुना अधिक हो जाते हैं, तब वे एक-दूसरे का न्याय करना शुरू कर देते हैं, 'वह ऐसा है, वह ऐसी है' और ये बातें होती हैं...''

(१९९१, विवाह के पूर्व बातचीत)

सज्जनता अत्यन्त महत्वपूर्ण है :

''... लालन-पालन के कारण लोगों को यह बोध नहीं है कि शादी एक बार के लिये ही होती है। जिस प्रकार आपका एक बच्चा है, उसी प्रकार एक पति है या एक पत्नी है, आप को छोड़ना नहीं है, क्योंकि कोई प्रेम नहीं है। उनमें कोई प्रेम नहीं होता है और यदि प्रेम हो भी तो कोई सज्जनता नहीं है।

सज्जनता बड़ी महत्वपूर्ण है। कैसे आप व्यक्ति को छूते हैं, कैसे उससे बात करते हैं, कैसे आप दूसरे व्यक्ति के सम्मान का ध्यान रखते हैं और आप यह भी देखें कि उस व्यक्ति को क्या पसन्द है। जिस प्रकार आप मुझे प्रसन्न करने का प्रयत्न करते हैं, उसी प्रकार एक-दूसरे को प्रसन्न करने का प्रयत्न करें। यह इतना कठिन नहीं है। मुझ में कुछ कमी है इसलिये मैं आपको प्रसन्न कर रही हूँ, ऐसा सोचने का प्रश्न ही नहीं उठता है, नहीं। सहजयोगियों को प्रसन्न करने वाले व्यक्तित्व का होना है और आप को पूर्णतया कोमल होना है, विशेषकर पहले कुछ दिन। आप अपने ऊपर थोड़ा नियंत्रण रखने का प्रयत्न

करें, क्योंकि पहले कुछ दिनों में सब चिंगारियां निकलती हैं। और ये थोड़े दिन से ही बड़ा फ़र्क पड़ता है...''

(१९९१, विवाह के पूर्व बातचीत)

वह क्षण है, जिसमें आपको सर्वाधिक समझदारी दिखानी है और प्रेम दिखाना है, दूसरे व्यक्ति के प्रति :

''... मुझे अनेक अनुभव हुये हैं। पहले दिन ही वे बोलना शुरू कर देंगे, 'मैं तुम्हें यहाँ देखना नहीं चाहता, तुम बाहर जाओ, मैं तुम से घृणा करता हूँ।' मुझे लगता है, कि ये बाते उन्होंने किसी सिनेमा से ली होंगी, परन्तु यह वास्तविकता नहीं है। वास्तविकता में तो आप इस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप अपनी दुल्हन के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, अपने दूल्हे के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं और वह क्षण है, जिसमें आपको सर्वाधिक समझदारी और प्रेम दूसरे व्यक्ति के प्रति दिखाना है, अपने प्रति नहीं। जैसे कि, मुझे यह अच्छा लगता है, मैं यह चाहती हूँ। यदि आप इस प्रकार शुरू करेंगे, तो यह स्वयं केन्द्रित है, परन्तु आपको क्या पसन्द है, कैसा खाना पसन्द है, इस प्रकार के कोमल प्रश्न! यदि आप कोमलता से शुरू करेंगे तो यह बड़ी अच्छे प्रकार कार्यान्वित होगा। जो भी भद्रता से शुरू होता है, बड़ा अच्छा कार्यान्वित होता है। परन्तु भारी भरकम शब्द या गर्व से भरे नहीं, विनम्र, मधुर प्रकार से। यदि कोई कुछ कहे भी तो उस बात को त्याग दें और कहें, 'ओह, ठीक है, यह कार्यान्वित होगा'...''

(१९९१, विवाह के पूर्व बातचीत)

प्रेम और सराहना

I. एक-दूसरे को समझो, आनन्द लो और सराहो

यह बड़ा अच्छा लेना-देना है और इतना सुन्दर है, उसके लिये वैवाहिक जीवन की कुंजी है-पवित्रता :

''... हम सब, हर समय आपके साथ हैं आपकी सहायता के लिये, ताकि आपका सम्बन्ध कायम रहे। हम सब को यह देखना चाहिये कि हम उनके सम्बन्ध को कायम करें, उन्हें वैवाहिक जीवन की मधुरता का अनुभव करायें। जो भी आप छेड़-छाड़ करते हैं, उससे उनका सम्बन्ध और अच्छा होना चाहिये। उनके साथ का आनन्द हमारी ओर इस प्रकार बहना चाहिये, जिस प्रकार तरंगे किनारे पर आती है और फिर वापिस समुद्र में लौट जाती हैं। इसी प्रकार यह लेना-देना, इतनी सुन्दर अवस्था होनी चाहिये।

उसके लिये वैवाहिक जीवन की कुंजी है-पवित्रता। पवित्रता ही एक रास्ता है, जिससे आप अपने वैवाहिक जीवन को ठीक रख सकती हैं। भूतकाल में जो भी हुआ है, भूल जाओ। अब नया जीवन शुरू हो रहा है। इसके बाद अपनी पत्नी या पति से कुछ नहीं छुपायें। सब कुछ बताया जाना चाहिये, सच्ची जिन्दगी होनी चाहिये, पूर्णतया सच्ची, स्पष्ट, अत्यन्त पवित्र। इस पवित्रता को रोज की जिन्दगी में रखेंगे, तो शीघ्र ही जीवन में दिखायी देगा कि विवाह सदा व्यक्ति को उन्नत करता है। पवित्रता वैवाहिक जीवन की कुंजी है और मैं आशा करती हूँ कि आप इन शब्दों को याद रखेंगे। अपने दिमाग को पवित्र रखने का प्रयत्न करें। अपनी पत्नी पर, संदेह न करें और न ही धोखा दें और इसी प्रकार पत्नी, पति पर...''

(१९८१, विवाह का अर्थ है आनन्द देना, लंदन)

कब :

''... सो, यह सिद्धान्त (अबोधिता) सब से अधिक प्रसन्नता देने वाला सिद्धान्त है मनुष्यो के लिये, बच्चों को देखना, उनके साथ खेलना, उनके संग

का आनन्द लेना। क्यों? क्योंकि इसमें बच्चे की मधुरता है, यह वास्तव में, आपके अन्दर के आनन्द को छू लेता है। जब आप एक बच्चे को देखते हैं, तो उसी समय चेहरा अलग प्रकार का हो जाता है। मैंने आपको बताया है, कि मैंने मगरमच्छ को अपने अंडों को फ़ोड़ते हुये देखा है, एक फिल्म में दिखाया गया था और उस समय आपको मगरमच्छ की आँखों को देखना चाहिये था, कितनी सावधानी से वह फोड़ रही थी। उसकी आँखें इतनी सुन्दर थीं उस समय, आँखों से प्रेम बह रहा था। आप विश्वास नहीं कर सकते कि ये उसी मगरमच्छ की आँखें हैं और इतने धीरे से वह अपने मुँह में सब अंडों को फ़ोड़ रही थी और छोटे-छोटे मगरमच्छ बाहर निकल रहे थे...''

(१९८५, देवी पूजा, सॅन दिएगो)

जैसे हो, वैसे एक-दूसरे का आनन्द लें :

''... वैवाहिक जीवन के आनन्द को पाने के लिये बड़ा साधारण तरीका है कि आप समझें कि वह आपका पति है और वह आपकी पत्नी है। यदि आप सोचें कि यह मेरा घर है, मुझे यहाँ रहना है, तो समझ लें कि आपको इस घर में प्रसन्नता से रहना है किसी और के घर के पीछे नहीं दौड़ना है। यह वास्तविकता है, कि यह मेरा घर है। मुझे यहाँ रहना है और मुझे इसका आनन्द लेना है, परन्तु यदि मैं दूसरे घरों को देखना शुरू करूं तो मैं कभी भी खुश नहीं रह सकती। उसका कोई अन्त नहीं है। यह मूर्खता है। जो हमारे पास है, उस का आप आनन्द नहीं लेना चाहते और हम कुछ और ही चाहते हैं तो फिर आप कभी भी प्रसन्न नहीं हो सकते हैं। इसी कारण से आर्थिक नियम कार्यान्वित हो जाते हैं, क्योंकि वे आपको यह भावना देते हैं कि आपके पास और अधिक, और अधिक, और अधिक होना चाहिये। परन्तु सहजयोग के पश्चात्, ये सब नियम असफ़ल हो जाने चाहिये, केवल परमात्मा के नियम कार्यान्वित होने चाहिये।

वैवाहिक जीवन में भी यदि आप दूसरे पुरुषों या स्त्रियों को देखना शुरू करते हैं कि वे बेहतर हैं, मेरा अर्थ है, कि आपका अपना पति है, अपनी पत्नी है, आपस में आनन्द लें, यह मूर्खता है कि किसी और का आनन्द लेने का प्रयत्न करना, जो आपका है ही नहीं। यह मूर्खता है, सो, इस जीवन का

आनन्द लेकर उसको सर्वोत्तम बनाये। किसी और की पत्नी को देखना, किसी और के पति को देखना और हर समय सोचना, 'ओह्, वह मेरी पत्नी हो सकती थी', 'वह मेरा पति हो सकता था।' यह निरर्थकता है, पूर्ण मूर्खता है। यह इस प्रकार है कि, आप किसी के बालों को देखें, 'काश! उसके बाल मेरे होते।' क्यों? आप मूर्खता को देखिये, या 'उसकी नाक मेरी होनी चाहिये।' यह आपकी नाक है, ठीक है? यह इतनी मूर्खता है, जितनी कि वह।

इसी प्रकार, आपका परिवार, आपका घर, आपके बच्चे, आपके अपने हैं, आपका अंग-प्रत्यंग। सो, यदि वे आपके अंग-प्रत्यंग हैं, तो उसमें कुढ़ने की क्या बात है, कि, 'तुम यह मत करो, यह पीओ, तुम वह मत करो।' यह क्या है? यह मेरा पति है, जैसा वह है बस! इतना साधारण है, यह, इसे कहने के लिये है कि जैसा भी आपका पति है, वह आपका पति है...''

(१९८६, बैल्जियम और हॉलैण्ड की भूमिका, बैल्जियम)

आप अपने विवाह को कार्यान्वित नहीं कर सकते, यह सहज ही हो जाता है :

''... सो, रोमियो और जूलियट मत बनों, सन्तुलित लोग रहो। हमें अत्यन्त सन्तुलित और स्वस्थ जीवन बिताना है। विवाह माध्यमिक बात होना चाहिये, प्रथम नहीं। और, 'मुझे इसे कार्यान्वित करना ही है।' आप विवाह को कार्यान्वित नहीं कर सकते, वह इस प्रकार होगा जैसे पौधा बना रहे हैं और आप सोचते हैं कि मुझे इसे कार्यान्वित करना है ताकि यह ठीक से ऊपर उठे। आप इसे कार्यान्वित नहीं कर सकते हैं, यह सहज है। इसे व्यवस्थित नहीं किया जा सकता है। 'मुझे अपने विवाह को व्यवस्थित करने दो।' आप इसे व्यवस्थित नहीं कर सकते हैं-यह सहज है। परन्तु, 'मैं अपने जीवन का आनन्द लूंगा, मैं अपने वैवाहिक जीवन का आनन्द लूंगा, मैं अपने पति का आनन्द लूंगी।' इस प्रकार की सोच रखेंगे तो सब कार्यान्वित हो जायेगा, ठीक हो जायेगा...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

आप सब मेरे भरोसे पर हैं :

''... अब सब एक-दूसरे का ध्यान रखें, एक-दूसरे के साथ सावधानी

से व्यवहार करें। आप सब मेरे 'ट्रस्ट' में हैं, मैं आशा करती हूँ, कि आप सब को एक-दूसरे के लिये मधुर भावनायें होंगी और आप स्वयं को एवं दूसरे व्यक्ति को क्षमा करने का प्रयत्न करेंगे, वह हमारे विवाहों का आधार है, धन्यवाद...''

(१९९१, विवाहों के पूर्व बातचीत)

अब आप अपने वैवाहिक जीवन का अपने बचपन से भी अधिक आनन्द लें अपनी यौवनावस्था या किसी भी अन्य समय से अधिक :

''... मैं सोचती हूँ कि इन सब भाषणों का कोई लाभ नहीं है, जब तक कि आप अपने वैवाहिक जीवन का आनन्द लेना न शुरू करें। अनेक मधुर बातें होती हैं, मुझे बताने की आवश्यकता नहीं है। मैं हैरान थी यह जान कर कि अंग्रेजी भाषा में ऐसी कोई पुस्तक नहीं है जो विवाह के उपरान्त के रोमांस की व्याख्या करें। कोई भी पुस्तक नहीं, क्या आप सोच सकते हैं। भारत में आप ऐसी पुस्तक आपको नहीं मिलेगी, जो विवाह के पूर्व का रोमांस का उल्लेख करे। आजकल कुछ मूर्ख काम शुरू हो गये हैं, परन्तु साधारणतया, कोई प्रश्न ही नहीं। अब यह आप पर निर्भर है, आप अपने वैवाहिक जीवन का आनन्द, अपने बचपन से, यौवन अवस्था से या अन्य किसी समय के आनन्द से अधिक आनन्द लें, कॉलेज, स्कूल कहीं से भी अधिक...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपति पुले)

यह नहीं है कि आप कुछ कार्यान्वित कर रहे हैं, परन्तु सहज ही आप आनन्द लेने वाले हैं :

''... कुल लोग विशेष कर पश्चिम में, यह प्रायः होता है, कि विवाह के उपरान्त, वे सोचते हैं कि उन्हें विवाह को कार्यान्वित करना है। कोई कार्यान्वित नहीं। वे सोचते हैं, कि जिस प्रकार वे रसोई को या अपनी चीज़ों को कार्यान्वित करते हैं, यह वैसा नहीं है। दो साक्षात्कारी व्यक्तियों के मध्य सहज ही। यह ऐसा नहीं है कि आप कुछ कार्यान्वित कर रहे हैं, परन्तु सहज ही आप आनन्द लेने वाले हैं। यदि आप अत्यधिक समालोचनात्मक होंगे और यह दिखाने का प्रयत्न करेंगे कि आप बड़े बुद्धिमान हैं इत्यादि, तो यह कार्यान्वित नहीं हो पायेगा, विनम्र होना है, चुप रहें। जो वास्तव में बुद्धिमान

हैं, वे चुप रहते हैं, हमेशा और देखते हैं, परन्तु जो नहीं, वे टकराव करते हैं।

जितने अधिक आप सहज योग में होंगे, उतना ही आपको उससे और अन्य लोगों से सम्मान मिलेगा। इसके अलावा कितने ही संत हैं जो जन्म लेना चाहते हैं। एक बार आपकी, आपस में बड़ी खुशहाल शादी होगी, तो वे संत आप से जन्म लेंगे और वह इतना बड़ा आशीर्वाद और आनन्द होगा, आप के लिये...''

(१९९३, दुल्हनों को परामर्श, गणपतिपुले)

आपको यह निर्णय लेना है कि आप अपने साथी के अच्छे गुण देखेंगे :

''... सर्वप्रथम परिवार को सही होना है। आपको यह जानना है कि आपने विवाह किया है, कितने ही लोगों ने सहजयोग में विवाह किया है, सो मुझे प्रारम्भ में ही उनसे कहना है, कि आपको निर्णय लेना है, कि आप अपने साथी के अच्छे गुणों को देखेंगे और आपको यह वायदा करना है और ललकार स्वीकार करनी है कि हम एक अत्यन्त प्रसन्न वैवाहिक जीवन बनाने वाले हैं। दूसरों के दोष निकालना बड़ा सरल है, क्योंकि आपकी आँखें बाहर की ओर हैं, यदि किसी प्रकार उन्हें अन्दर की ओर मोड़ लें तो आप हैरान होंगे कि आप के अन्दर उनसे भी कहीं अधिक दोष हैं...''

(१९९७, शक्ति पूजा, भारत)

''...अब आप अपने पति को और पत्नी को समझने का प्रयत्न करें, आपको समझने का प्रयत्न करना चाहिये। कैसे पति, पत्नियों के साथ बड़े अजीब हो सकते हैं। जैसे आप देखिये, पुरुष, पुरुष हैं। उनके पास सदा घड़ियां होती हैं। वे दो घंटे पहले ही पहुँच जायेंगे, वे ऐसे ही होते हैं, बड़े समय से पहले के पाबन्द। वे पत्नियों को शीघ्रता करवाते हैं, 'जल्दी आओ, कितना समय तुम ले रही हो, तुम हमेशा बहुत ज़्यादा समय लेती हो।''

अब पुरुषों को काम करना है, उन्हें कोई समस्या नहीं है, उन्होंने कपड़ों की समस्या हल कर ली है, यह बड़ा आसान है, दर्जियों ने अपना कार्य कर दिया है, उनका सूट है, उन्हें उसे पहनना है और चल पड़ना है। उन्हें बालों के बारे में चिन्ता नहीं करनी है। परन्तु एक स्त्री को सही तरीके से कपड़े पहनने हैं।

उसे सही कपड़े पहनने के लिये निकालने हैं। कहाँ वह जा रही है, क्योंकि वह रंग और सृजनात्मिकता का प्रतिनिधित्व करती है। पुरुष को बड़ी फिक्र रहती है अपने ऑफ़िस के सम्बन्धों के बारे में या कुछ भी हो। सामने सारे समय हाथ मिलाना, 'ओह, सॉरी, सॉरी, थैंक्यू, थैंक्यू' और स्त्री शर्माती हैं। उसे इतनी उत्सुकता नहीं होती वे सब सम्बन्धों को बनाने के लिये, सो वह पीछे रहती हैं और वह उसे चुटकी काटता है, धक्का देता है, उसे डाँट लगाता है- यह गलत है, मैं सोचती हूँ। साधारणतया स्त्री, बैंकों के काम ज़्यादा नहीं समझती, आखिर वह ठीक है। उसे बैंक का काम समझ नहीं आता है, सो, बड़ा अच्छा है, पुरुष अपना पैसा छुपा सकता है, उसे नहीं करना चाहिये।

अब, पुरुष इसके विपरीत होते हैं। वे स्त्रियों के साथ अत्यन्त आक्रमक हो सकते हैं, परन्तु उन्हें समझना चाहिये कि उन्हें स्वयं को बदलना है, परन्तु स्त्रियों को भी जानना चाहिये, कि उन्हें कभी भी पति के प्रति सब की उपस्थिति में आक्रमक नहीं होना चाहिये, 'बैडरूम' में ठीक है...''

(१९८६, बैल्जियम और हॉलैण्ड की भूमिका, बैल्जियम)

II. एक-दूसरे से प्रेम करें

आप कैसे एक-दूसरे के साथ बात करते हैं :

''... भारत में सामूहिकता इतनी कम है, इतनी कम है कि वे अपनी पत्नियों के साथ भी सही व्यवहार नहीं करते हैं। वे अपनी पत्नी के साथ ठीक से बात नहीं करेंगे, बच्चों के साथ भी ठीक से नहीं; उनके लिये यह पूर्ण रूप से अधार्मिक है कि पत्नी के प्रति दयालु हों।

अब दूसरी ओर, पाश्चात्य के लोग सामूहिकता के लिये इतनी अधिक परवाह करते हैं कि कैसे भी हो वे समझौता करते हैं और पारिवारिक जीवन को ठीक रखने का प्रयत्न करते हैं। तो ये दो अतिशयता हैं हमारे बीच। ऐसा होने के बावजूद भारतीय स्त्रियों का धन्यवाद है-पारिवारिक जीवन मज़बूती से चल रहा है। परन्तु यदि आप इंग्लैंड में पुरुषों को देखें, मैं आपको यह बता सकती हूँ कि यहाँ पर कोई भी भारतीय पुरुषों का दुर्व्यवहार अपनी स्त्रियों के लिये सहन नहीं कर सकेगा, पूर्णतया, उनके इस प्रकार के व्यवहार को क्षमा नहीं किया जा सकता है।

सो, पुरुषों और स्त्रियों में सन्तुलनः केन्द्र क्या है, घर है। घर ही केन्द्र हैं। घर में किस प्रकार की बातें आपकी होती है? आप क्या सोचते हैं, आपकी समस्या क्या है? आपका चित्त कहाँ है? आप क्या बातचीत करते हैं? वह देखना बड़ा महत्वपूर्ण है, उससे आपको पता चलेगा कि परिवार में क्या चल रहा है। यदि आप एक-दूसरे के बारे में खराब बातें कर रहे हैं, यदि आप अपने बच्चे को पति के विरोध में कुछ कह रहे हैं, पति-पत्नी के विरोध में कह रहा है, बच्चों को। यदि ऐसा चल रहा है, तो क्या होता है, कि केन्द्रबिन्दु ठीक नहीं रहता। केन्द्रबिन्दु प्रेम है, परन्तु लाभ उठाना या बिगाड़ना नहीं, यह प्रेम है...''

(१९८८, सूर्यपूजा, मुम्बई)

यदि स्त्री पति के प्रति समर्पित है, तो आप क्या सोचते हैं कि पति किसी दूसरी स्त्री के पीछे भागेगा? :

''... यदि आप सात पतियों के साथ विवाह करती हैं, तो सातों पति खत्म हैं, उन सब से सात गुना अधिक। सो, इस प्रकार का कानून मुझे समझ नहीं आता है। मुझे समझ नहीं आता कि पति और पत्नी के बीच कानून क्यों होता है। मेरा अर्थ है कि भारत में ऐसा कानून नहीं होता है, परन्तु सब पत्नी का ध्यान रखते हैं, क्योंकि वह उनकी सबसे प्रिय एवं सबसे समीप होती हैं। और किस पर निर्भर करें? यदि स्त्री पति के प्रति समर्पित है, तो क्या आप सोचते हैं कि वह दूसरी स्त्री के पीछे भागेगा? उसे उसके पास ही वापिस आना है। वह उन स्त्रियों से इतना तंग आ जायेगा, जो केवल पैसे के लिये जीती हैं या कुछ भी और उसे वापिस आना ही है...''

(१९८१, तीसरा सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी)

अपने प्रेम की अभिव्यक्ति कैसे करें इसकी समझ होनी चाहिये :

''... कोई समझदारी नहीं होती और यदि हो भी प्रेम व समझदारी तो आपको पता नहीं है कि इसे किस प्रकार अभिव्यक्त करें। इसी बात की कमी है क्योंकि यदि आप मुझ से प्रेम कर सकते हैं, तो जो आपको इतना प्रिय हो, उसे निश्चित रूप से प्रेम कर सकते हैं, परन्तु आप में इस बात की समझदारी नहीं है कि इस प्रेम को अभिव्यक्त कैसे किया जाये। इसलिये बेहतर है कि आप ध्यान

करें और यह नहीं सोचें कि दूसरों में दोष कैसे ढूँढें, क्योंकि सब में ही दोष होते हैं इसलिये पूछताछ नहीं होनी चाहिये इस विषय में, परन्तु समझदारी होनी चाहिये और अपने आपको स्वीकारें। अपना यह अन्तरावलोकन न करें, 'मैं इस प्रकार हूँ।' गलतियाँ कबूल करना आदि, सब की आवश्यकता नहीं हैं...''

(१९९१, विवाह से पूर्व बातचीत)

यदि वास्तव में आपको उस प्रकार की भावना आती है तो यह आशीर्वाद है:

''... सहजधर्म में पति-पत्नी के सम्बन्ध में रोमांस होना चाहिये, इसे बड़ा सुन्दर होना चाहिये। पर ऐसा है नहीं, आप जानते हैं। हम प्रेम आदि की बात करते हैं, बहुत कम ही लोग प्रेम करते हैं और निभाते हैं। यदि आप में इस प्रकार की भावना आती है, तो यह एक आशीर्वाद है, परन्तु अधिकतर यह श्राप ही होता है। प्रेम करना बड़ा अच्छा है, पर इसका यह तात्पर्य नहीं है कि आप भूल जायें कि आप एक सहजयोगी हैं, मैं सोचती हूँ कि वैवाहिक जीवन में सहजयोग बड़ा सहायक होता है...''

(१९९७, श्रीकृष्ण पूजा, कबेला)

आपका विवाह प्रेम का आनन्द पाने के लिये है :

''... यहाँ आपका विवाह, एक साधारण विवाह की अनुभूति के लिये नहीं हुआ है, परन्तु प्रेम का आनन्द पाने के लिये। यह एक अत्यन्त महान आशीर्वाद है और प्रेम करना दिव्यता है। यदि आप वह कर सकें तो आप दोष नहीं ढूँढेंगे। आप मार्ग ढूँढ लेंगे कि किस प्रकार वैवाहिक जीवन का आनन्द लें...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

भूतकाल के विषय में भूल जाने से क्षमाशीलता आती है :

''... कल हमारे बीच शादियाँ होने वाली है। सहज धर्म में सर्वप्रथम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है-क्षमा। यदि कोई क्षमा नहीं कर सकता है, तो वह सहजयोगी नहीं हो सकता। यह क्षमाशीलता भूतकाल की बातों को भूला देने से आती है...''

(१९९७, श्रीकृष्ण पूजा, कबेला)

आपसी सम्मान

I. प्रभुत्व

यह एक अनन्य वैवाहिक जीवन की कुंजी है :

''... एक स्त्री, पति द्वारा दबायी जा रही है या पति स्त्री द्वारा दबाया जा रहा है, यह सोच एक जटिल मानसिकता से आती है और इस जटिल मानसिकता को छोड़ देना चाहिये, आप एक दूसरे के लिये प्रशंसा-सूचक हैं, आप एक-दूसरे को शोभायमान करते हैं। कभी भी अपने पतियों के बारे में बुराई न करें और न ही कभी पत्नियों की बुराई करें, यह एक अनन्य वैवाहिक जीवन की कुंजी है...''

(१९८१, विवाह का अर्थ है आनन्द देना, लंदन)

तब आप भी उस व्यक्ति की भावनाओं की कद्र करने लगते हैं :

''... एक बार यह आ जाये, तो सहजयोग बेहतर कार्यान्वित होगा। प्रभुत्वता का अनुभव तभी लगता है जब कोई प्रेम नहीं होता है। कभी-कभी आप को अच्छा लगता है, कि कोई आप पर प्रभुत्व दिखायें। उदाहरण के लिये यदि हम कहें, 'आओ, यह खाना खाओ, यह खाना चाहिये', तो आपको अच्छा लगता है, क्योंकि कोई आपकी परवाह कर रहा है। आपकी चिन्ता है। कोई आपसे प्रेम करता है और चाहता है, कि आप यह लें और वह करें। आपको ऐसा व्यक्ति अच्छा लगता है, आप चाहते हैं कि कोई ऐसे करें। आप नहीं चाहते कि आपको अपने हाल पर छोड़ दें कि जो मन करे वह करो। वैसी स्थिति अच्छी नहीं है। और एक बार जब आप उस भावना को विकसित करते हैं 'आप जानते हैं, कि व्यक्ति मेरी परवाह करता है, वह व्यक्ति प्रेम करता है।' तब आप भी उस व्यक्ति की भावनाओं की कद्र करते हैं। आप भी समझना शुरू करते हैं...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

प्रभुत्वता का प्रश्न ही नहीं उठता :

''... हर चीज़ के दो पहलू होते हैं, जैसा कि आप स्पष्टत: देख सकते हैं। यदि यह प्रेम में किया गया है, तो सर्वोत्तम है, परन्तु यदि यह प्रभुत्वता के लिये किया गया है तो मूर्खता है। किसलिये प्रभुत्व? मेरा अर्थ है, कि मुझे यह शब्द 'डॉमिनेशन' समझ ही नहीं आता है। जब गाड़ी के दो पहिये होते हैं, तो क्या वे एक-दूसरे पर प्रभुत्व जामते हैं? यदि एक प्रभुत्व दिखाता है और बड़ा हो जाता है, दूसरे से, तो वह गोल-गोल ही घूमेगा, नहीं क्या? पर यह है प्रश्न, एकीकरण का, समझदारी का और सम्पूर्ण सहयोग आपस में, जिसे समाज में, परिवार में होना जरूरी है।

जिन विवाहों से समाज को कोई सहायता नहीं है, वे बेकार है, केवल व्यर्थ हैं। हमारे में अनेक ऐसे विवाह हुये हैं। लोगों का विवाह होता है, अच्छे से रहते हैं, खुशी से आपस में और फिर सब समाप्त।

ये विवाह, समाज को बदल देंगे अपने आनन्द से, प्रसन्नता से, ऐसा घर बनाते हैं, जहाँ सब आ सकें उनकी देखभाल करें, औरों के लिये करें...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

आप पर कोई प्रभुत्व नहीं जमा सकता :

''... देखिये, आप पर कैसे प्रभुत्व दिखाया जा सकता है? आप आत्मा हैं। आपके अहंकार को चोट लग सकती है, आप तो आत्मा हैं, उसे दबाया नहीं जा सकता है। परन्तु क्या आप आत्मा हैं? क्या आप आत्मा का अनुभव कर रहे हैं? यदि आप अपनी आत्मा का अनुभव कर रहे हैं, तो आप को कभी भी दबाया नहीं जा सकता है। कोई भी आप पर प्रभुत्व नहीं जमा सकता है। परन्तु यदि सारे समय आप को लगता है, कि आप को दबाया जा रहा है, तो आप एक अत्यन्त शक्तिहीन व्यक्ति हो जाएंगे, आप एक भयंकर व्यक्ति बन सकते हैं, आप लोगों का सामना नहीं कर पायेंगे...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

पति-पत्नी की समस्यायें भूल जाओ :

''... मुझे आप से आग्रह करना है, कि अपनी समस्यायें भूल जाईये, पति-पत्नी की समस्यायें कुछ नहीं है। अपने बच्चों की देखभाल करो, उन्हें प्रतिष्ठा दें, उन्हें एक घोंसला दें जहाँ वे रह सकें...''

(१९८०, बचपन पर, यू.के.)

आपको यह जान लेना चाहिये कि आप में कहीं अधिक सहनशक्ति है और आपको पता है कि स्थिति को कैसे सम्भालना है :

''... परन्तु भारतीय पुरुषों से उम्मीद करना व्यर्थ है, उन्होंने हमारी राजनीति और आर्थिक स्थिति को सब गड़बड़ा दिया है। शायद आप लोगों के पुरूष बेहतर होंगे, मुझे इस बारे में ज्ञात नहीं है, परन्तु यह मैं कह सकती हूँ कि कम से कम वे भारतीय पुरूषों की तुलना में कुछ नरम हैं, वे तो अत्यन्त दबाने वाले लोग हैं। परन्तु हम लोग केवल हँस देते हैं। हम जानते हैं कि वह उनका स्वभाव है। जिस प्रकार एक बच्चा प्रभुत्व दिखाने का प्रयत्न करता है, उसी प्रकार पत्नी भी प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न करती है। और यदि वे बाहर किसी अन्य को दबाने का प्रयत्न करेंगे तो उनकी पिटाई हो जायेगी। इसलिये वे हमें दबाना चाहते हैं, अन्यथा वे अपना गुस्सा किस पर निकालें? सो, अच्छा है, हमारे ऊपर निकाल रहे हैं, अन्यथा बाहर तो वे पिट जायेंगे।

यदि आप देखें कि कोई पुरूष बड़ा चुपचाप व अच्छा है, तो जान लीजिये कि उसकी पत्नी का बड़ा खराब समय चल रहा है। सो, आप केवल इस पर हँस कर हल्के से टाल दें एवं इसे गम्भीरता से न लें। आपको जानना चाहिये कि आप में कहीं अधिक सहनशक्ति है और आपको पता है कि स्थिति को कैसे सम्भालना है और आप अधिक विवेकशील हैं और अधिक सामूहिक हैं।

सो, जीवन एक खेल बन जाता है। आप देखिये, कि पुरूष, पुरूष ही रहेंगे और स्त्रियां, स्त्रियां ही रहेंगी, चाहे आप कोई भी कपड़े पहनें। आपको वही होना है जो आप हैं। परन्तु एक बार आप समझ जाये कि आप क्या हैं तो आप आनन्द में रहेंगे। पुरूष सदा घड़ियां देखते रहेंगे और स्त्रियां सदा देरी

करती रहेंगी...''

(१९८८, इन्ट्यूशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

गृहलक्ष्मी तत्व दोनों, पति और पत्नी पर निर्भर है :

''... सो, गृहलक्ष्मी तत्व पारस्परिक हैं, यह केवल पत्नी या पति पर ही निर्भर नहीं होता है, परन्तु दोनों पर, सो, एक बार यदि आप अपनी पत्नी को कष्ट दे रहे हैं, तो आप की बायीं नाभि कभी सुधर नहीं सकती है। या यदि आप एक खराब पत्नी हैं तो आपकी बायीं नाभि सुधर नहीं सकती है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

ये सब छोटी-छोटी बातों का कोई लाभ नहीं है :

''... पति का प्रभुत्व और पत्नी का प्रभुत्व एक गलत विचार है। यदि आप लोग एक-दूसरे के साथ प्रेम कर सकते हैं, तो यह स्वर्गीय है। मैं सोचती हूँ, कि छोटी-छोटी बातों के लिये लोग झगड़ा करते हैं, कपड़ों के लिये, खाने के लिये, इसके लिये, उसके लिये। परन्तु यदि आप किसी से प्रेम करते हैं, तो आपका जीवन कितना सुन्दर बन जाता है। ये सब छोटी-छोटी चीज़ें किसी काम की नहीं है...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

II. आपसी सम्मान

आपसी सम्मान विकसित होना जरूरी है क्योंकि आप दोनों सन्त हैं :

''... यह समय आ चुका है कि आप समझें कि आप आत्मा हैं और आपका पति भी आत्मा है, या यदि आप पति हैं, तो आपको जानना है कि आपकी पत्नी भी आत्मा है। और एक आपसी सम्मान उस स्तर पर विकसित होना चाहिये क्योंकि आप दोनों सन्त हैं, आप सहयजोगी हैं। आपको एक दूसरे का सम्मान करना चाहिये क्योंकि आप सहजयोगी हैं...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

आप लोगों में एक प्रतियोगिता होनी चाहिये, प्रेम करने में, विश्वास करने में, ईमानदारी में, दयालु होने में :

''... आप को दूसरे साक्षात्कारी व्यक्तियों का सम्मान करना चाहिये। वे आपकी माँ के बच्चे हैं। आपस में बात करते समय आपको समझना चाहिये इस बात को और भी अधिक जब आप पति-पत्नी हैं। अभी तक जो आप के विचारों में पति-पत्नी की समझ थी, उसे छोड़ दें, वह एक प्रकार की ठेकेदारी की शादी होती है। साधारण शादियों में आप देखते हैं, 'वह कितना प्रभुत्व दिखाता है, उसकी क्या शक्तियां हैं, मेरी क्या शक्तियां हैं, मुझे कितना पैसा मिलता है, उसे कितना मिलता है, पैसे कहाँ रखे हैं, वह सब क्या है?' यह तभी होता है जब आप एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते हैं, परन्तु आप और अधिक विश्वास करते जाईये।

आपस में प्रेम करने की प्रतियोगिता होनी चाहिये। विश्वास करने में प्रतियोगिता होनी चाहिये। ईमानदार होने में, दयालु होने में, सेवा करने में, इन सब में प्रतियोगिता होने दें, तब आप परिणाम प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता, प्रभुत्व में, डरने में, मूर्खता बाँटने में नहीं, परन्तु इसके विपरित होनी चाहिये...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

पति एक भद्र पुरूष होना चाहिये जिसका पत्नी सम्मान करें :

''... हमारे आधुनिक जीवन का यह बड़ा महत्वपूर्ण पहलू है, कि हमें समझना चाहिये कि पति और पत्नी का सम्बन्ध क्या है? पति एक भद्र पुरूष के समान होना चाहिये जिसे निश्चित ही पत्नी द्वारा सम्मानित होना चाहिये। यदि पत्नी से अपने पति को सम्मान नहीं मिल सकता है। परन्तु पति को सम्माननीय व्यक्ति होना चाहिये, वह बड़ा महत्वपूर्ण है। यदि पुरूष सम्माननीय नहीं है, तो उसका सम्मान सरलता से नहीं हो सकता...''

(१९८१, तीसरा सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी)

आपको अपनी पत्नी को सही सम्मान देना है :

''... जब आपसी समझदारी नहीं होती है, जब असन्तुलन होता है, तब

ये सब बातें होती हैं। परन्तु सहजयोग में हमें समझना चाहिये, आपको अपनी पत्नी की देखभाल करनी है, उसकी आवश्यकताओं की, सब चीज़ों की। उसे सही सम्मान देना है। उसे दूसरों की उपस्थिति में कभी अपमानित नहीं करना है। यह पूर्णतया निषेध है। परन्तु स्त्रियों को भी जानना चाहिये कि पतियों का कैसे सम्मान करना चाहिये, उकसाना नहीं चाहिये और पति के विरोध में चालबाज़ी नहीं उपयोग में लानी चाहिये। मैंने देखा है, कि स्त्रियां बैठ कर योजना बनाती हैं कि कैसे अपने पति को अपमानित करेंगी, कुछ भी इस्तेमाल कर के...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लंदन)

यह अत्यन्त पारस्परिक बात है :

''... यह पूर्णतया है, कि अपने पति से प्रेम किस प्रकार करना है। आपको वास्तव में पति से प्रेम करना है और उसे क्षमा करना है, जिस प्रकार आप अपने बच्चे को करेंगी। परन्तु पति भी.... यह अत्यन्त पारस्परिक बात है, मैं केवल स्त्रियों को ही कुछ कह नहीं सकती और पुरूषों को भी नहीं। यह पूर्ण रूप से आवश्यक है, कि पुरूषों को अपनी स्त्रियों को देवी के समान सम्मान देना चाहिये, परन्तु स्त्रियों को भी देवी समान आचरण करना है। वे गली के स्त्रियों के समान व्यवहार करती हैं आरै फिर प्रतियोगिता शुरू हो जाती है। परन्तु यदि सन्तुलन लाने के लिये आप समन्वित करते हैं, तो आप दोनों को फ़ैसला करना चाहिये कि आप तभी आनन्दमय हो सकते हैं, यदि आप में सही सन्तुलन होगा...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लंदन)

स्त्री को प्रतिष्ठा के साथ गृहलक्ष्मी के समान व्यवहार करना चाहिये :

''... एक व्यक्ति एक तरफ़ जा रहा है, दूसरा दूसरी ओर, इसका कोई अन्त नहीं है और रथ कभी सामने नहीं गतिशील होगा। दोनों पहियों को सन्तुलित होना चाहिये, यह समझ कर कि, बिना इस पहिये के, दूसरा नहीं रह सकता। सो, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि दूसरा, परन्तु वे कहेंगे कि मैं महत्वपूर्ण हूँ, 'नहीं' 'वह (पत्नी) महत्वपूर्ण है, यदि मुझे रहना है,' या

पत्नी को कहना है, 'वह (पति) महत्वपूर्ण है क्योंकि मुझे रहना है,' यह इतनी पारस्परिक बात है।

अब गृहलक्ष्मी की बात पर मैं कहूँगी कि, स्त्री को गृहलक्ष्मी के समान व्यवहार करना चाहिये, प्रतिष्ठा के साथ। मेरा अर्थ है कि कुछ माँगना भी अप्रतिष्ठित है। क्यों? क्या माँगना है? यह सब आप का अपना है, जब चाहिये, ले लो। अपने अन्दर वह पवित्रता विकसित करने का प्रयत्न करें। पुरूष अपनी स्त्री को गृहलक्ष्मी के समान सम्मानित करते हैं- यह बड़ा अच्छा है। उनका सम्मान करें, देखभाल करें और जाने कि यदि देवी-देवता आपकी पत्नी के साथ हैं, तो आपको कोई समस्या नहीं होगी...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लंदन)

सम्मान, एकीकरण और समझदारी होनी चाहिये :

''... सन्तों को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिये। वे आपके घर आते हैं, उन्हें अच्छी 'सीट' पर बिठायें। आपको देखना चाहिये, कि सन्त कैसे सन्तों का सम्मान करते हैं। वह सम्मान आप लोगों में आपस में होना चाहिये, एकीकरण, समझदारी। सम्मान के बिना आप में अच्छा सम्बन्ध नहीं हो सकता है। और सम्बन्ध के लिये बराबर की समझदारी होनी चाहिये कि, 'जैसे मुझे सम्मान चाहिये, वैसे ही दूसरों का सम्मान होना चाहिये,' आपको सम्मानजनक होना चाहिये और सम्माननीय होना चाहिये। दोनों ही चीज़ें करनी चाहिये। यह लक्ष्मी की बात है...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लंदन)

जो व्यक्ति अन्तिम लक्ष्य को देखता है, उसे मैं सर्वाधिक बुद्धिमान कहती हूँ :

''... यदि पति एक मूर्ख मनुष्य है, तो वह पत्नी को नीचे खींच लेगा। यदि पत्नी मूर्ख है, तो वह पति को नीचे खींच लेगी। यदि एक स्त्री बड़ी तीक्ष्ण है, अच्छी तरह बात करती है, वह जानती है, कि किस प्रकार बात करके लोगों को प्रभावित करना है, तो यह अर्थ नहीं है, कि वह बड़ी बुद्धिमान है। मैं उस व्यक्ति को सर्वाधिक बुद्धिमान कहती हूँ, जो परोपकार, उत्थान और

अन्तिम लक्ष्य को देखता है, वह व्यक्ति सर्वाधिक संवेदनशील है, सर्वाधिक बुद्धिमान है, शेष सभी बुद्धिमानी अविद्या (अशुद्ध ज्ञान) है, व्यर्थ है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

जो हमारे अन्दर है, उस सब से हमें समाधान प्राप्त करना है :

''... हम अन्य लोगों के समान नहीं हो सकते हैं, जो पैसे के पीछे भागते हैं और स्वयं को नष्ट करने के सभी प्रयोजन करते हैं। सहज की संस्कृति में, हमें ध्यान करना है और जो हमारे अन्दर है, उससे समाधान प्राप्त करना है और हमें लक्ष्मी के बच्चों के समान होना है, लक्ष्मी के बच्चे...''

(१९९२, दिवाली पूजा, रूमानिया)

III. प्रतिष्ठा

उस समय विवेक यह है : क्या आप प्रतिष्ठित हैं या नहीं ? :

''... स्त्री का दूसरा पहलू है, कि वह राजलक्ष्मी है और पुरूष राजा है। उस समय विवेक यह है, क्या आप प्रतिष्ठित हैं या नहीं ? एक बार हम जापान गये और वे लोग वहाँ हमें अत्यन्त सम्मान दे रहे थे, यहाँ तक कि वहाँ एक गाँव में भी। पहले हमने एक दुकान में प्रवेश किया क्योंकि वर्षा हो रही थी, वहाँ गाँव वालों ने वास्तव में हमें झुक कर प्रणाम किया। हमें समझ नहीं आया, कि क्या हो रहा है। और उन्होंने हमें उपहार दिये, तो अन्त में हमने भाषान्तर करने वाले से कहा, 'वे हमारे सामने इतने विनम्र क्यों हैं ?'

वे बोले, 'क्योंकि आप राजसी परिवार से हैं।'

मैंने कहा, 'नहीं, हम राजसी परिवार से नहीं हैं, उन्हें कैसे लगा ये ?'

'क्योंकि आपके बाल सँवरे हैं, आपकी बेटियों के बाल सँवरे हैं और चमक रहे हैं और आप 'हेयर ड्रेसर' के पास नहीं जाती हैं।'

यह था ! 'क्या यह राजसी परिवार का प्रतीक है ?'

'हाँ, राजसी परिवार ऐसा है, वे अपना सिर किसी और के हाथों में नहीं

देते हैं।'

हम लोग हैरान हो गये, सोचिये, कि जापानी लोग ऐसा सोचते हैं...''

(१९९१, हम्सा पूजा, न्यूयौर्क)

आपको एक रानी के समान होना है और पति को एक राजा के समान :

''... सो, विवेक यह है, कि आप को रानी के समान होना चाहिये और पति को राजा के समान होना है। परन्तु उस राजा के समान नहीं जिसने अपनी सात पत्नियों को मार दिया, परन्तु उस राजा के समान जो अपनी पत्नी का सम्मान करता है। यदि आप अपनी पत्नी का सम्मान नहीं कर सकते हैं, तो आप सहजयोगी नहीं हो सकते। सम्मान और रोमांस भरे प्रेम में अन्तर होता है। मुझे लगता है कि आप सम्मान नहीं करते हैं। सहजयोग में पत्नी का सम्मान करना बड़ा महत्वपूर्ण होता है। इस विषय में भारतीय इतने अच्छे नहीं हैं परन्तु मुझे यह भी पता है कि कुछ पाश्चात्य के लोग भी अजीब हैं। यदि आप पत्नी का सम्मान नहीं कर सकते हैं तो आपकी प्रतिष्ठा कम हो जाती है। भारतीय, विशेषकर उत्तर भारत के, दक्षिण भारत के नहीं, लोगों में इस की कमी होती है, अपनी पत्नी का सम्मान करने में। उनमें इस बात की भी कमी होती है, यह जानने की, यदि वे पत्नी का सम्मान नहीं करते हैं, तो बच्चे भी उसका सम्मान नहीं करेंगे और वह बच्चों की जिम्मेदारी है...''

(१९९१, हम्सा पूजा, न्यूयौर्क)

IV. भावनिक मोह

पूरा ब्रह्माण्ड हमारा परिवार है :

''... सहजयोग में हम प्राय: पाते हैं, कि लोग शादी के बाद एक दूसरे में पूर्णतया लीन हो जाते हैं और सहजयोग को खो देते हैं। तब उनके बच्चे तकलीफ़ पाते हैं: उनके बच्चे उपद्रवी, अजीब, अनाज्ञाकारी कष्टप्रद हो जाते हैं। उन्हें शारीरिक समस्यायें भी होती हैं। यह सजा है। मैं नहीं सजा देती, परन्तु आपकी अपनी प्रकृति सजा देती है। यदि आप अपना हाथ आग में डालेंगे, तो वह जलेगा। कौन सजा दे रहा है आपको-आप खुद ही स्वयं को सजा दे

रहे हैं। बच्चे अजीब हो जाते हैं, आप केवल अपने परिवार, अपने भोजन और अपने घर-गृहस्थी के लिये ही रह जाते हैं।

यदि आदमी में स्वार्थ भर जाता है, तो परमात्मा ही उस परिवार को बचाये। यदि स्त्री है तो ठीक है, थोड़ा सा परन्तु यदि पुरूष गया-गुज़रा है..... मेरा घर होना चाहिये, मेरी नौकरी होनी चाहिये, मुझे अपने बच्चों को देखना चाहिये, यह मेरे परिवार के लिये है। मेरा तात्पर्य है, कि हमारा परिवार एक पुरूष या एक स्त्री का नहीं है, परन्तु सारा ब्रह्माण्ह ही हमारा परिवार है। हम केवल अपने ही लिये नहीं है और यदि हम स्वयं केन्द्रित हो जाते हैं, अलग हो जाते हैं..... मैं आज आपको एक बात कहूँगी और चेतावनी दूंगी, कि जो लोग स्वयं को अलग करना शुरू करते हैं, तो एक दिन उन्हें भयंकर बीमारियां हो जायेंगी। सहजयोग को दोष नहीं देना। सहजयोग के पास अपना सुन्दर, परमात्मा का साम्राज्य है, परन्तु परमात्मा के साम्राज्य में आपको सामूहिक होना है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

झूठे मोह से हानि होगी :

''... मैंने देखा है, कि लोगों का अत्यधिक मोह अपने पति या पत्नी के प्रति होता है, तब वे किसी और को देख ही नहीं सकते हैं। उनके लिये अपने सिवाय सब कुछ गलत है, पति नहीं या उनकी पत्नियाँ नहीं। यह प्राय: दोष देखा जाता है। इस प्रकार का झूठा मोह दूसरे व्यक्ति को ही केवल हानि नहीं पहुँचायेगा, परन्तु आपके पति या पत्नी को भी हानि पहुँचायेगा, क्योंकि वे गलत कार्यों द्वारा, आराम से बच निकलेंगे। एक बार वे गलत कार्यों द्वारा बच निकलना शुरू करेंगे, तो उसका कोई अन्त नहीं है, वे नष्ट हो जाएंगे...''

(१९९१, इस्टर पूजा, सिडनी)

आप सबका पोषण करते हैं, अपने परिवार के हर अंग का :

''... सो, हृदय के स्तर पर विवेक होना चाहिये, कि ऐसा सम्बन्ध रखें, जो इतना अनुरागहीन हो कि आप सब का पोषण करें, अपने परिवार के हर अंग का।

अब, किसी को पति से मोह है, किसी को बच्चों से मोह है, किसी को कुत्ते से मोह है, किसी को केवल पौधों से मोह है। यह अत्यन्त अविवेकपूर्ण है। आपको हर चीज़ से एक जैसा मोह होना चाहिये। मैं कहूँगी कि आपको इतना अनुरागहीन होना चाहिये कि आप को हर चीज़ से बराबर अनुराग हो। अनुरागहीनता का यह अर्थ नहीं है, कि आप कम कपडे पहनें, उसका यह अर्थ नहीं है, यह गलत विचार धारणा है। अनुरागहीनता का अर्थ है, कि आप सब कुछ देखें, परन्तु किसी के साथ चिपकें नहीं। आप इससे बाहर हैं और आप सब देख रहे हैं, निरीक्षण कर रहे हैं। आप साक्षी हैं। यदि इस प्रकार का प्रेम आप में किसी के लिये है, तो आप उस व्यक्तित्व द्वारा कहीं अधिक आशीर्वादित होंगे...''

(१९९१, हम्सा पूजा, न्यूयौर्क)

पूरी बात की मूर्खता है अनुराग :

''... किसी से इतना अनुराग होना सिरदर्दी है। फिर आप चिन्ता करते हैं, 'मेरी पत्नी अभी पहुँची नहीं है, ओह्, अब क्या करूं भगवान मुझे फोन करना चाहिये, उसे यहाँ लाना चाहिये,' परन्तु यदि आप इस ओर अनुराग नहीं करेंगे तो वह समय पर आ जायेगी। यही नहीं आप उसके साथ का भी आनन्द लेंगे, नहीं तो आप उस पर चिल्लायेंगे, 'तुम क्यों नहीं समय पर आयी? मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।' तो फिर आप क्यों उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, उस पर चिल्ला कर अपना सम्बन्ध खराब करने के लिये?

इस सारी बात के पीछे की मूर्खता है अनुराग। आपके हर बात के बारे में पूर्णतया अनुरागहीन होना चाहिये और आप आनन्दित होंगे, केवल आनन्द परन्तु उसमें भी आपको तय करना है, कि आप आनन्द ले रहे हैं या आप केवल इसका नाटक कर रहे हैं। ईमानदार होने का प्रयत्न करें। पवित्रता, ईमानदारी से ही उभरती है। यदि आप स्वयं के प्रति और दूसरों के प्रति ईमानदार नहीं हैं, तो आप पवित्र नहीं हो सकते हैं। और पवित्रता एक मुख्य चीज़ है, जो आपको सहजयोग में प्राप्त करनी है, एकीकरण के अलावा जो मैंने आपको दी है। परन्तु यदि आप इस एकीकरण को पवित्रता के लिये उपयोग में नहीं लायेंगे, तो कोई फ़ायदा नहीं...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, इंग्लैंड)

V. भूतकाल के विषय में बात करना और कष्टमय होना

आपको कोई कष्ट नहीं है :

''... एक और बात है, जो मुझे आपके ध्यान में लानी है, जो विवाहित जोड़ियों के साथ होता है और अत्यन्त गलत बात है। वे दोनों बड़े ही कष्टमय लोगों का 'रोल' निभाने लगते हैं। वे बैठ जाते हैं, वे बिना किसी कारण के रोना शुरू करते हैं। उनके समक्ष पूरा संसार खत्म हो रहा है। कई महान कवि हुये हैं, जैसे लार्ड ब्रायन या शायद कुछ भयंकर लोग जिन्होंने कवितायें लिखी हैं और वे लोग उन कविताओं को कहना शुरू करेंगे, उनके लिये वही सबसे अच्छे गाने हैं और हर प्रकार की निरर्थकता। बैठ कर वे इस प्रकार की निरर्थकता का आनन्द लेते हैं और एक दूसरे की तकलीफ़ों का आनन्द लेते हैं। वर्तमान में आपकी कोई तकलीफ़ें नहीं हैं, जो भी था वह भूतकाल था व समाप्त हो गया है। अब, आप लोग नये लोग हैं, नयी चेतना के साथ, नयी चीज़ों के साथ, आपकी कोई तकलीफ़ें नही हैं, सो, वे सब बातें भूल जाओ और एक दूसरे का आनन्द लेने का प्रयत्न करें...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

आपको अपने भूतकाल की बिल्कुल भी बात नहीं करनी चाहिये :

''... और दूसरी बात है, अपने भूतकाल की बातें न करें, अपने माता-पिता और यह और वह। किसी के साथ वे बातें करना, मुझे भावनिक 'ब्लैक मैल' लगता है। आपको अपना भूतकाल या अपने विषय में बिल्कुल भी बात नहीं करनी चाहिये, कुछ भी लड़के या लड़की को न बतायें। यदि वे आपसे पूछते भी हैं, तो वह गलत है। किसी को भी एक दूसरे के भूतकाल के बारे में नहीं पूछना चाहिये क्योंकि हम वर्तमान में विश्वास करते हैं। सो, आपको व्यक्ति के बीते हुये समय के बारे में न तो पूछना है, न बताना है। सब भूल जायें, नया शुरू करें...''

(१९९१, विवाह के पूर्व बातचीत, यू.के.)

चाहे आपका अतीत है भी, आप इसकी व्याख्या न करें, इसके बारे में न बोलें :

''... अपने अनुभव में मैंने यह देखा है, कि कभी-कभी वे शादी कर लेते हैं और अपने देश में वापिस जाने के बाद वे बोलना शुरू करते हैं कि, 'माताजी, हम जानते हैं कि हम इसे व्यवस्थित नहीं कर सकते हैं, हमें इसे कार्यान्वित करना होगा इत्यादि,' शादियां कार्यान्वित नहीं की जाती हैं, वे सहज ही घटती हैं।

परन्तु, भारत में हम लोग हमेशा एक अच्छे वैवाहिक जीवन के लिये तैयार होते हैं। पत्नी को और पति को सारे समय कहा जाता है। सो, साधारणतया जब उनकी शादी होती है, तो वे सोचते हैं कि यही हमारे लिये है। उनके पहले से प्रेम सम्बन्ध नहीं होते हैं: उनकी दोस्ती अदि नहीं होती है। परन्तु यदि आपका अतीत है भी, तो अब वह समाप्त हो गया है। आप इसका व्याख्यान न करें, इसके बारे में बात न करें। अपना सर्वोत्तम दें। वह पूर्णतया गलत है क्योंकि भूतकाल विद्यमान नहीं है जो है, वह वर्तमान है। सो, वर्तमान का आनन्द लें, भूल जायें और स्वयं को क्षमा कर दें।

अनेक लोगों की यह समस्या होती है, कि वे अतीत को भूल नहीं सकते और अपनी पत्नियों को बताते रहते हैं कि, 'मैं ऐसा था।' कुछ भी स्वीकारने की आवश्यकता नहीं है। वे सोचते हैं, कि यह ईमानदारी है। उस समय ईमानदारी या बेईमानी का कोई प्रश्न नहीं है परन्तु पूर्ण रूप से आनन्द लें, वैवाहिक जीवन के खुशी भरे माहौल का। वह केवल सिर में है, अन्यथा, शादी करने का क्या लाभ है और फिर कहानियाँ बताना...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपति पुले)

आपको अपने पूरे प्रेम और परवाह की अभिव्यक्ति करनी है ताकि वह सुरक्षितता एवं प्रसन्नता का अनुभव करें :

''... कुछ लोगों की बड़ी खराब आदत होती है। यह बताने की, कि उसकी माँ कितनी खराब थी, पिता था या वह कितना दु:खी है या उसने कितना संघर्ष किया है- यह सब बोलने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस

समय आपकी शादी हो गयी है, वह आपकी पत्नी है और आपको अपने समस्त प्रेम व परवाह की अभिव्यक्ति उससे करनी है, ताकि उसे सुरक्षितता व प्रसन्नता का अनुभव हो। इस बात को 'नोट' कर लें, कुछ भी अपने अतीत का नहीं बताना है...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपति पुले)

अतीत समाप्त हो गया है :

''... सब से महत्वपूर्ण बात है, कि आपको अपने अतीत के विषय में बिल्कुल नहीं बात करनी चाहिये, क्योंकि अतीत समाप्त हो गया है, अब आप सहजयोगी हैं। आप सब साक्षात्कारी आत्मायें हैं। इसलिये आप को अतीत के विषय में एक शब्द भी नहीं कहना है, यहाँ तक कि यदि पति बात करता है, तो आप रोक दें और कहें, कि हमें वर्तमान में जीना है, हमें अतीत के बारे में मत बताओ।

मुझे समझ नहीं आता, कि लोग ऐसा क्यों सोचते हैं, कि वे यदि अपने अतीत की निरर्थकता की बात करेंगे तो अधिक आकर्षक लगेंगे या फिर कहेंगे कि, 'मेरी माँ इतनी खराब थी।' सब मनोवैज्ञानिक निरर्थकता। यह कह कर कि माता-पिता बड़े खराब हैं, किसी काम के नहीं, अपने माता-पिता को संकट में न डालें। अतीत को भूल जायें और वर्तमान में रहें क्योंकि वर्तमान में ही वास्तविकता होती है और वास्तविकता आनन्द का सागर है...''

(१९९३, दुल्हनों को परामर्श, गणपति पुले)

जो भी हो चुका है, वह हो चुका है, आपको उसे बताने की आवश्यकता नहीं :

''... अब एक बात की मैं आपको चेतावनी देना चाहती हूँ, अपने पति को अपने अतीत की गलतियों के विषय में न बतायें। वह नहीं होना चाहिये, उसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप अब सहजयोगी हैं। आप लोग अब परिवर्तित लोग हैं और जो भी हो गया है वह हो गया है, आप को उसे बताने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु भविष्य और वर्तमान की बात करें।

ठीक है? इसलिये समझदार बनें, केवल आपकी समझदारी ही एक खुशहाल वैवाहिक जीवन बना सकती है। यदि आप बुद्धिहीन बन जायें, कोई विवेक नहीं है तो विवाह असफ़ल होगा...''

(२००२, दुल्हनों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

VII. एक दूसरे के साथ कैसे बात करें

मर्यादा वह सीमा है, जिसमें प्रत्येक को रहना है :

''... यदि दो लोगों का विवाह सफ़ल नहीं है, तो हम पूरे देश की प्रसन्नता भरी जिन्दगी की आशा कैसे कर सकते हैं? जरा सोचिये। इस स्तर पर शान्ति के बीज बोये गये हैं। इसलिये हमें बुद्धिमान व्यक्ति बनना है, वह विवाह की मुख्य बात है: हम किस सीमा तक इस बारे में समझदार हैं। क्रोध के आवेश में जाना सरल है, क्रोधित होना, किसी अभद्र, अविवेकी आदत में जाना, परन्तु जो व्यक्ति समझदार है, वह उस भद्रता की सीमा को कभी लांघता नहीं है। आज-कल जब हम श्रीराम के विषय में पढ़ते हैं कि वे मर्यादा पुरूषोत्तम हैं। मर्यादा वह सीमा है, जिसमें प्रत्येक को रहना है। एक स्त्री को अपनी सीमा में रहना है और पुरूष को अपनी सीमा में रहना है...''

(१९८१, विवाह का अर्थ है आनन्द देना, लंदन)

किसी की उपेक्षा करना, अत्यधिक कठोरता है :

''... परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है, कि आप किसी की उपेक्षा करें : अपने कर्तव्यों की, अपने बच्चों की, पत्नी की, पति की, किसी की भी उपेक्षा करना अत्यधिक कठोरता है।

यदि किसी छोटी बात के लिये स्त्री क्रोधित हो जाती है और पति के साथ बात नहीं करती है या पति अपनी पत्नी की अवहेलना करता है, उसकी परवाह नहीं करता है, देखभाल नहीं करता, तो सहजयोग के अनुसार यह अपराध है। यह गलत बात है, ऐसा करना। क्योंकि आप में सन्तुलन होना

चाहिये। आपके स्वभाव में कोमलता होनी चाहिये, दूसरों के साथ अत्यन्त कोमलता से बात करें और दयालु एवं अच्छे रहें। जरा सोचिये, कि आप ऐसे कर रहे हैं या नहीं...''

(१९९२, श्रीगणेश पूजा, पर्थ)

यदि आप इस ओर का ध्यान नहीं रखेंगे, तो सहजयोग कभी कार्यान्वित नहीं होगा :

''... आप अपने भाईयों और बहनों से क्या कहते हैं, सब से महत्वपूर्ण बात है। यदि आप इस ओर ध्यान नहीं देंगे तो सहजयोग कभी कार्यान्वित नहीं होगा। आप अपनी पत्नी से कैसे व्यवहार करते हैं, पति से करते हैं, अपने भाईयों और बहनों के प्रति। यह सबसे महत्वपूर्ण है...''

(१९८१, सबकॉन्शस, सुप्राकॉन्शस, चेल्सम रोड, लंदन)

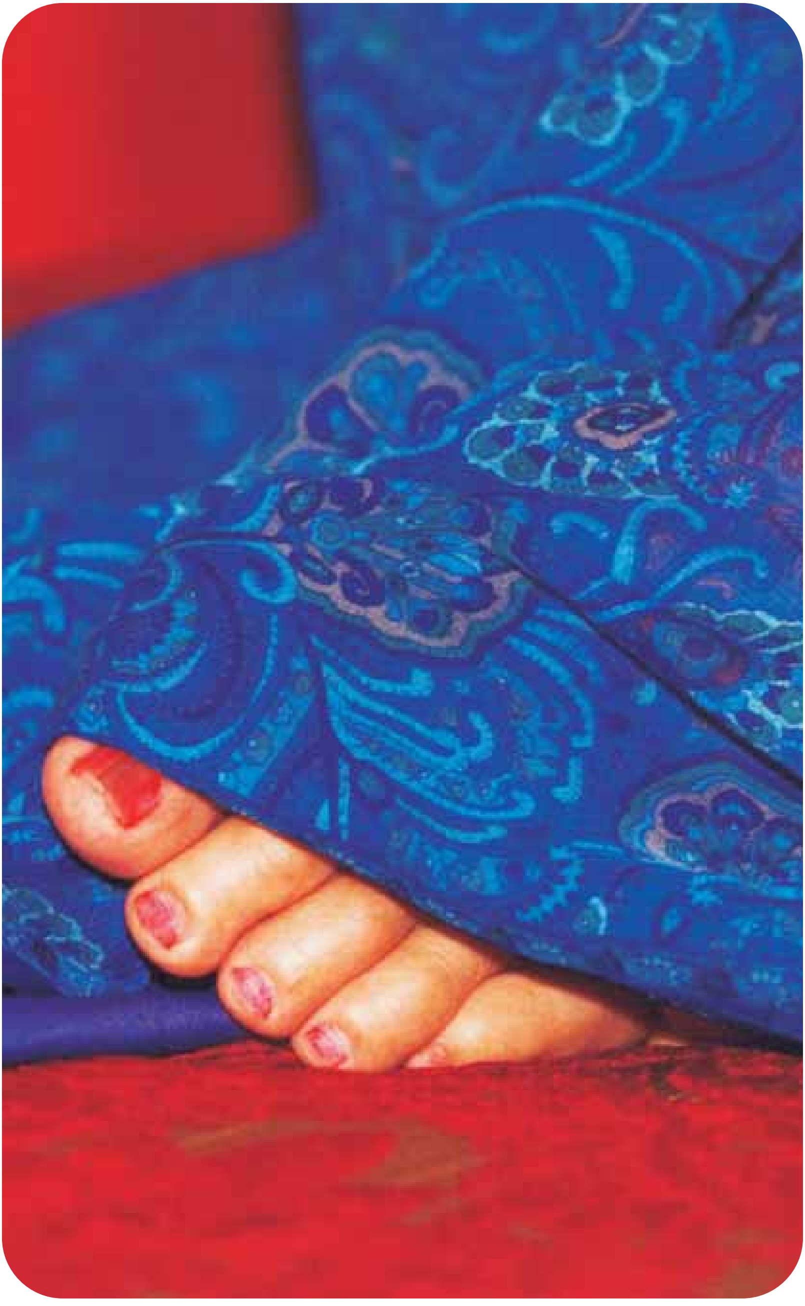

विवाह में सन्तुलन

I. सुरक्षा और शान्ति

ज्यों ही आप न्याय माँगना शुरू करते हैं तो वहाँ कोई शान्ति नहीं होती :

"... सो, हमें यह समझना है कि हमने परिवार की शान्ति के प्रति और परिवार में न्याय और बाहर में क्या योगदान दिया है। हम में न्याय होना चाहिये। न्याय की माँग नहीं की जाती है, ज्यों ही आप न्याय की माँग शुरू करते हैं तो तब वहाँ कोई शान्ति नहीं होती, इसलिये हमें न्याय की माँग नहीं करनी चाहिये, हमें अपने स्वयं के साथ और दूसरों के साथ न्याय करना चाहिये और हमें अपने प्रति एवं दूसरो के प्रति शान्तिमय होना चाहिये ..."

(१९८६, बैल्जियम और हॉलैण्ड, बैल्जियम)

आपको अपनी पत्नी से प्रेम करना अच्छा लगता है और किसी अन्य को उस प्रकार से नहीं :

"... इस समय यह आपके लिये एक प्रवचन है जिसे आप किसी रूढ़ीवादी स्थान पर सुन सकते हैं, परन्तु यह सम्पूर्ण रूढ़ीवादिता आपका अंग-प्रत्यंग हो जाती है और आप इस के साथ पूर्णतया बंध जाते हैं। आपको अच्छा लगता है। आपको अपनी पत्नी से प्रेम करना अच्छा लगता है और किसी अन्य से उस प्रकार से नहीं। पति को उससे एक विशेष प्रकार से प्रेम करना अच्छा लगता है और पत्नी को भी एक विशेष प्रकार से पति से प्रेम करना अच्छा लगता है, यह होता है। कोई असुरक्षितता नहीं है। अन्यथा आप घर वापिस आते हैं और पाते हैं कि आप की पत्नी किसी और के साथ भाग गयी है, जरा सोचिये, क्या स्थिति है..."

(१९८२, हृदय, विशुद्धि, आज्ञा और सहस्रार, डर्बी, यू.के.)

"**...आप लोग गौरी हैं-कुमारी।** आपको माँ की पूजा अपने भावी वैवाहिक

जीवन के लिये करनी है...''

(२०००, दुल्हनों के साथ बातचीत, दिल्ली)

झगड़ा नहीं करो :

''... यह एकाकारिता प्रथम परिवार में कार्यान्वित होनी चाहिये। यह बड़ा महत्वपूर्ण है। जिस परिवार में हर समय अशान्ति है, उसमें ऐसे बच्चे नहीं हो सकते, जो एकाकारिता की स्थिति में हों। इसलिये मैं उन्हें सदैव कहती हूँ कि झगड़ा मत करो। यदि परिवार में वे लड़ रहे हैं, तो वे सहजयोगी नहीं हो सकते हैं। यदि ऐसी लड़ाई है तो बेहतर है, कि ऐसे परिवार से बाहर निकल जाओ। इसलिये हमने तलाक की अनुमति दी है। यदि कोई पुरूष दूसरी स्त्रियों के साथ प्रेमालाप करता है या गलत कार्य करता है, तो हमने उसे सहजयोग से निकल जाने को कहा है। उसका कारण है, कि एक खराब सेब सभी सेबों को खराब करता है, सो, इस प्रकार के पुरूष या स्त्री को पूरी तरह से सहजयोग से बाहर रखना चाहिये, ताकि परिवार के सम्बन्ध बेहतर रहें, जो कि सहजयोग में बड़ा महत्वपूर्ण है। आपके पारिवारिक सम्बन्ध पूर्णतया उत्तम होने चाहिये।

मुझे समझ में नहीं आता है, आप अपनी पत्नी के साथ का आनन्द नहीं ले सकते हैं, तो आप इस संसार में किस का आनन्द लेंगे? यदि आप पारिवारिक जीवन का आनन्द नहीं ले सकते, तो आप किसी भी चीज़ का आनन्द नहीं ले सकते हैं। यह पति-पत्नी का इतना नज़दीकी सम्बन्ध खत्म होता है, केवल श्रीगणेश जी की समस्या के कारण। यदि गणेश तत्व सही होता तो सर्वोत्तम एकीकरण होता, पति-पत्नी में संतुलित समझदारी होती, परन्तु यदि असफ़ल हो जाती है शादी तो इसका अर्थ है कि निश्चित ही श्रीगणेश तत्व में कुछ खराबी है। अपने स्वयं के श्रीगणेश को सही करने का प्रयत्न करें न कि दूसरों का देखें। आपको ध्यान करना है श्रीगणेश पर और अधिक ध्यान करना है, भूमि माँ पर बैठ कर ध्यान करें...''

(१९९८, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

II. विश्वास

बच्चों को परमात्मा में विश्वास दृढ़ होता है, जब उनके माता-पिता एक

दूसरे पर विश्वास करते हैं :

''... यदि आप दूसरे लोगों के साथ एक दूसरे की बात करना शुरू करते हैं, तो वह अनन्यता, विश्वास समाप्त हो जाता है। इसलिये, आप लोगों को एक दूसरे पर विश्वास करना है। बच्चों को परमात्मा में विश्वास तब होता है, जब वे अपने माता-पिता से सीखते हैं, कि आपस में किस प्रकार विश्वास करना चाहिये। सो, आप लोग वह घोंसला हैं, जहाँ कल महान बच्चों को जन्म लेना है, स्थापित होना है और सन्तों के समान विकसित होना है...''

(१९८१, विवाह का अर्थ है आनन्द देना, लंदन)

जिस प्रकार आप स्वयं पर विश्वास करते हैं, उसी प्रकार दूसरे पर भी विश्वास करना चाहिये :

''... एकदम सरल-सीधा सम्बन्ध रखें और सीखें कि वैसा किस प्रकार होना है, आपके बच्चे आप से सीखेंगे और पूरे विश्व के परिवर्तन में अब समय नहीं लगेगा, एक बार जब हम वह विश्वास सीख लेंगे तो केवल पैसे में ही नहीं, पर हर प्रकार से। पूर्ण विश्वास, जिस प्रकार आप स्वयं पर विश्वास करते हैं, आपको उसी प्रकार दूसरे पर विश्वास करना है, जो अब दूसरा नहीं

रहा...''

(१९८१, विवाह का अर्थ है आनन्द देना, लंदन)

यह एक सुन्दर उत्थान है कि आप अपना जीवन किसी के साथ बाँट रहे हैं :

''... सर्वोत्तम बात है, कि एक दूसरे पर विश्वास करें, सन्देह न करें। अनेक शादियों के साथ एक और समस्या है, कि वे सन्देह करने लगते हैं और फिर अलग हो जाते हैं इसलिये कुछ भी सन्देह न करें। वैवाहिक जीवन से ड़रने की कोई बात नहीं है। यह एक सुन्दर अवस्था में आप प्रवेश करने जा रहे हैं। मैं कहूंगी कि यह एक सुन्दर उत्थान है आपका, कि आप किसी के साथ जीवन बाँट रहे हैं, परन्तु बहुत लोग हैं जो असफ़ल हो जाते हैं। क्यों ? क्योंकि वे सोचते हैं कि वे पुरूष हैं और ये स्त्रियां हैं। परन्तु दोनों एक साथ सुन्दरता से जुड़ सकते हैं और अत्यन्त प्रसन्नता से रह सकते हैं...''

(२००१, दूल्हों से बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

III. एकाकारिता

अब आप एक व्यक्ति के समान रहें :

''... सो, आपका भूल जाना है कि आप स्वतंत्रता से रहते हैं, अब आप एक व्यक्ति के समान रहें, एक ही व्यक्तित्व। एक दूसरे की शक्ति को समर्थन देना, एक दूसरे के पूर्ण रूप से प्रशंसासूचक। यह उस शान्ति को बनाता है, जिसके विषय में हम बात कर रहे हैं...''

(१९८१, विवाह का अर्थ है आनन्द देना, लंदन)

अपने साथी को पूर्ण रूप से स्वीकारना अपना अंग-प्रत्यंग जान कर :

''... मुझे विश्वास है, कि आप इसका महत्व समझते हैं और मुझे विश्वास है, कि आप सब ने अपने आप को इस अवसर के लिये तैयार कर लिया है। मैं आप सब के बीच यह देखना चाहूँगी कि आप में से कौन दिखाता है वास्तव में, सम्पूर्ण स्वीकार्य अपने साथी का, अपने अंग-प्रत्यंग के समान और वह गौरव जिससे आप उन से व्यवहार करेंगे।

मैं आप सब को आशीर्वाद देती हूँ। आप सब सन्त हैं और सन्तों ने यहाँ विवाह किया है। सभी देवदूत और दिव्य गण आप सब की प्रशंसा कर रहे होंगे, सो, सावधान रहें और अपना स्थान धारण करें, जैसे कि हम हिन्दी में कहते हैं, बिराजें, अपना स्थान पूरे गौरव और प्रतिष्ठा से ग्रहण करें...''

(१९८१, विवाह का अर्थ है आनन्द देना, लंदन)

जब प्रेम का बन्धन होता है, तो इतना लेना और देना होता है :

''... इस प्रकार की स्वतंत्रता एकदम गुलामी के विपरीत है, परन्तु मध्य में प्रेम है, जहाँ आप सब से बंधे हैं। मैं अपने बच्चों से बंधी हूँ। हाँ मैं हूँ, मुझे उन पर गर्व है। वे मुझे बाँधते हैं और मैं भी उन्हें बाँधती हूँ। यह आपसी बन्धन है, जिससे हम आपस में आनन्दित होते हैं। जब प्रेम का बन्धन होता है, तो इतना लेना और देना होता है, परन्तु क्या हम प्रेम के बन्धन का महत्व समझते हैं? थोड़ी सी बात से हम इसे तोड़ देते हैं। जैसे कि पत्नी कहती हैं, 'आज मैं बाहर जाना चाहती हूँ।' पति कहता है, 'क्यों, मैं बहुत थका हुआ हूँ, क्या तुम समझती नहीं हो?' या यदि पति कहता है, 'मेरा कुछ खाने का मन है' या कोई विशेष चीज़ वह कहता है, 'पैन केक' या कुछ और एक छोटी सी चीज़, 'ओह मैं बहुत थकी हूँ, तुम सारे समय आदेश देते हो' यदि आप सोचें कि वह छोटी सी चीज़ बनाने से वह बहुत प्रसन्न होगा, उसे तरसना चाहिये कि यह जानने के लिये कि वह क्या चाहता है और पति को भी यह जानने के लिये कि वह क्या चाहती हैं, उत्सुक रहना चाहिये। फिर एक दूसरे के साथ का आनन्द ले, नहीं तो आपके मनुष्यता के गुण व्यर्थ हो जायेंगे...''

(१९७८, आज्ञा चक्र, सार्वजनिक कार्यक्रम, लंदन)

वहाँ बलिदान का कोई प्रश्न नहीं है :

''... हर क्षण इतने सुन्दर बन्धनों से बंधा होता है, जहाँ आदान-प्रदान होता है। आपने क्या प्राप्त किया है? जिस प्रकार आप लड़ रहे हैं, जिस प्रकार आप व्यवहार कर रहे हैं, उससे आपने क्या प्राप्त किया है? जब आप मर जाते हैं, तो आपको अखबार में ऐलान करना पड़ता है, कि एक्स.वाई.जैड़ मर गया है और आप पाते हैं कि वहाँ कोई नहीं आया है।

आज कल यह स्थिति है। ऐसी शुष्कता, ऐसा खालीपन, ऐसा अकेलापन रहता है। इस सब से आपने क्या पाया है? सो, हमारे अन्दर यह बन्धन है और बलिदान का कोई प्रश्न ही नहीं उठता..... हमें परिवार के लिये बलिदान करना चाहिये-आप क्या बलिदान कर रहे हैं? यदि आप को एक अच्छा जीवन व्यतीत करना है, तो आप कुछ बलिदान नहीं कर रहे हैं, परन्तु आप लाभ पा रहे हैं, अच्छा जीवन व्यतीत कर के...''

(१९७८, आज्ञा चक्र, सार्वजनिक कार्यक्रम, लंदन)

तब पति-पत्नी के सम्बन्ध सहजयोग में बहुत सुन्दर होते हैं :

''... श्रीराम के जीवन से हम बहुत कुछ सीखते हैं और सीताजी के जीवन से भी। उन दोनों ने हमारे लिये इतना किया है, हमारे सामने इतना महान जीवन लाये हैं। अपने पूरे जीवन में उन्होंने तकलीफ़ें ही तकलीफ़ें उठाईं। वे गाँवों में रहे, जंगलों में रहे, जब कि वे राजा और रानी थे। उन्हें कभी ज्ञान ही न था कि असुविधा क्या होती है। वे सब स्थानों में नंगे पैर गये। वे जीवन की सब वेदनाओं से गुजरे। सीता जी को रावण ले गया था, जो अत्यन्त भयंकर आदमी था। उन्हें राक्षस के साथ रहना पड़ा। जरा सोचिये, वे राक्षस के साथ रही और वहाँ उन्होंने अपनी महानता दिखायी। सीताजी और श्रीराम के पात्रों का चरित्र चित्रण यह दिखाता है कि उनकी विशेषतायें एक दूसरे की प्रशंसासूचक थीं और यदि ऐसा ही हो तो पति-पत्नी के सम्बन्ध सहजयोग में सुन्दर होंगे। यह ऐसा ही होना चाहिये...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

''... हमारे अन्दर के गृहलक्ष्मी तत्व के लिये यह महत्वपूर्ण है, कि हम साथ हों, साथ विकसित हों, हर समय एकाकारिता का अनुभव हो जो हमारे अन्दर है...''

(१९८१, विवाह का अर्थ है आनन्द देना, लंदन)

IV. प्रणयसम्बन्धी (रोमान्टिसिज्म)

सहजयोग में मैंने देखा है, कि एक बार लोगों की शादी हो जाती है, तो वे

सहजयोग को भूल जाते हैं :

''... परन्तु एक और चीज़ सहजयोग में होती है, जो मैंने देखा है, कि एक बार लोगों की शादी हो जाती है, तो लगता है कि वे सहजयोग को ही भूल गये हैं व शादी सहजयोग का अन्त बन जाती है। वे एक दूसरे के साथ इतने पागल हो जाते हैं कि वे सहजयोग को भूल जाते हैं, वे मुझे भूल जाते हैं, वे सब कुछ भूल जाते हैं। मुझे कुछ लोग पता हैं जो सहजयोग में बड़े ही अच्छे थे, एक बार उनकी शादी हो गयी तो वे कम से कम दो साल के लिये सहजयोग से खो गये। उनका एक बच्चा हुआ, जिसे समस्या थी और तब वे सहजयोग में आये। इसलिये, इस प्रकार का रोमांस सहजयोग में किसी लाभ का नहीं है। यह सब बनावटी है। यह सब मानसिक है। इस में कोई बुद्धि नहीं है, इस प्रकार का व्यर्थ का रोमांस, जिसमें लोग लीन हो जाते हैं। क्योंकि वह आपको परमात्मा को भुला देता है, आपको माँ को भुला देता है, आपको अपने जीवन का कार्य भूला देता है, आप सब साक्षात्कारी आत्मा हैं और आपको यह कार्य करना है...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

आप दो विभिन्न हस्तियाँ हैं - आपको सही प्रकार से व्यवहार करना है :

''... परन्तु जिस प्रकार लोग जल्दबाज़ी करते हैं और शीघ्रता से सब कुछ करते हैं, वे अपने वैवाहिक जीवन को गड़बड़ा देते हैं। पहले वे हनीमून के लिये जायेंगे, दूसरा सड़कों पर नज़ारा दिखायेंगे, फिर तीसरा वे तलाक के न्यायालय में पहुँच जायेंगे।

सो, आप को सम्पूर्ण सन्तुलन में रहना है, पूर्ण प्रतिष्ठा से। विशेषकर भारत के गाँवो में यह बड़ा खराब लगता है, कि लोग एक दूसरे को 'किस' करते हैं या कहीं बैठे होंगे। इसकी कोई शीघ्रता नहीं है, क्या जल्दी है? मुझे समझ में नहीं आता है। मुझे यह भी बताया गया, कि 'एयरपोर्ट' पर जब लोग होते हैं, तो पति अपनी पत्नी को छेड़ता है और पत्नी अपने पति को छेड़ती है, सारे समय पति को पकड़े रखती है और पति अपनी पत्नी को पकड़े रखता है, यह बड़ा अजीब लगता है, जैसे कि कुत्ते की पूँछ होती है और पूँछ का कुत्ता

होता है। आप लोग दो अलग-अलग हस्तियाँ हैं, आप को सही प्रकार से व्यवहार करना है...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

इस प्रकार का व्यवहार करें कि लोग कहें कि-यह सही विवाह है :

''... शादी के प्रति आपका रवैया ऐसा होना चाहिये कि हमें कोई ऐसा चाहिये, जो हमारा प्रशंसा-सूचक हो। हमें अपने रथ के लिये एक दूसरा पहिया चाहिये। बस उतना ही। यह नहीं कि आप पूरा उसमें घुस जायें और एक पहिया बन जायें और एक पहिया वाला रथ मैंने आज तक नहीं देखा है। इसलिये आप अपनी प्रतिष्ठा, अपनी समझदारी से आप को ऐसे व्यवहार करना चाहिये कि लोग कहें कि, 'यह एक सही विवाह है'...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

आप उम्मीद रखते हैं कि वे क्लार्क गेबल हों, ऐसा नहीं है :

''... मैंने फ़िल्मों में भी देखा है, सब रोमांस के दृश्य होते हैं-ऐसा होता नहीं है कभी, कोई वैसा होता नहीं है, यह सब बकवास है, सो, आप उन्हें क्लार्क गेबल के रूप में देखना चाहते हैं, ऐसा नहीं है...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

वे रोमान्स ही करते रहते हैं और भारतीय सहजयोगियों को धक्का लगता है :

''... दूसरी बात है, जब हम भारत में जाते हैं, मैंने सुना कि जिनका वहाँ विवाह हुआ या हो चुका था, जो भी है, जोड़ियां समुद्र के किनारे पर जाती हैं और रोमान्स होता है और भारतीय योगियों को बड़ा धक्का लगता है, वे सन्त समझे जाते हैं, ठीक है, मैं सोचती हूँ कि 'बैडरूम' में वे झगड़ते हैं और बाहर वे यह सब करते हैं। हम लोग इसके विपरित हैं। 'बैडरूम' में हम एक दूसरे के साथ बड़े दयालु होते हैं और बाहर हम झगड़ते हैं। इसलिये मुझे लगता है कि भारतीय लोगों को यह देख कर बड़ा धक्का लगता है...''

(१९८६, लीड़रों से बात, हौलेण्ड)

V. शारीरिक सम्बन्ध

अत्यन्त समझदार एवं प्रतिष्ठित वैवाहिक जीवन व्यतित करें :

''... सो, अपने जीवन में हमें देखना चाहिये कि हम में वह सन्तुलन है या नहीं, यह बड़ा महत्वपूर्ण है, यदि हमें श्रीगणेश जी को देखना है। श्रीगणेश, जैसे कि आप जानते हैं कि मूलाधार पर हैं। वे हमारी बुद्धि को नियंत्रित करते हैं जहाँ तक कि मूलाधार का प्रश्न है, विशेष कर सब मलत्याग। हम लोग वे नहीं हैं जो आसक्ति में विश्वास करते हैं न ही हम अलगाव में विश्वास करते हैं, परन्तु सन्तुलन में। इसलिये आप सब का विवाह होना है, आपका सही प्रकार का शारीरिक जीवन होना चाहिये, आपके सही बच्चे होने चाहिये और बड़ा समझदारी का प्रतिष्ठित वैवाहिक जीवन व्यतित करना चाहिये। यह बड़ा महत्वपूर्ण है। परन्तु प्रेम होना चाहिये। पति-पत्नी में बच्चों में, माता-पिता और सब के साथ प्रेम होना चाहिये।

यदि एक व्यक्ति असन्तुलित हो जाता है, तो पूरा परिवार असन्तुलन में चला जाता है। परिवार को मधुरता के साथ स्थापित करना भी एक कला है और यदि दोनों मानते हैं आर कहें कि हम लोग इस प्रकार करेंगे, तो मुझे विश्वास है, कि यह कठिन नहीं होगा, क्योंकि आप सहजयोगी हैं, सो आपको पहले से ही पता है, सन्तुलन की विशेषता। पश्चिम में, मैं सोचती हूँ कि संतुलन पत्थरों पर गिर गया है क्योंकि आज कल हर प्रकार की समलिंग यौन समस्या और यह और वह समस्यायें चल रही हैं, यह असन्तुलन के कारण है, लोग उस सीमा तक चले गये हैं। दूसरा है वैराग्य, जहाँ आपके लोग सन्यासी है, सन्यासी बनाये जाते हैं जैसे टी.एम. आदि में उन्होंने इस प्रकार शुरू किया है, क्योंकि ये अस्वाभाविक चीज़ें हैं, स्वभाविक वह है कि आप संतुलन में रहें। यदि आप संतुलन में नहीं हैं तो सब गड़बड़ हो जाती है और आप या तो किसी चीज़ की अतिशयता में चले जाते हैं और दूसरी चीज़ में कुछ भी नहीं। इस प्रकार लोग तकलीफ़ें पाते हैं...''

(१९९२, श्रीगणेश पूजा, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया)

इसका अर्थ है, खुशी भरा वैवाहिक जीवन :

''... प्रश्नकर्ता : 'क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूँ? क्या आप कहती हैं कि किसी को यौन का उपयोग नहीं करना चाहिये?'

श्रीमाताजी : 'नहीं, नहीं, ऐसा नहीं। हर एक को विवाह करना चाहिये, यौन का उपयोग करना चाहिये। यह प्रसन्नता भरी वैवाहिक जिन्दगी के लिये है, बच्चे पाने के लिये है और बड़ा खुशीभरा, अच्छा जीवन व्यतित करने के लिये है। आपका एक अच्छा यौन जीवन होना चाहिये। भारत में हम यौन (सैक्स) के विषय में सोचते नहीं हैं, कभी नही, यह सहज ही है। हम कभी यौन या यह सब नहीं सोचते हैं। हम इसके विषय में पढ़ते नहीं है। मैं कह सकती हूँ कि कुछ पाश्चात्य प्रभावित लोगों को मिलते हैं, उन्हें छोड़ कर, आप शायद ही किसी को यह पूछते हुये पायेंगे। वे लोग गाँव वालों को मिले हैं, वे 'सैक्स' के विषय में सोचतें भी नहीं हैं। यह एक सम्बन्ध है, जो पत्नी के साथ होता है, बड़ा पवित्र सम्बन्ध। जब आप अपनी पत्नी के साथ होते हैं, तो आप इस में अन्तिम सीमा पर ही लिप्त होते हैं। बस वही सब है। हम बैठ कर यौन के विषय में पढ़ते नहीं हैं। आपको क्यों इस विषय में पढ़ना है? यह सहज क्रिया है, आपको क्यों पढ़ना है?'...''

(१९७९, मूलाधार चक्र, भारत)

जब यौन परिपक्व होता है :

''... 'सैक्स' मनुष्यों के लिये बिल्कुल भी महत्वपूर्ण नहीं है, बिल्कुल महत्वपूर्ण नहीं है। जो मनुष्य उच्चतम स्तर का है, वह वास्तव में इसमें केवल तभी लिप्त होता है जब उन्हें बच्चे चाहिये होते हैं। पवित्र मन में आकर्षण, रोमांस जैसी निरर्थक बातें नहीं आती हैं, यह सब मनुष्य की रचना है। लोगों में इस दासता से बड़ी हैरानी होती है। यह हमारे अन्दर के बड़े निम्न स्तर से आती है। यह निम्स स्तरीय मनुष्यों से आती है, कि दासता बन जाती है। आपको इस का मालिक होना चाहिये।

आज, पश्चिम में, जब मैं अपने आसपास देखती हूँ, जो उसी रचना का अंग-प्रत्यंग है, इतनी इससे अस्वस्थता आयी है, कि मैं भयातुर हूँ, कि अब

आप सब का चित्त यौन की परिपक्वता की ओर कैसे मोड़ूं। जब यौन परिपक्व होता है, तो आप पिता या माता, एक पवित्र व्यक्तित्व बन जाते हैं। जब आप सुनते हैं, कि नब्बे साल की स्त्री ने उन्नीस वर्ष के लड़के से शादी की है, तो बिल्कुल समझ नहीं आता है-इस संसार में यह कैसा समाज बना दिया गया है, इस प्रकार का मूर्खता भरा व्यवहार? हमें स्वयं को परिपक्व करना है, इसका यह अर्थ नहीं है, कि छोटी उम्र में सन्यास लें, यह उसका अर्थ नहीं है। नि:संदेह आपको परिपक्व होना है, आप को उसके लिये तपस्या चाहिये। जब बिना किसी महत्व की बात महत्वपूर्ण बन जाती है और वे भी इतनी महत्वहीन चीज़ें, वे ऐसी है, जिस प्रकार हमारे बाल हैं, यदि आपके बाल गिरते हैं, तो उसका भी कुछ अर्थ है, परन्तु यदि यौन खत्म हो जाता है, तो उसमें क्या गलत है? यह बड़ा अच्छा है। गन्दे कचरे से अच्छा छुटकारा। कितनी व्यर्थता, ऊर्जा की होती है। इतनी रूचि, इतना कीमती चित्त, इतनी मंगलता खर्च हो जाती है, इस प्रकार की मूर्खता पूर्ण चीज़ों में...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, इंग्लैंड)

आप एक अतिशयता से दूसरी अतिशयता में जाते हैं, परमात्मा मध्य में हैं :

''... यह कहाँ हैं, यह किस ग्रन्थ में लिखा है, कि सन्त को यौन की कसौटी पर रखना चाहिये? ठीक है, मैं नहीं कहती कि इसका दमन करना चाहिये, वह निरर्थकता आपके चर्चों में होती है, नि:संदेह वह निरर्थकता है, मैं मानती हूँ.... परन्तु यह एक दूसरी अतिशयता है, एक तो यौन का दमन करना, ठीक है? जिस प्रकार 'नन' लोग, वह सब निरर्थकता है, परन्तु दूसरा उससे भी खराब है। आप एक अतिशयता से दूसरी अतिशयता में जा रहे हैं। परमात्मा मध्य में हैं...''

(१९७९, मूलाधार चक्र, भारत)

एक स्वाभाविक चीज़ :

''... अब जीवन के हर पहलु में एक विचार धारण, कृत्रिम समझदारी है। उदाहरण के लिये 'सैक्स', जो एक सामान्य और प्राकृतिक चीज़ है, इसमें

कोई इतनी महानता की बात नहीं है, पर उसे भी आपने इतना कृत्रिम बना दिया है, कि अब 'सैक्स' आपके मस्तिष्क में है, इसके द्वारा आपने न केवल मूलाधार में श्रीगणेश को मौन कर दिया है, परन्तु मस्तिष्क में महागणेश को भी...''

(१९८६, सहस्रार पूजा, आल्पे मौटे, इटली)

VII. पैसा

वह आपसे पूछे बिना खर्च नहीं कर सकती है और आप भी उससे पूछे बिना खर्च नहीं कर सकते :

''... अब सहजयोग में हमारा एक रिवाज़ है या हम इसे कानून कह सकते हैं, कि सारा पैसा, जो आप कमाते हैं, वह पत्नी के पास रखना चाहिये और आप को उससे पूछे बिना कुछ खर्च नहीं करना चाहिये और उसे भी बिना आपसे पूछे कुछ भी पैसा खर्चना नहीं चाहिये। पैसा एक बहुत बड़ी समस्या है। सो, यदि आपको पैसा चाहिये, तो आपको पूरा अधिकार है। यह दोनों की सार्वजनिक संपत्ति है। परन्तु पत्नी को पता होना चाहिये कि कितना पैसा है, वह आपसे पूछे बिना खर्च भी नहीं कर सकती है और आप भी उससे पूछे बिना खर्च नहीं कर सकते हैं...''

(२००१, दूल्हों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

दूसरे परिवार को पैसा भेजना :

''... अन्तिम, परन्तु कम नहीं यह महत्वपूर्ण है कि एक बार आपकी शादी हो जाती है, तो हो सकता है कि लड़कियाँ अपने स्थानों से उसी समय आपके साथ नहीं जा पायेंगी 'वीज़ा' की समस्या के कारण, परन्तु उन्हें पैसा न दें अपने परिवारों को भेजने के लिये, इसकी सहजयोग में अनुमति नहीं है। लड़कियों को अपने माता-पिता को पैसे नहीं भेजने चाहिये। उसकी अनुमति नहीं है- और पति को उस कारण तकलीफ़ दें। कभी कभार यदि आपको भेजना है तो ठीक है, परन्तु नियमित रूप से भेजना ठीक नहीं है और यह बात कभी-कभी मेरे सामने लायी जाती है, इसे मैं प्रोत्साहित नहीं करना चाहती

हूँ। जहाँ तक इस विषय में है, आपको अपनी पत्नी को कोई पैसा नहीं देना चाहिये, अपने रिश्तेदारों को भेजने के लिये, अन्यथा यह पैसे से सम्बन्धित विवाह होगा और लोग भी शादी करेंगे, ताकि वे कुछ पैसा निकाल सकें...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपति पुले)

बच्चे

अपने बच्चों की देखभाल करें, उन्हें आनन्द दें, उनके लिये सुन्दर घोंसला बनायें :

''... क्योंकि आप लोग फूलों के समान हैं, जिन्हें फल उत्पन्न करना है, प्रकृति यही चाहती है, वह है-आपके बच्चे इसलिये आप लोग पुरूष और स्त्रियां हैं। यह मूलतः है। अब यदि आप सोचते हैं, कि उस जिम्मेदारी के साथ आप कुछ और कर सकते हैं, तो आप करें, परन्तु मुख्य चीज़ है वह और यदि आप वह नहीं करते हैं कि बच्चों की देखभाल करें, उन्हें आनन्द दें, उनके लिये एक सुन्दर घोंसला बनायें, तो फिर मैं कहूँगी, कि आप मूल कर्तव्य की अवहेलना कर रहे हैं और आपका चित्त किसी और चीज़ पर है...''

(१९८१, तीसरा सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी)

एक दूसरे का सम्मान करें और इस प्रकार कि बच्चे को स्पष्टतः दिखे :

''... पिता और बच्चों का सम्बन्ध, माता और बच्चों का सम्बन्ध महत्वपूर्ण है। वास्तव में माँ को बच्चे की देखभाल अधिक करनी चाहिये और बच्चे को सम्मान करना चाहिये। पिता को कभी भी बच्चे की उपस्थिति में माँ को डाँटना नहीं चाहिये। यह एक बात है जो समझनी जरूरी है, कि यदि पिता बच्चे की उपस्थिति में माँ को डाँटना शुरू करता है, तो बच्चे को माँ के प्रति कोई आदर नहीं होगा। परन्तु सम्मान को सम्भालना होगा क्योंकि यदि पत्नी अपने पति का सम्मान करती है, तो तब बच्चे को समझ आयेगा कि उसका सम्मान कैसे करना है और पति को भी।

इसलिये पूरी चीज़ इस प्रकार बनायी जाती है। यह एक प्रकार का नमूना है, जिसका बच्चे अनुसरण करें। स्त्री को पति पर प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये, कम से कम बच्चों की उपस्थिति में। वह बड़ा गलत है, क्योंकि फिर बच्चे उस युक्ति को सीख लेते हैं और आप पर प्रभुत्व दिखाने लगते हैं। सो, यह आप से बच्चों की ओर बहता है। यह देखने का प्रयत्न करें कि यदि आप को कुछ करना है, तो स्वयं ही कर लें और पति का सम्मान इस

प्रकार करें कि बच्चों को स्पष्टत: दिखायी दे कि पिता, माता द्वारा सम्मानित है। वे एकदम बन्दर के समान होते हैं। जैसे आप व्यवहार करेंगे, वे भी वैसा ही व्यवहार करेंगे। सो, आप उन्हें एक विशेष प्रकार से व्यवहार करने दें, वे वैसे ही व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यवहार का अच्छा नमूना रखेंगे तो वे अनुसरण करेंगे...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

अपनी समस्यायें भूल जाईये, अपने बच्चों की देखभाल करो :

''... बड़े महान सन्त इस देश में जन्म लेने वाले हैं, इसलिये मुझे आप से विनती करनी है, कि अपनी समस्यायें भूल जाओ, पति-पत्नी समस्यायें कुछ नहीं हैं। अपने बच्चों की देखभाल करें, उन्हें प्रतिष्ठा दें, उन्हें एक घोंसला दें, जहाँ वे रह सके...''

(१९८१, तीसरा सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी)

हमें अपने बच्चों के समक्ष लड़ाई नहीं करनी चाहिये :

''... अब आप के एवं मेरे बीच है क्योंकि आप भी पति और पत्नी हैं और एक बात होनी चाहिये कि हमें बच्चों के सामने झगड़ना नहीं चाहिये, हमें पति और पत्नी की भद्रता रखनी चाहिये, अनेक बातें हैं जो हमें बच्चों के सामने नहीं करनी चाहिये...''

(१९८१, तीसरा सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी)

अनेक महान आत्मायें हैं जो जन्म लेना चाहती हैं :

''... आप एक बच्चे को देखिये, एक लड़की को देखें, जो अबोध है। उसकी रूचि उसकी छोटी गुड़िया में है, वह उसकी पूर्णतया माँ है। यदि वह बचपन से ही ठीक से बड़ी हुई है, तो वह माँ हैं और मातृत्व स्त्रित्व का सार है। कुछ सहजयोगी हैं जो इतने मूर्ख हैं कि वे शादी के बाद बच्चे नहीं चाहते हैं। उन्हें जल्द ही शादी के बाद करने चाहिये। हमने यह सब इसलिये नहीं किया, कि ऐसे लोग हों जो बच्चे नहीं पैदा करना चाहते हैं। यदि वे कर सकते हैं, तो उन्हें करने चाहिये। कारण यह है कि अनेक महान आत्मायें हैं, जो जन्म लेना चाहती हैं। ये महान फल हैं, जो आपके पारिवारिक जीवन के वृक्ष पर

विकसित होने वाले हैं और यदि आप बच्चे नहीं चाहते हैं, तो आप क्या कर रहे हैं यहाँ? सो, विष्णूमाया की मुख्य बात है कि एक स्त्री को माँ होना है। तब वह मातृत्व उसे विशेष सामर्थ्य, चमकने का देता है...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

इस विषय में सही तरीके से सोचिये और फिर बच्चे पैदा करें :

''... सो, जैसा कि आपने कहा कि आपके बच्चे होने चाहिये, परन्तु जल्दी न करें। यह सत्य है। इस बारे में ठीक प्रकार से सोच लें और फिर बच्चे पायें। जब आप के पास एक सही स्थान रहने के लिये है, और वह सब तब बच्चे पायें...''

(१९८०, विवाह और सामूहिकता, यू.के.)

यदि किसी के इस प्रकार के विचार हैं तो उन्हें सहजयोग में शादी नहीं करनी चाहिये :

''... अन्त में मैं कहूँगी तब आपके बच्चे होंगे और बच्चे सब साक्षात्कारी आत्मा होंगे। कुछ स्त्रियों और पुरूषों के अजीब ख्याल होते हैं, कि उन्हें बच्चे नहीं पैदा करने चाहिये। तब मैं उन्हें बारह बच्चे दूंगी। बच्चों से भर दूंगी। जो इस प्रकार कहते हैं, एक बार जब उनका बच्चा होता है, तो वे पागल हो जाते हैं, उनका 'पैन्ड्यूलम' एक कोने से दूसरे कोने तक हिलता है। ये सब मूर्खता भरे विचार हैं। यदि किसी के ऐसे विचार हैं तो उन्हें सहजयोग में शादी ही नहीं करनी चाहिये...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

ये श्री माँ के बच्चे हैं और हम केवल उनकी देखभाल कर रहे हैं :

''... वास्तव में आप लोगों की शादियों के पीछे मेरा स्वार्थ है, कि अनेक महान सन्त हैं, जो पुनः जन्म लेना चाहते हैं और मैं केवल उन लोगों की अपने द्वारा शादी करवाना चाहती हूँ, जो इस प्रकार के इतने अच्छे बच्चे पैदा करेंगे। परन्तु हम अपने बच्चों को बिगाड़ देते हैं, उन्हें नष्ट कर देते हैं। हमारे लिये वे हमारे बच्चे हो जाते हैं, न कि आदिशक्ति के। तब ऐसे बच्चे अलग ही दिखते हैं क्योंकि वे पूरी तरह से बिगड़ चुके हैं, वे बड़े आक्रमक होते हैं, वे बड़े शरारती होते हैं, वे अत्यन्त तकलीफ़दायक होते हैं, वे

भूतबाधित होते हैं। परन्तु यदि आप देखें कि आप केवल सहजयोग के लिये बच्चे पैदा कर रहे हैं, तब आप मोह हीन होंगे।

मोह-हीनता के बिना तो आप उन्हें नष्ट कर देंगे, अपना वैवाहिक जीवन नष्ट कर देंगे और आप किसी काम के नहीं रहते हैं। 'वे मेरे बच्चे हैं, मेरी जिम्मेदारी है' ऐसा आपको नहीं सोचना चाहिये। ये श्री माँ के बच्चे हैं और हम केवल उनकी देखभाल कर रहे हैं। कभी-कभी आपको उन्हें डाँटना है, उन्हें ठीक करना है। आपको उनसे बात करनी है और कहना है, 'आप लोग योगी हैं, आप महान लोग हैं, इसलिये हमारी शादी हुई है और फलस्वरूप, मैंने देखा है, जब बच्चे भयंकर होते हैं, तो स्त्रियां पागल हो जाती है, मैंने वह देखा है। और पिता बच्चों का समर्थन करता है, तो और भी अधिक खराब स्थिति होती है, या इसके विपरित...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

आपके कभी दो दृष्टिकोण नहीं होने चाहिये :

''... जब आप बच्चों के साथ निपट रहे हैं, तो आपको एक साथ उसी प्रकार जुड़ना चाहिये। आपके कभी दो दृष्टिकोण नहीं होने चाहिये। इस प्रकार होना चाहिये, बैठिये, एक दूसरे के साथ विचार-विमर्श करें कि हम किस प्रकार से बच्चों को सुधारें, हम यह देख रहे हैं। यदि बच्चा कुछ गलत कर रहा है, तो उसे कभी समर्थन न दें। आपको किसी भी प्रकार से समर्थन नहीं करना चाहिये...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

इसी कारण से भारतीय समाज इतना अच्छा है :

''... यदि आप अहंकारी हैं, झगड़ालू हैं और क्रोधित प्रवृत्ति के हैं, तो आपके बच्चे आपका अनुसरण करेंगे, वे पिता का अनुसरण नहीं करते, वे माता के समान करते हैं और इसलिये भारतीय समाज इतना अच्छा है। समाज अति उत्तम है...''

(१९८८, इन्ट्यूशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

आपको बच्चों की उपस्थिति में रोमांस नहीं करना चाहिये :

''... आपको अपने बच्चों को सही प्रकार से समझदारी भरा सदाचार

का मार्ग-प्रदर्शन करना है। उसके लिये आपको सही प्रकार का व्यवहार करना है। बच्चों की उपस्थिति में 'रोमांटिक' नहीं होना है। उनके साथ ऐसा नहीं करें कि स्वयं को कमरे में बंद कर के हर प्रकार के काम करें, परन्तु प्रतिष्ठित व्यवहार करें। अन्यथा बच्चे आप से ही सब सीखेंगे...''

(१९९१, ईस्टर पूजा, सिडनी)

यही नैतिकता का बोध आपको बच्चों को देना है :

''... यदि बच्चों को अबोध रखा जाये तो वे कभी इसमें लिप्त नहीं होते और वे कभी इन समस्याओं में नहीं फँसेंगे जो कुतूहल के कारण होती है। उन्हें कभी कुतूहल न बनायें।

आप प्रसन्नता का अनुभव करेंगे, बच्चे प्रसन्न होंगे और वे अपना जीवन प्रारम्भ से ही सदाचार से शुरू करेंगे। यह आपको अपने बच्चों को देना है, सही सदाचार का बोध...''

(१९९०, ईस्टर पूजा, सिडनी)

बच्चे को सब आराम दें, पर बच्चे को बिगाड़े नहीं :

''... आज मैंने आपको श्री गणेश के विषय में विशेष कर बताया है, क्योंकि हमारे में इतनी शादियां हुई हैं और अब आपके बच्चों ने जन्म लेना है, परन्तु यह विचार न रखें कि श्री गणेश आपके घर जन्मे। मैंने देखा है, कि कुछ लोगों के ऐसे मूर्खतापूर्ण विचार होते हैं।

आप उनका विश्वास हैं और आपको उनकी देखभाल करनी है। प्रथम आपको श्रीगणेश के स्तर पर विकसित होना है। आपको उन्हें साँचे में ढ़ालना है और उन्हें और शान्ति देनी है, अधिक चित्त देना है। मैं अनुभव करती हूँ कि यदि बचपन में बच्चों की पूरी तरह से मालिश नहीं हुई है तो वे बड़े अशान्त बच्चे बन जाते हैं। सो, यह महत्वपूर्ण है, कि समझें बच्चों को कैसे सब आराम दें, उनकी देखभाल करें, परन्तु बच्चों को बिगाड़े नहीं...''

(१९८४, श्रीगणेश पूजा, स्विटजरलैंड)

नकारात्मक बन्धन

I. तलाक, गलत विचारधारा और बन्धन

तलाक और पैसा :

''... एक तीसरी बात है, जो मैंने पाश्चात्य के लोगों में देखी है कि वे वास्तव में शादी से डरते हैं। प्रथम, वे स्त्री के साथ रहेंगे, दस दिन, बीस दिन या दस वर्ष के लिये। परन्तु ज्यों ही उनकी शादी हो जाती है, वे तलाक के लिये जाते हैं, बड़ा अजीब है। इसके लिये मैं सोचती हूँ कि कानून जिम्मेदार है, क्योंकि शायद स्त्रियां सोचती हैं, कि उन्हें अपने पति से पैसे मिलेंगे या पति सोचते हैं, कि वे अपनी पत्नी से पैसे पायेंगे।

सहजयोग में, बाद में यदि वे तलाक लेते हैं, जो मुझे बिल्कुल भी पसन्द नहीं है-हमारे बीच केवल एक प्रतिशत तलाक होते हैं-मैं आपको इस बात की अनुमति नहीं दूंगी कि आप दूसरे से पैसा निकलवायें, कभी नहीं, न ही लड़की को आप से पैसे निकलवाने चाहिये...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपति पुले)

इस विचार को त्याग देना चाहिये :

''... हम जब विवाहित हैं, यदि हमें तलाक चाहिये तो हम मूर्ख हैं, मुझे तलाक बिल्कुल पसन्द नहीं है। चाहे मैं अनुमति दे देती हूँ क्योंकि कभी-कभी मैं पाती हूँ कि भयंकर चीज़ें हो रही हैं। परन्तु मैं बहुत ही कम अनुमति देती हूँ, तलाक के लिये, सो इस विचार को त्याग देना चाहिये और हमें स्वार्थी नहीं होना चाहिये..... परन्तु यदि प्रारम्भ से ही आप दयालु और अच्छे हैं, मुझे विश्वास है कि सब कार्यान्वित होगा...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपति पुले)

प्रत्येक को तलाक के विषय में बिल्कुल भी नहीं सोचना चाहिये :

''... नि:सन्देह मैं तलाक के विरोध में नहीं हूँ, परन्तु मैं इस की ओर भी

नहीं हूँ। परन्तु जब स्थिति असंभव और कठिन हो जाती है, तो फिर इसकी ओर जाना पड़ता है, कोई बात नहीं। कभी-कभी यह करना पड़ता है परन्तु यह बहुत ही कम होना चाहिये, किसी को भी तलाक के बारे में सोचना भी नहीं चाहिये। पश्चिम में अधिकतर लोग तलाक के बारे में सोचते हैं, कानून के कारण, क्योंकि पत्नी को या पति को पैसे मिलते हैं। परन्तु आप सहजयोग में शादी कर रहे हैं, ये सब बाते होती हैं, चाहे आपका तलाक भी हो जाता है, पर मैं इसका समर्थन नहीं करूंगी...''

(१९९३, दुल्हनों को परामर्श, गणपति पुले)

परिवार अत्यन्त महत्वपूर्ण है :

''... जैसा कि आप जानते हैं, कि सहजयोग में परिवार अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। वास्तव में हम तलाक में विश्वास नहीं करते हैं, परन्तु यदि वह पूर्णतया असम्भव है, तब उन्हें तलाक की अनुमति दे दी जाती है...''

(१९९३, शादियों की घोषणा, रशिया)

यदि आप उसे तलाक देंगे तो आप कभी भी उसके साथ नहीं होंगे :

''... अब दूसरा भाग है, एक स्त्री थी, उसे तलाक चाहिये था। मैंने कहा, 'क्यों?'

'क्योंकि वह सारे समय काम पर चला जाता है और वह होता नहीं है, यह और वह।'

परन्तु मैंने कहा, 'यदि तुम तलाक दे दोगी तो तब तुम कभी भी उसके पास नहीं हो सकती। सो, तुम क्यों तलाक चाहती हो? कम से कम वह तुम्हें कुछ समय देता है, परन्तु तलाक होने पर तो वह कभी भी तुम्हारे पास नहीं होगा, सो क्यों तलाक चाहती हो?'

मुझे इसके पीछे क्या तर्क है, वह समझ नहीं आता है। मेरा अर्थ है, कि स्त्रियों को इतना मस्तिष्कहीन नहीं होना चाहिये, नहीं क्या? ऐसी बात के लिये पति को तलाक देना - यह मूर्खता है...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसन्ध्या, कबेला)

परन्तु यहाँ उन्हें चालीस, पचास, साठ वर्ष में पत्नी चाहिये :

''... मैं भी एक दूसरी बात से हैरान हो गयी थी। जैसे कि एक स्त्री, वह पचास वर्ष की आयु की है या चालीस करीब, उसने अपने पहले पति को तलाक दिया है और कहती है, कि मुझे दूसरा पति चाहिये। भारत में चालीस या पचास-यदि लड़की इक्कीस वर्ष में विधवा हो जाती है, वह इतनी ऊँचाई पर होती है, उसे इतना अभिमान होता है, वह ज़्यादा परवाह नहीं करती है और वे बिना शादी के बड़ी प्रसन्न रहती है, पर यहाँ आप इस प्रकार स्त्रियों के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं, क्योंकि यहाँ स्त्रियां, स्त्रियां नहीं हैं, वे पुरूषों के समान हैं। और पुरूष भी, कितने ही पुरूष भी भारत में शादी नहीं करते हैं, जब उनकी पत्नी गुजर जाती है। वे शादी नहीं करते क्योंकि एक बार हो गयी है, परन्तु यहाँ उन्हें चालीस, पचास, साठ में पत्नी चाहिये। क्रिस्टीन की माँ अड़सठ वर्ष की है और उसने पैसठ वर्ष में विवाह किया है, यह पूर्णतया मूर्खता है...''

(१९८४, ग्रेगौयर के घर पर बातचीत, विएना, ऑस्ट्रिया)

एक बार आप शादी करते हैं तो यह सब समाप्त हो जाता है :

''... यदि यह विकार रहित है, तो यह अत्यन्त गहरा सम्बन्ध है। यह बड़ा आंतरिक सम्बन्ध है। जहाँ आप दूसरी स्त्री या दूसरे पुरूष के पीछे भागने का नहीं सोचते, एक बार जब आप की शादी हो जाती है...''

(१९८४, ग्रेगौयर के घर पर बातचीत, विएना, ऑस्ट्रिया)

सारे समय वे पति-पत्नी के झगड़े की पिक्चरें दिखाते हैं :

''... हमें अपने बच्चों के लिये कोई प्रेम नहीं है, हम उन्हें सहन नहीं कर सकते हैं, हमारे अन्दर एक दूसरे के लिये कोई प्रेम नहीं है, खाना पकाने में कोई प्रेम नहीं है, पति के लिये कुछ करने में प्रेम नहीं है। पति को कुछ पत्नी के लिये करने में प्रेम नहीं है। सारे समय जो वे पिक्चरें दिखाते हैं वे पति-पत्नी के झगड़े की होती हैं। कोई प्रेम नहीं, कोई स्नेह नहीं, कोई दया नहीं है। लड़ाई किसलिये हैं? 'तुमने कालीन क्यों खराब किया?' 'पत्नी कहती है, 'मैंने नहीं खराब किया, बच्चों ने किया है।' 'तो तुमने साफ़ क्यों नहीं किया।'

लड़ाई चल रही है। किसलिये ? कालीन के लिये ? क्या यह स्थायी है ? परन्तु महत्वपूर्ण यह है कि कल उन्हें घर बेचना है। उन्हें घर बेचना है, इसलिये कालीन साफ़ होना चाहिये, ताकि सब बेचने लायक हो, सब कुछ बेचना है, यहाँ तक कि पत्नी भी, पति, बच्चे सब कुछ...''

(१९८७, भौतिकता का भूत, सिडनी)

अब आपके लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण है-आपका पति :

''... आपके परिवार के कोई भी लोग अब आपके पति से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। यह बड़ा महत्वपूर्ण है। अब आपके लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण है-आपका पति। यह सहज पद्धति का विवाह है। आप दूसरी शादियां कर सकते हैं। आप दस शादियां कर सकते हैं, वह अलग है। सहजयोग में नहीं। और एक बार आपका तलाक होता है तो हम आपकी फिर से शादी नहीं करते हैं। हमने हाथ उठा लिये-हम प्रयत्न कर चुके हैं। अब हम नहीं ऐसा करते हैं क्योंकि पति को तलाक देना आदत बन जाती है। एक बार आपकी शादी होती है, तो आप सब विवाहित हैं और यदि आप तलाक देना चाहते हैं, तो पहले ही जान लें कि हमारा आपसे कोई मतलब नहीं है और आप सहजयोग से फेंक दिये जायेंगे...''

(२००२, दुल्हनों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

आपका सहजयोग में कोई स्थान नहीं होगा :

''... एक बार आप सहजयोग में तलाक देते हैं, तो हम पुनः आपका विवाह कभी नहीं करेंगे-यह अब हमने फ़ैसला कर लिया है। या यदि आप अपनी पत्नी को छोड़ देते हैं या कुछ गैरजिम्मेदार कार्य करते हैं अपनी शादी के प्रति, तो फिर सहजयोग में आपका कोई स्थान नहीं है...''

(२००२, दुल्हनों के साथ बातचीत, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

कभी-कभी जीवन में धक्का लगने से व्यक्ति के अहंकार को चोट लगती है :

''... और आप के हृदय एवं दिमाग में स्थान भंग हो जाता है। उनका

ताल-मेल समाप्त हो जाता है। कभी-कभी जीवन के धक्कों के कारण व्यक्ति के अहंकार पर आघात होता है। जैसा कि मैं आपसे कह रही थी कि हमें अपनी पत्नी के प्रति और पति के प्रति बड़ा दयालु होना चाहिये। यदि उनके अहंकार पर आघात होता है, तो धीरे-धीरे तीन-चार बार धक्का लगने से वे ताल-मेल खो देते हैं। हम उन्हें बीमारियां दे देते हैं। हम उन्हें भयंकर चीज़ें दे देते हैं। हमें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। यह पाप है। पहले तो किसी से धूमधाम से शादी करना क्योंकि आपका अहंकार है, या किसी के अहंकार पर आघात किया है, और उस व्यक्ति की भावनाओं को शुष्क कर दिया है।

तब एक अत्यन्त शुष्क समाज विकसित होता है, यह शुष्क समाज बच्चों का मूल भी नहीं समझता। भौतिकता सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। भौतिक संपत्ति अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। तब समस्त मानवीय सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं और अहंकार की वेदी पर बलि हो जाते हैं...''

(१९८१, सार्वजनिक कार्यक्रम, विशुद्धि और आज्ञा चक्र, सिडनी)

शराब के माध्यम से आपकी पवित्रता एवं प्रतिष्ठा का मूल्य नीचे गिर जाता है :

''... जब ये लोग, आखिरकार मनुष्य हैं और उनका भावनिक अस्तित्व तकलीफ़ पाता है। फिर भावनिक होने के लिये लोग 'ड्रग्ज' और शराब का सहारा लेते हैं। केवल अहंकार के कष्ट से बचने के लिये वे शराबी हो जाते हैं। एक बार जब वे शराबी हो जाते हैं, तो मनस अहंकार विकसित होना शुरू हो जाता है। यह अहंकार को एक कोने में धकेलना शुरू करता है, उससे डगमगाहट शुरू हो जाती है और अव्यवस्था शुरू हो जाती है। यह शराब जिस की हर आदि-गुरू ने निन्दा की है, क्योंकि उन्हें आपके चित्त की देखभाल करनी थी, क्योंकि न केवल चित्त खराब होता है, परन्तु आपके सदाचारी मूल्य भी नीचे गिर जाते हैं। पवित्रता के मूल्य-अपनी स्वयं की प्रतिष्ठा का मूल्य, मेरा तात्पर्य है, कि आप कुछ भी कर सकते हैं। लोग ऐसी गौरवहीन हरकतें करते हैं, कि यदि आप उनकी फोटो लें, तो वे अचम्भित हो जायेंगे, कि वे ऐसा व्यवहार कर रहे थे। सो, सर्वप्रथम मनुष्य की प्रतिष्ठा नीचे गिरती है, विवाह की पवित्रता खो जाती है, और सभी सदाचारी मूल्य जो

आपके चित्त में निर्भित हुये हैं मनुष्य रूप में, महान सन्तों एवं ऋषियों के आशीर्वाद स्वरूप सब गिर जाते हैं...''

(१९८१, सार्वजनिक कार्यक्रम, विशुद्धि और आज्ञा चक्र, सिडनी)

स्त्रियां सोचती हैं, कि वे अपने पतियों पर प्रभुत्व दिखा सकती है :

''... अब इन सब मूर्ख लोगों का एक नया समाज बन रहा है। वह अलग है। परन्तु एक सहजयोगी जो इन स्थानों को देखेगा, वह हैरान हो जायेगा कि ये लोग कितने मूर्ख हैं। उन्हें पता चल जाता है। वे सब बायीं नाभि की पकड़ में होते हैं, चाहे वे पुरूष हैं या स्त्रियां हैं। परन्तु यह पुरूषों के लिये अधिक खतरनाक होता है, यदि उनकी पत्नी उस प्रकार की हो। यदि बायीं नाभि पकड़ती है, तो क्या होगा? कौन सी बीमारियां आपको लगती हैं? सर्व प्रथम 'ब्लड कैन्सर' है। बायीं नाभि से आपको ब्लड कैन्सर हो सकता है। स्त्रियां सोचती हैं कि वे अपने पतियों की ताड़ना कर सकती हैं, वे उन्हें ठीक कर सकती हैं, पर वे जानती नहीं हैं कि वे एक गम्भीर बीमारी-ब्लड कैन्सर का कारण बन रही हैं।

मुझे उसके बारे में ज्ञात है, जो ब्लड कैन्सर से कष्ट पा रहा था, उसको हमने ठीक कर दिया और फ़िर देखा कि, फिर भी उस की बायीं नाभि खराब थी, बार-बार उसे 'ब्लड-कैन्सर' हो रहा था, तब हमने पाया कि वह उसकी पत्नी थी, वह उसके लिये इतनी खतरनाक स्त्री थी और वह उसे छोड़ना नहीं चाहता था, सो, मैंने उससे कहा, 'मैं दुबारा तुम्हें ठीक नहीं करूंगी, यदि तुम उस स्त्री के साथ रहोगे', बेहतर है कि उसे कहीं और भेज दो या फेंक दो बाहर। परन्तु यदि आप इस स्त्री के साथ रहने वाले हो, 'मैं आपको ठीक नहीं करूंगी।' उसने उसे बुलाया और मैंने उसके सामने ही कहा, 'तुम ताड़ना देने वाली, भयंकर, चतुर स्त्री हो और यदि तुम अपने पति को पीड़ा दोगी तो वह ठीक नहीं हो सकता है।' पर वह चला गया है और फिर..... परिणाम भयंकर अति भयंकर था। उसकी प्लीहा बहुत बड़ी हो गयी और उसे निकाल दिया गया और डाक्टरों ने उसे कहा कि छः महीने में वह मर जाएगा। सो, दोनों ओर से, मैं कहूँगी कि पत्नी ने प्रभुत्व का प्रयत्न किया और पति को उस पत्नी के प्रति आसक्ति। यह हाल ही में हुआ है...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

वास्तविकता को ध्यान में रखें, न कि काल्पनिक विचार, जो आपको अपनी पत्नी के प्रति है :

''... तब, हम सहजयोगी हैं। मैंने कुछ सहजयोगी देखे हैं, बड़े महान सहजयोगी जिनका विवाह हुआ है। बड़े ही साधारण पुरूष, बड़े ही साधारण देखने में। या उनमें से कुछ को भद्दा भी कहा जा सकता है। कुछ लड़कियां वैसी होती हैं, कुछ पुरूष वैसे होते हैं, सुन्दरता के विचार से या वह सब निरर्थकता से। परन्तु जब एक व्यक्ति को देखते हैं, चैतन्य से भरपूर वह आपको इतनी शान्ति देता है, इतना आनन्द, उसे विवाह के पूर्व के पत्नी के विषय के विचारों द्वारा विचलित न करें। वास्तविकता यह है कि यह आपकी पत्नी है और आप उसके पति हैं। उस वास्तविकता को महत्व दें, न कि काल्पनिक छवि को, जो आपके दिमाग में पत्नी की है। आपकी पत्नी आपके सामने है और वह आपकी पत्नी है।

काल्पनिक विचारों का क्या लाभ, आप कभी भी विवाहित जीवन का आनन्द नहीं ले पायेंगे। मेरा अर्थ है, कि यदि आपकी कल्पना है, तो आपको शादी नहीं करनी चाहिये, बेहतर है, कि आप अपनी कल्पना से ही शादी करें, किसी का जीवन क्यों नष्ट करना? किसी को दु:खी क्यों करना? वे सब विवेकशील और अच्छी सहजयोगिनी हैं। हमने इस बात का ध्यान रखा है कि वे सब बड़ी अच्छी सहजयोगिनी है। परन्तु एक बार यदि आप पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करते हैं या हमारे लिये समस्या खड़ी करते हैं, तो स्वाभाविक है, कि हमें आप सहजयोग में और नहीं चाहिये क्योंकि यह बहुत अधिक है और जैसा कि आप जानते हैं कि आप की शादी करनी सरल नहीं है, आपका 'वीज़ा' लेना, आपको वहाँ ले जाना, यह सब काफ़ी काम होता है।

अब, यह मत सोचिये, कि आपको किसी से शादी जबरदस्ती में की गयी है, आपसे पूछा गया है। यदि आप विवाह सम्बन्धी काल्पनिक विचारों को त्याग दें, मैं बार-बार आप से यह कह रही हूँ और इस बार भी, इस क्षण भी, जिसको भी वैसा लगता है, अभी मुझे बता दे। मैं अत्यन्त प्रसन्न होऊंगी...''

(१९९३, दूल्हों को परामर्श, गणपति पुले)

फ़िलहाल सहजयोग छोड़ दें और अपनी समस्या को हल करें :

''... कुछ लोग हैं, जिनके भयंकर पति एवं भयंकर पत्नियां होती हैं। मुझे बुरा नहीं लगेगा, वे उन्हें छोड़ सकते हैं, यदि वे पूर्णरूप से असम्भव हैं, यदि वे उनकी पवित्रता को खराब कर रही हैं, यदि वे उनके जीवन को कष्टप्रद कर रही हैं या कर रहे हैं, तो सर्वोत्तम है कि उनसे पीछा छुड़ा लें, मुझे बुरा नहीं लगेगा। क्योंकि यदि वे इतने खराब हैं कि उपयोग में नहीं ला सकते, इस शरीर के समान, यदि यह इतना खराब है, तो बेहतर है, कि छोड़ दें व मर जायें, ताकि वह सम्बन्ध मर जाये। परन्तु वह मौत आपके पास बड़ी जबरदस्ती की सहायता के रूप में आनी चाहिये : क्योंकि यदि उसके बाद आप एक नाड़ी असन्तुलन का व्यक्तित्व बन जाते हैं, तो क्या लाभ? सो, इस प्रकार से होने के बाद आपको क्या करना है-कि आपने ऐसा सम्बन्ध त्याग दिया है-फ़िर यदि आपको न्यायालय में जाना है, तो आपको सहजयोग को छोड़ देना चाहिये उस समय के लिये। अपनी समस्या को हल करें, न्यायालय की समस्या को हल करें, सब कुछ और फ़िर सहजयोग में आयें। हम इस प्रकार की चीज़ में शामिल नहीं होना चाहते हैं कि हमने किसी परिवार को तोड़ा है या कुछ! यदि आप अपनी पत्नी के साथ गुज़ारा नहीं कर सकेत हैं, तो सहजयोग को दोष नहीं देना है। चूंकि आप उसके साथ गुज़ारा नहीं कर सकते हैं, तो आप ऐसा करें-सहजयोग से बाहर जायें, जो दिल में आयें वह पत्नी के साथ करें, एक ही बार सब सम्बन्ध समाप्त कर दें और आपको उसे बताना चाहिये, 'मैं और अब सहजयोगी नहीं हूँ।' सब बाहर करें और फिर सहजयोग में आयें। परन्तु सहजयोग में आने से आप मुझे अत्यधिक पीड़ा देंगे...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

श्रीमाताजी द्वारा पुरुष एवं महिलाओं पर दिये गये प्रवचन की सूची

परिशिष्ट

दिनांक	नाम	देश
18-12-78	सा.कार्यक्रम:आज्ञाचक्र, ईसामसीह, अहंकार	लंदन
16-01-79	मूलाधार चक्र	मुंबई
1979	गुरुपूजा	लंदन
30-12-79	सभी चक्रों पर परामर्श	मुंबई
00-03-80	बचपन पर	यू.के.
03-03-80	विवाह का मूल्य (विवाह समारोह के पहले प्रवचन)	लंदन
05-05-80	सहस्रार दिवस पूजा	लंदन
26-08-80	सार्वजनिक कार्यक्रम : रक्षाबन्धन	लंदन
07-09-80	आश्रम प्रवचन:आप कहाँ हैं कैसे जानें ?	लंदन
15-11-80	सेमिनार प्रवचन:द न्यू एज प्लॉ हैच	यू.के.
05-12-80	विवाह और सामूहिकता (विवाह के पहले प्रवचन)	लंदन
00-03-81	सार्वजनिक कार्यक्रम	सिडनी
28-03-81	सार्वजनिक कार्यक्रम : नाभि चक्र	सिडनी
31-03-81	सार्वजनिक कार्यक्रम : विशुद्धि और आज्ञा चक्र	सिडनी
24-05-81	सबकॉन्शस, सुप्राकॉन्शस	लंदन
27-10-81	दिवाली प्रवचन : पुरुष और स्त्रिओं में सम्बन्ध	लंदन
09-11-81	दिवाली पूजा : महालक्ष्मी की शक्ति	लंदन
29-11-81	विवाह समारोह:विवाह मतलब आनन्द देना	लंदन
02-04-82	श्रीराम नवमी पूजा	लंदन
00-07-82	सार्वजनिक कार्यक्रम : हृदय से सहस्रार तक	डर्बी, यू.के.
22-09-82	श्रीगणेश पूजा	ट्रोनिक्स, सीएच
14-11-82	दिवाली पूजा	लंदन
03-11-83	दिवाली पूजा	यू.के.
14-02-84	वधूओं को उपदेश	बोर्डी, भारत
11-08-84	रक्षाबन्धन	हौन्सले, यू.के.
02-09-84	श्रीगणेश पूजा	रफेलबर्ग, सीएच
05-09-84	ग्रेगौर के घर में बातचीत	विएन्ना, ऑट.
19-01-85	श्रीकृष्ण पूजा	नासिक, भारत
20-04-85	सेमिनार प्रवचन:मूलाधार चक्र में सुधार	बर्मिंगहैम, यू.के.
31-05-85	श्रीदेवी पूजा	सैन दिएगो, युएसए

04-08-85	श्रीगणेश पूजा	ब्राइटन, यू.के.
01-01-86	श्रीमहागणेश पूजा	गणपतिपूले
17-09-86	लिडरशीप एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन	देन हैग, एनएल.
04-05-86	सहस्रार दिवस पूजा	अल्प मोट्ट, आयटी
06-07-86	गुरू पूजा	मुंडेन, एटी.
23-08-86	श्रीकृष्ण पूजा	Schwarzsee, CH
07-09-86	श्रीगणेश पूजा:गणेश तत्व की स्थापना	Camp Marston, US
21-09-86	श्रीलक्ष्मी पूजा	Mechelen, BE
21-09-86	बेल्जियम और हौलंड की भूमिका	Mechelen, BE
17-08-87	क्रिटीसीजम, इगो, राइट-साइड डेंजर	फ्रान्स
03-05-87	सेमिनार प्रवचन:द घोस्ट ऑफ मटेरिएलिझम	Thredbo, AUS
04-10-87	श्रीराम पूजा	Les Avants, CH
02-01-87	अबोधिता और श्रीगणेश प्रवचन	गणपतिपूले
09-08-87	श्रीविष्णुमाया पूजा	न्यूयोर्क, युएसए
30-12-87	विवाह पर प्रवचन	कोल्हापूर, भारत
10-01-88	श्रीसूर्य पूजा	मुंबई, भारत
08-06-88	श्रीएकादश रूद्र पूजा	मोडलिंग, ॲट.
19-06-88	प्रवचन-स्त्रीत्व और महिलाओं की भूमिका	शुडी कैम्प
09-07-88	अंतर्ज्ञान और स्त्रियाँ	पैरिस, एफआर
10-07-88	श्रीहम्स स्वामिनी पूजा	Grafenaschau, DE
14-08-88	श्रीफ़ातिमा पूजा	St. Georges, CH
20-08-88	श्रीविष्णुमाया पूजा	शुडी कैम्प, यू.के.
11-12-88	श्रीआदिशक्ति पूजा	राहुरी, भारत
23-07-89	गुरु पूजा	Lago di Braies
00-12-90	विवाह पर प्रवचन	दिल्ली, भारत
01-01-90	विवाह, स्त्रियों को उपदेश	सांगली, भारत
21-10-90	दिवाली पूजा	Chioggia, IT
28-03-9I	श्रीमहावीर पूजा	पर्थ, ऑस्ट्रेलिया
31-03-91	इस्टर पूजा	सिडनी, ऑस्ट्रे.
14-04-91	श्रीगणेश पूजा	कैनबेरा, ऑस्ट्रे.
28-04-91	श्रीहम्सा-स्वामिनी पूजा	क्विन्स, युएसए
10-11-91	दिवाली पूजा	कबेला, इटली
26-12-91	विवाह के पहले प्रवचन	गणपतिपुले

09-02-92	श्रीगणेश पूजा	Gidgegannup,AUS
24-10-92	दिवालीपूजा	Timisoara, RO
16-05-93	श्रीफ़ातिमा पूजा	इस्तंबूल, टीआर
21-07-93	श्रीगणेश पूजा	Dallgau, DE
13-11-93	विवाह की सूचना	मॉस्को, आरयू.
28-12-93	विवाह समारोह के पहले वधूओं से बातचीत	गणपतीपूले, भारत
28-12-93	विवाह के समारोह पहले वधू और वर से बातचीत	गणपतीपूले, भारत
02-04-94	समारोह से पहले बातचीत	सिडनी, ऑस्ट्रे.
11-09-94	श्रीगणेश पूजा	मॉस्को, आरयू.
13-11-94	ट्यूनिशिअन महिलाओं से बातचीत	Sidi Bou Said, TN
04-12-94	श्रीराजलक्ष्मी पूजा	दिल्ली, भारत
13-09-95	स्त्रियों की चौथी विश्व परिषद में बातचीत	बीजिंग, पीआरसी
15-09-96	श्रीगणेश पूजा	कबेला, इटली
23-08-97	श्रीकृष्ण पूजा	कबेला, इटली
06-09-97	श्रीगणेश पूजा की पूर्वसंध्या में बातचीत	कबेला, इटली
04-10-97	नवरात्री पूजा की पूर्वसंध्या में बातचीत	कबेला, इटली
31-12-97	श्रीशक्ति पूजा	कळवा, भारत
05-09-98	श्रीगणेश पूजा	कबेला, इटली
25-10-98	दिवाली पूजा	Novi Ligure, IT
31-12-98	नववर्ष पूजा	कळवा, भारत
25-09-99	श्रीगणेश पूजा	कबेला, इटली
23-03-00	नववधू और वरों से बातचीत	दिल्ली, भारत
23-09-01	विवाह समारोह के पहले वधू और वर से बातचीत	कबेला इटली
14-09-02	श्रीगणेश पूजा	कबेला, इटली
15-09-02	नववधूओं से बातचीत	कबेला, इटली

CREDITS

Compilation and Book Research :

Henno and Trupta deGraaf, Lakshmi Ward, Marie Rajan, Victoria Zyblut, Phil Ward

Photography :

Paul Anant, Calin Chiroiu, Matthew Cooper, Dmitry Kovalev, Michael Markl, Richard and Gautama Payment, Axinia Samoilova, Vera Subkus

Design Credits :

Dara Tittjung, Mario Barba, Manfred Tittjung

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

WWW.SAHAJAYOGA.ORG

सहजयोग के बारे में अधिक जानकारी के लिये देखें www.sahajayoga.org